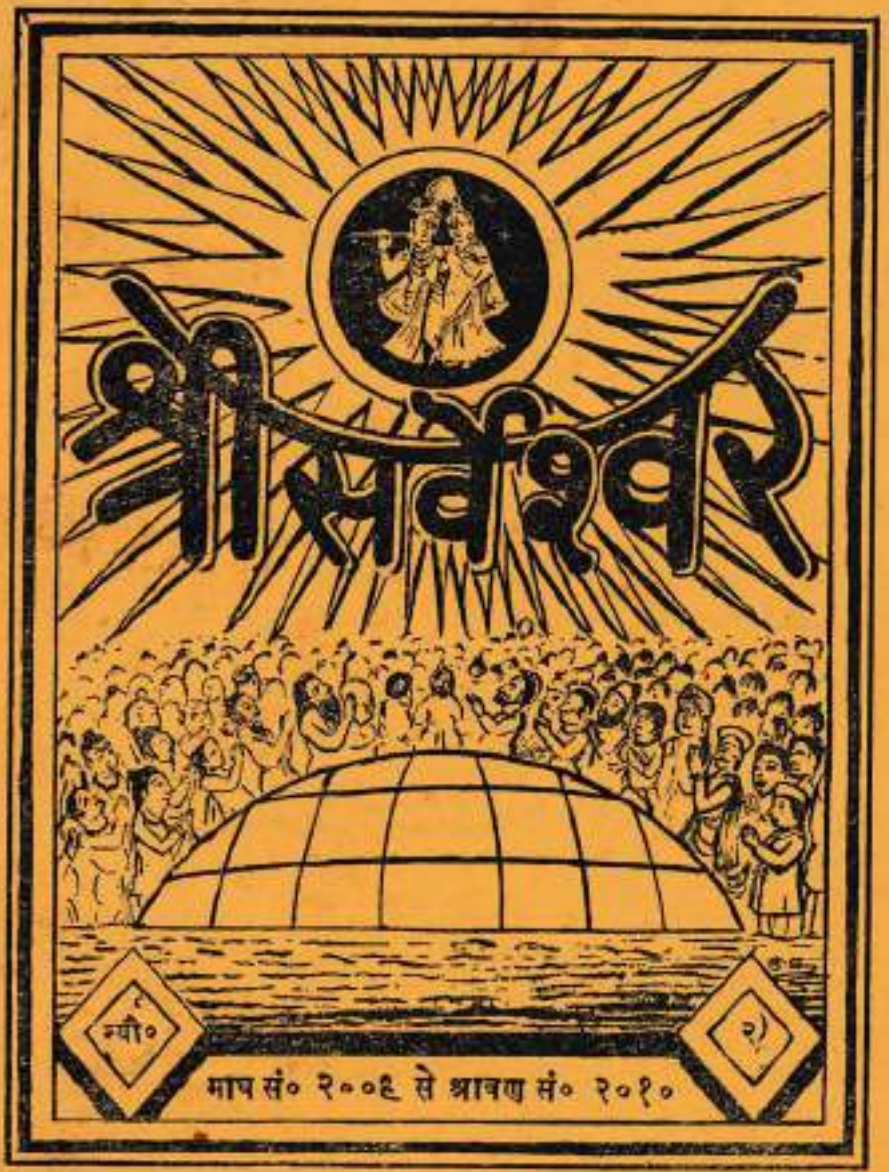

वर्ष १] [सं० ३-४

सम्पादक—
श्री व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य, पंचतीर्थ
संचालक—
श्री वियोगी विश्वेश्वर (अधिकारी, श्री निम्बार्काचार्य पीठ)

धार्मिक–ऐतिहासिक–सचित्र–मासिक पत्र "श्री सर्वेश्वर" के

उद्देश्य और नियम

उद्देश्य:—धार्मिक–ऐतिहासिक–सांस्कृतिक–अन्वेषण–आलोचनात्मक लेख एवं संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के अप्रकाशित प्राचीन ग्रन्थों का प्रकाशन, साहित्य-प्रसार, धार्मिक एवं ऐतिहासिक ज्ञान वृद्धि द्वारा देश सेवा करना ही 'श्रीसर्वेश्वर' पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

नियम:—(१) यह पत्र प्रत्येक हिन्दी मास की पूर्णिमा को प्रकाशित होगा।

(२) इसमें मुख्यतया संस्कृत एवं हिन्दी भाषा के प्राचीन अप्रकाशित, धार्मिक तथा भगवद्भक्ति विषयक एवं खोजपूर्ण आलोचनात्मक, ऐतिहासिक ग्रन्थों और उपरोक्त विषयों से सम्बन्धित विशिष्ट विद्वानों के सुन्दर सुललित प्रामाणिक लेख एवं कविता, उपयोगी सामयिक सम्वाद आदि साहित्य का प्रकाशन होगा। इनके अतिरिक्त तुलनात्मक और भौगोलिक एवं वैज्ञानिक लेख भी रहेंगे।

(३) बाहर से आये हुए लेखों को बढ़ाने घटाने तथा प्रकाशित करने न करने का अधिकार-सम्पादक को होगा। लेखों की प्रामाणिकता का उत्तरदायित्व भी लेखकों पर ही रहेगा।

(४) इस पत्र की सहायता में जो सज्जन ५०१) रु० एकसाथ देंगे वे संरक्षक कहलायेंगे; २५१) रु० देने वाले सज्जन सम्मान्य और १०१) देनेवाले विशिष्ट ग्राहक तथा ५१) या २५) रु० प्रतिवर्ष देनेवाले अभिभावक और ३) रु० अग्रिम वार्षिक शुल्क भेजने वाले सज्जन ग्राहक समझे जायेंगे।

(५) इस पत्र में सभी ग्राहकों के भेजे हुए धार्मिक लेखादि प्रकाशित होसकेंगे और संरक्षक सम्मान्य एवं विशिष्ट ग्राहकों का सचित्र परिचय भी दिया जायेगा।

(६). लेख कविता आदि प्रकाशन सामग्री सम्पादक के नाम से और वार्षिक शुल्क एवं विशेष सहायता के मनी-आर्डर और अन्य व्यवस्था सम्बन्धी पत्र "व्यवस्थापक"—श्री सर्वेश्वर कार्यालय, श्रीनिकुञ्ज, प्रताप बाजार वृन्दावन (मथुरा) के पते से भेजें।

❋ "श्री सर्वेश्वर" के ग्राहक बनिये ❋

[रचयिता—पं० श्री कृष्णशरण शर्मा (पिपरा बड़का)]

हेतिकाकेवचानुगामिपथिका: संश्रूयतांमद्वच:।
अ यान्तं सर्वेश्वरं सुख करं हस्तेऽपि सन्दर्शन।
तद्दुं संसृतिघारमोहनकराक्ष्येरलालसा वर्तते।
तज्जन्मस्थितिनाशदोषरहितं सर्वेश्वरं संश्रय॥
सवैया—श्री श्रीजु कृपाकरि दीन्ह हमें नभमें
अब भाई जरा सुनिये।
सब ही शास्त्र प्रशमन जाहि तिन्हें
हिय मांहि सदा गुनिये।
यदि हो मनमें सर्वेश्वर के गुणरूप व
नाम सुधा चहिये
तब भाई तुम्हें शतबार कहौं
(श्री) सर्वेश्वर को ग्राहक बनिये।

प्रकाशक—श्री वियोगी–विश्वेश्वर जी, भूतपूर्व संचालक 'उदय', उदयपुर एवं प्रबन्धाधिका श्रीनिम्बार्काचार्य पीठ, ठि० सलेमाबाद,–हाल–श्रीनिकुञ्ज, रेतिया बाज़ार, वृन्दावन उ० प्र०
मुद्रक –श्री दानविहारी लाल शर्मा, विद्यालय प्रेस, वृन्दावन।

• श्री सर्वेश्वरो जयति •

॥ श्री भगवन्निम्बार्क महामुनीन्द्राय नमः ॥

सत्यं नीतिपथं विहाय कुटिलां कोटिं जना:संगता:, तत्तत्पद्धतिदर्शनायविहितान् वर्णाश्रमान्पालयन्॥
शान्ति निश्चहितां विधाय भुवने सद्धर्मसञ्चारतः विश्वं बोधकरैः प्रकाश्य नितरां "सर्वेश्वर" पातु वः॥

श्री सर्वेश्वर

वर्ष १ | श्री वृन्दावनधाम माघ २००६ से श्रावण सं० २०१०—श्रीनिम्बार्काब्द ५०४८ | संख्या ३ से ६

निखिलमहिमण्डलाचार्य्य चक्रचूडामणि सर्वतंत्र स्वतन्त्र यतिपतिदिनेश अनन्तानन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य्य पीठाधीश श्री श्री जी श्री राधासर्वेश्वरशरण देवाचार्य जी महाराज के—

❋ सदुपदेश ❋

सुलभ साधन—यदि किसी परिस्थितिवश विशेष साधन न बन सके तो शरणागत भक्त को कम से कम भगवान् के इन द्वादश महागुणों का निरन्तर चिन्तन ही करते रहना चाहिये, दुःखों से छुटकारा पाने का यह एक सुगम से सुगम साधन है।

(१) वात्सल्य :—भगवान् अपने भक्तों के दोषों पर ध्यान नहीं देते।

(२) सौशील्य :—भक्त चाहे उच्च (ब्राह्मणादि) वर्ण का हो चाहे नीच (शूद्रादि) वर्ण का हो, भगवान् सभी को प्रेम से गले लगालेते हैं।

(३) सौलभ्य :—भगवान् केवल प्रेम से ही रीझ जाते हैं प्रेमियों के वश में होजाते हैं, अतः प्रेम हो तो वे अत्यन्त सुलभ हैं।

(४) स्वामित्व: —भगवान् सभी चराचर (भले बुरे मात्र) के स्वामी हैं, स्वामी अपनी वस्तु का बिगाड़ नहीं चाहता; हम उनके हैं तो वे हमारी भी रक्षा करेंगे ही

(५) कारुण्य :—शरण आते ही भक्तों के समस्त दोषों को भगवान् क्षमा कर देते हैं।

(६) मार्दव:-भगवान्का इतना कोमलस्वभाव है कि वे अपनेशरणागतभक्तोंके दुःखको देख नहीं सकते।

(७) सौहार्द :—भगवान् अपने बड़े से बड़े कार्य की उपेक्षा कर पहिले भक्तों की रक्षा करते हैं।

(८) शरण्यत्वः-कैसा भी महानपापी क्यों न हो, किन्तु शरण आनेपर भगवान् उसका त्याग नहीं करते।

(९) कृतज्ञत्वः-भगवान् भक्तद्वारा कीहुई अत्यन्तसाधारण सेवाकोभी भुलाते नहीं। उसीसे प्रसन्नहोजाते हैं।

(१०) सत्य प्रतिज्ञत्व :—भगवान् अपनी (शरणागत पालन रूप) प्रतिज्ञा को अवश्य पूर्ण करते हैं।

(११) पूर्णत्व :—भगवान् सर्वविध परि पूर्ण हैं उनके किसी भी वस्तु की कमी नहीं।

(१२) औदार्यत्व :— भगवान इतने उदार हैं कि उनके कोई भी वस्तु अदेय नहीं, शरणगत भक्त को अपनी आत्मा तक दे देते हैं।

आवश्यक-अनुरोध

आज स्वतन्त्र भारत के प्रत्येक निवासी का यह कर्तव्य है कि अपने देश की उन्नति के लिये उत्साह पूर्वक सर्वतोमुखी, चेष्टायें करें, जिससे कि विदेशी शासकों द्वारा सदियों से दबोचे हुए अपने राष्ट्र का मस्तक ऊपर उठ सके। देश की उन्नति के लिये मुख्य तया, शारीरिक, आर्थिक, और बौद्धिक ये तीनों प्रकार की सेवायें आवश्यक हैं।

प्राचीन समय में ये तीनों सेवायें चारों वर्णों में बँटी हुई थीं। द्वितीय और चतुर्थवर्ण प्रधान तया शारीरिक—सेवा में संलग्न थे, तो तृतीय वर्ण आर्थिक-सेवा में, तथा प्रथम-वर्ण के ऋषि, महर्षि, आचार्य एवं ब्राह्मण मात्र बौद्धिक सेवा में तत्पर रहते थे। इसी से ब्राह्मण वर्ण की सर्वोच्च प्रतिष्ठा और विशेष सन्मान किया जाता था। इस उपयुक्त सेवा की सुव्यवस्था के कारण ही विश्व में भारत जगद्गुरु देश माना जाता था। मनुमहाराज ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषित करदिया था—

एतद् देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

[मनु. अ. २।२०]

विश्व के समस्त देश भारत के ब्राह्मणों से अपने अपने कर्तव्यों की शिक्षा प्राप्त करें। आध्यात्मिक विज्ञान का तो यहां परम्परा गत कोष था ही भौतिक विज्ञान के भी कितने ही गुरुकुल ऋषिकुल एवं विश्व विद्यालय खुले हुए थे।

यहां के-जगद्गुरु आचार्य पादों ने बौद्धिक बल के अतिरिक्त तपोबल द्वारा देश के लिये शारीरिक सेवा में भी कम प्रयास नहीं किया था। आज भारत के बड़े बड़े मठ मन्दिर आदि अनेकों धार्मिक संस्थायें हमारे पूर्वाचार्यों के त्याग और तपश्चर्या का स्मरण दिला रहे हैं। भारत ही क्या विश्व का कोई भी देश विश्व हितैषी उन आचार्यों द्वारा किये गये उपकारों को भुला नहीं सकता। यदि उनके उपदेशों पर आज हम सभी भारतीय आरूढ़ हो जायें, तो उजड़ा हुआ यह देश फिर भी सुख शान्ति समृद्धिसम्पन्न बन कर अपने गौरव को सुरक्षित रख सकता है।

इसीलिये आज हमारे देश में ऐसे धार्मिक पत्र पत्रिकाओं की बहुत भारी आवश्यकता है जो उन पूज्यपाद आचार्यों के उपदेश एवं सन्देशों को देश के कोने कोने में पहुँचादें और ऐसा शुद्ध वातावरण प्रकट करदें जिससे कि जनता की-मनोवृत्तियां स्वच्छ निर्मल बन जायें। यह तो निश्चित ही है कि—जब तक मानसिक विकार न मिटसकें तब तक हम चाहे कितनी ही योजनायें क्यों न बनाते रहें, सच्चे सुख और सच्ची शान्ति का प्रसार होना कठिन ही नहीं असम्भव ही है।

इसी उद्देश्य को लेकर यह आपका यह "श्री सर्वेश्वर" मासिक पत्र अवतीर्ण हुआ है। इसे उन विश्वबन्धु आचार्यों का सन्देश-वाहक दूत समझें।

इसका यह विशिष्टांक एक ऐसे आचार्य चरण की कृति को लेकर उपस्थित होरहा है, जिस आचार्य प्रभु की प्रेरणा, दीक्षा शिक्षा एवं शुभाशीर्वाद ने राजकुलों में भी भक्त कवियों का आविर्भाव करदिया था। यह कहना असंगत नहीं होगा कि महाराजा राज सिंह जी, राजकुमार सावन्त सिंह (नागरीदास) जी, महारानी बांकावती एवं श्री सुन्दर कुमरी, बनीठनी, महाकवि, आनन्दघन, आचार्य श्री गोविन्ददेवजी आदि महानुभावों की कविता का मूल स्रोत यह श्री गीता-मृत गंगा ही है। हमारा अटल विश्वास है कि इस अंक से अन्वेषक साहित्य प्रेमियों को बड़ी खुशी होगी। अतः पाठक इसके प्रचारार्थ प्रयत्न करें।

—रासविहारीलाल शर्मा

श्री गीतामृत गंगाकी अकारादि क्रम से

पद सूची

पद	पृष्ठ
अ—अरी हांरी मोपै हारी सखी कछु मोहनी;	६
अनोखे छांडि लला लँगराई	१०
अजू तुमतो ऐसे चिरियोगी०	१४
अजू लैहुदधो जु कह्यो सो सह्यो०	१४
अजू दह्यो उदियें गिरो छूटि हो नांहीं	१५
अजू भोरजू ह्वै है सो ह्वै है रहैगी लई०	१५
अजू यौं रसमें सब गोरसलीक	१५
अजू लाल चलो तुम्हैं कुंज दिखैये	१५
अजू जैहौं नहीं जहि कुंज के नेरे	१६
अद्भुत छवि कछु गोपीनाथ	१६
अहो पांय परूं मोहिं जानदे प्यारे	२३
अहो पिया कैसे मिलन हौं आऊं	३१
अब आये हैं पिय पाइन परन	४१
अलीन के संग है कुञ्ज०	४४
अबतो सोवन देहु हहारे	४५
अहो लाल इतै कित भूलि परे हो	४६
अहो लाल चलो उतहीं०	५०
अहो भलैं अहोभलैं०	५२
अन्त उदासी भये व्रजवासी	५४
अहोपिय महा कठिन मन कीनौं	५४
अखै तृतीया त्रेता युगा दि निधि०	६३
अनन्त व्रत कियें तैं अनन्त फल पाइये	६७
अरे प्रान बन्धु कान्ह हरि लीलोप्रान;	८३
अन्तर कपटी जो हम सौं अन्तर०	६१
आ—आजु बधाई माई व्रजराजजू के द्वार	१
आजु अति प्रमुदित सागर नन्द	१
आंगन खेलत बाल गोविन्द	२
आजु सखि लाल गिरद गोपाल की	२
आजु लाल की होत सगाई	३
आजु लाल की वर्ष गांठ है घरघर मंगलचार	३
आजु अति प्रमुदित है वृषभानु	३
आजु लली की वर्ष गांठि है बरसाने०	३
आजु अमर पुर मंगल चार	४
आजु सखि वर्षगांठि श्रीराम की	४
आजु बिराजत मदन गोपाल	७
आजु सखि बनतें बनि आवत०	८
आजु भली विधि देखि के माई०	६
आजु दान दिये बिन जान न पैहौ	१३
आजु मैं देखे री राधारवन	१६
आली बनमाली मन हरयो	१६
आली मेरो लै गयो हरि के प्रान	२६
आँखिन पांख दई न दई किन	३०
आली मेरे नैननि को तारो प्यारो	३१
आँखिन क्यौंहूँ रहैं हटकोरी आली	३२
आजु नवल महल उज्वल पर छवि सों०	३२
आठौं जाम बीतत है दौस ही गनत०	३२
आजु भलैं बानि कढ़नी पियारी	३३
आजु मिले कहुँ लालन वातसों०	३४
आजु रास रच्यो वृन्दावन तरनि तनैया तीर	३६
आये हैं लाडिली लाल मनावन०	४१
आजु सुख लूटत लाल बिहारी	४५
आजु सखी सुरत जुद्ध दोउ करत सजे	४५
आजु बिराजत युगल किशोर	४६
आजु बने बनमाली	४७
आजु तो गोपाल लाल कीनी हौं निहाल०	४८
आजु श्याम कहा यहां काम तिहारो	४८
आलस भरे हैं लाल सारस नैन युग०	४६
आजु ईहि बानिक की बलिहारी	५०
आजु बिराजत हो अति नीके	५०
आजु मैं नीके निहारी बिहारी पियारी०	५२

आवैरी पिय प्रेम परेखो ५४
आयो है मास सावन न आये मन भावन० ५५
आजु भले ही आये मन भाये प्रीतम सुजान. ५६
आयो आयो है बसन्त सन्त० ५७
आयो है बसन्त भयो मोहि० ,,
आंखिन लाल गुलाल न डारो० ६०
आयो आयो आगम ऋतुराज गुनीजन० ६४
आई पावस ऋतु घनघोरैं ,,
आजु सखी सावन पून्यौं सुहाई ६७
आवति सांझ समैं सजनीन कों संग लिये० ,,
आजु चढ़े रघुवंश भान आगढ़यौ० ६७
आजु दिवाली को दिन नीको ,,
आजु बड़ो त्यौंहार दिवारी ६८
आजु मजराज सुन धरयौ गिरिराज कर० ,,
आयो अगत जनक चतुरानन ७६
आयो नारद मुनि गण मंडन ,,
आयो सुरराज गजराज चढ्यो मद्य० ७६
आरति करत यशोदा मैय्या ८०
आतुर होहु न देखो पियारे ८३
आजु भले बानिक बने बिहारी ,,
आली सांवरी सलोनो मोहि भावै ,,
आजु सखी आवैंगे घनश्याम ८४
आठौं याम बीतत यौंम ही गनत० ,,
आंखिन लागे किधौं तुम ही बलि कैधों० ८५
आवो वल्लभजु मिलि चौपरि खेलैं ८८
आरति गोकुल चन्द की देखो ; ८६
आरति आरति हरन मुरारी ,,
आरति करत यशोदा मैय्या ,,
आजु बना रजनी कबनी सुन्दरता बरनौं० ६०
आजु सखी घनश्याम घनश्याम दुहूँनि होड० ६१
आजु दूलह बन्यौं कुंवर नन्दराय को ६५
आजु ब्याह सखि कुंजमहल में दुलहिन० ६६
इ—इहि ठां कब दान लयो जु तिहारे; १२
इह कोहे री श्याम काम मूरति सुभग अंस० १७
इहि मग आय निकसे लाल कैंहू बाल० २०
इन लोचन लोचन होत सँवारो ३०
इन नैननि बेचि दयो मन मेरो ३०
इन नैन निगोहनि गौंह लई हौं ३१
उ—उत डोरी लगी इत बौरि भई फिरौं १८
उठि बैठे प्रात मोद न समात गात करत० ४६
उठि बैठे दम्पति रस सम्पति भरे भोर ४६
ए—एरी बाल तैं गोपाल हि टोना० २२
एरी ग्वालि दाइन कीनैं क्यों गुपाल ऐसे० ,,
एरी बाल तेरे विरह बिहाल लाल किन० ,,
एक समैं नन्दलाल बाल के मिलन काज० २३
एरी निठुर बाल तोबिन लाल अनमनें० ३८
एरी रिस काहे को करति प्यारी तेरे आधीन ४०
ए दई भई गति कौन ४३
ए श्रीगंगा तरल तरंगा हरि पद रंगा० ७७
ए श्रीकालिन्दी इन्दीवर बरन ७७
ए श्रीवानी वेदनि बखानी विधिशिव विष्णु० ७८
ए प्रभु अब तो मोहि सम्हारो; ८०
एक समैं हरि काहू प्रिया संग बैठे संकेत० ८७
एक समैं वनिता गन में वन में वनमाली० ८७
ऐ—ऐसी मन कबहूँ मति आनौं ३६
ऐसी बात काहे को कहति प्यारी परम उदार ५०
ओ—ओहरि आई श्याम घटा ६५
अं—अंखियां उरझी सुरझै न क्यौं हू० ८२
क—कान्ह ठाढे री गायन के गन में ६
काके तुम को हो कसवानो० १३
कहो गोरस को कहुँ दान भयो जु ,,
कहो जु कहो यौंही आई हो दैन टका० ,,
कौन कै नाहिन ह्वै है भयो वन १४
काम के सुभट श्याम तेरे दोऊ ईक्षन २४
करत कलोल तेरे लोइन लोल० ,,
कोई मैंनू कान्ह बताओ नी सैंग्वी २६
कठिन लगनि है नेह की बाते सोई जानैं ३०
कैसो रैन उजारो छाई लगत सबनि० ३५
केसेरी दोउ रास में नाचत नीके ३५
कन्हैया नाचे री नाचे री० ३६

क्रीडत कालिन्दी तट गोपिन संग लीनैं ५७
कोप किये नित कौन बडाई ३६
कान्ह सों छांडि दै मान भटू इह० ४०
कानन को काची हो लाल प्यारी० ४१
कब के बिहारी करत हाहारी नैंकु हु तो० ४१
कहा करौं तू आई माई तोसों मेरी कछु० ४२
कैसी रैनि अंधियारो भारी० ४४
कैसे नीके लागत नवनागर गिरिधरन ४७
कहौ जु कहां तुम आजु की रैनि बसे; ५१
कपट को नेह जनावत प्यारे भोंरे भये० ५१
कौन अवधि विधि कीनी क्रूर ५३
क्यौं करि दिन भरिये बिनु प्यारे ५३
क्यौंहूं नहीं चैन सब लागे दुख दैन ५५
करत जल केलि गोविन्द ब्रजसुन्दरी० ६३
काती सुदि एकादशी जागे त्रिभुवन० ६६
कान्ह चले बल कंस बुलाये ७४
कहा ऐसी चूक मोमैं चूक से भये हो० ८०
कैसे मिलौं सखी प्रीतम सों ८१
कासौं कहौं सखि वेदनि मन की „
काहे करे तू औषधि सजनी „
काहे को दरत मन मेरो कारे हो० ८२
करति मंगल नीराजन धरि कंचन० ८६
कियो करि मान कोहू प्रीतम सुजान सौं ६०
कृपा करिये हरिये अब कोप हियें धरिये० ६०
ख—ख्याल मैं लाल बुरो मति मानौं यामैं० ६०
खेलत फाग सुहाग भरी अनुराग भरे० ६०
खेलन लागो बिहारी सौं प्यारी० ६०
खेलत रघुबर राज समाज सों आजु० ६२
खेलत होरी किशोर किशोरी० ६१
खेलत फाग दोऊ रसभीनें ६१
खेलत होरी गुरुजन चोरा पिय संग गोरी० ६२
खेलति चौपरि चन्द्रमुखी० ८८
खेलत चारयों नृप दशरथ सुत अवधि० ६४
खेलि तहां चौगान जानमनि० ६४
ग—गई मिलि कुंज में पुञ्जनि पुञ्जनि० १६
गिरिधारी की आँखि लगी अनियारी २१
गोरी गूजरी तैं मोह्यो गोकुल चंद री २१
गई कर रास विलास सबै अपनैं अपनैं० ४४
गोकुल की गलिन मैं ग्वाल नन्द लाल० ६१
गौरी पूजन आई गोरी ६३
गरजत घन सघन बन छोटी छोटी० ६५
गोकुल चंद हिण्डोले झूलैं ६६
गोविन्द अच्युत राधा माधो ७०
गोविंद गोविंद गोविंद माधो ७१
गोरी है किशोरी मोरो चित चोरी० ८२
गरबीली सी डोलै कहा निफरी सो० ८६
गोरी पनहारी हरिसौं अटकी ६२
घ—घायल की नी तैं कान्हर कारे ३०
घनश्याम घन श्याम० ३७
च—चली जसुमति पूजन जलवाई २
चले गिरराज तें मित्र समाज में साज सबै० ६
चलो किन देखिरी गोविन्द ७
चलोरी चलो लालहि देखें ७
चाइन चाइनरी गाइन दुहन० ८
चीरहरे बलबीर जबै सबनीर मैं ठाढो० १२
चलो किन देखैं री गोविन्द १६
चुभी चित नैननि नौंक तिहारी २५
चैन से रैन कों जागे कहूं० ५०
चलो री चलो खेलन गुपाल० ६०
चलो चलो खेलैंरी ब्रज की० ६०
चढि आयो आगमनृप० ६४
चली हैं हिण्डोरे जुरि मिलि झूलन ६५
चम्पक को फूल नहीं समतूल० ८५
चमूं चतुरंग चमूपति है जिहि० ८८
चारयौं दूलह बनैं कुंवर अवधेशके ६२
छ—छबि देख हरि देव की कछु और न भावै ६
छली वहि छैल छबीले० २६
छल बल कछू न अमचे ५२
छैल भये नये देखन को ८२
छांडि छांडि रे लँगर वा० ६२

ज—जय जय गोकुल राज कुमार	१७
जब जब लाल निहारौं तोहि॰	२५
जब जब सुधि आवति उह॰	३१
जतन जतन क्यौं हूँ ल्याई हौं॰	३४
जब जब सुधि आवैं वे सुख॰	५५
जय जय हे व्रजनि जननि यशोदे	७२
जय जय जय श्री गिरिवर धारिन्	७२
जय जय श्री वृषभानु सुते	७२
जय वृषभानु सुते सखि ललिते	७२
जय जय श्री यमुने रविकन्ये	७३
जय वृन्दे शन्दे सुख कन्दे	७३
जय जय श्री चेत्रकूट गिरि वासिन्	७४
जय जय रघुवर करुणा सागर	७४
जय जय श्री यमुना मन रमना	७८
जय जय शंकर भव भय मोचन॰	७६
जय जय भव भय विघ्न विदारण	७६
जय जय वाणी ब्रह्म सुते	७६
जाकी रमा रमण रखवारी	८०
जागुरे मनुवां लैरे राम को नाम	८०
जो पिय के मन में मन दीजे॰	८२
जय जय मीन दीन जन रञ्जन॰	८२
जतन जतन क्यौं हूँ ल्याई॰	८८
जैवत नन्दकुमार वृषभानु दुलारी	८८
जानैं जानैं हो पिय भलैं॰	४७
जागे रैन कहूँ चैन दैन लागे॰	५१
जानैं जानैं जू जानैं हो क्यानैं॰	५१
जानैं जानैं भलैं तुम राधा को॰	५३
जा हरि नाम बिसारैगो सो जीती बाजी॰	७०
जोबन मद छक्यो छैल॰	१७
ज्यौं ज्यौं करैं प्यार पिया त्यौं॰	४२
ज्यौं ज्यौं पिय आवन सुनियत॰	५६
झ—झूंटरु सांच को लाजिये॰	४२
झूलत दोउ बिहारी बिहारिनि॰	६३
झूलत फूलैं फूल कैं डोल	६३
झूलत दोऊ परस्पर॰	〃
ठ—ठाढे हरि खरिक पौरि॰	५
ठाढे दोऊ सघन कुञ्ज की॰	६५
ड—डस्यौ दृग नागिन कारी॰	२३
त—तब तो मोसों मानत ही रिस॰	६
तुम तो यदुवंशिन राव हु॰	१४
तेरो ही ध्यान निरन्तर अन्तर॰	२०
तब मूरति नैननि मांझ बसी	२०
तैं बसि कीन्हों री बाल लाल॰	२१
तुव नैन कजरारे पर वारे खं॰	२२
तो मुख चन्द किधौं अरविन्द॰	〃
तुम्हैं देखैं तै जानौं हौं देख्यो ही करौं॰	〃
तव मुख देखि देखि हौं जीवत	〃
तेरी तिरछी चितौनी किधौं बरछी॰	२४
तुम बिन दृगन सुहात न और	२५
तेरी छवि देखि छके पिय नैना	२४
तेरो अधर अद्भुत सुधाधर	〃
तुव सुखमदन बदन बिनु देखे॰	२६
तुम तो भये हो और ठौर ठौर॰	४७
तुम जिय कठिन नन्दनन्दन पिय॰	५०
तुम बिन कैसे रहौं मन भावन	५५
तीरथ राज प्रयाग बिराजत॰	७७
तनक झनक झनक सुनि॰	८१
तुम्हैं यों क्यों चहियो हो॰	८४
तोरी अंखियां मोरी अखियाँ॰	६१
तोरी आंखिन कै सुकजर॰	६२
तूं साईं मैंडा है वे	६२
द—दास प्रह्लाद हित हिरनकशिपु॰	४
देखो री देखो आवत नन्द दुलारी	६
दृग बाननि मारि डारी हो॰	११
दुपहरी गई हैं है भूखो॰	१६
देखि री देखि छवि मदन॰	१७
देखि री देखि कहत हो मो॰	१६
देखो मनसा की कुटिलाई	३१
देखो देखो लाल छवि लाडिली॰	३२
देखो अचरज कनक लता॰	३२

दूध की उफान ऐसो मान कीजे०	३६
देखि री देखि प्यारी मना०	४२
देखो विदेशी भये पिय प्यारे	४३
दुखतम दूरि भयो सब ही को	४६
द्वापर जुग की आदि तिथि०	६३
देखो ब्रजराज सुत किये नवसाज०	५७
देखो न्हाय ठाढ़ी रूपसिन्धु०	८५
देखति पिय आगम गज गामिनि०	८६
द्वै पिय एक सबै इक आसन०	८७
दुग्ध फैन सम सैन मृदुल महा००	८७
ध—धौरी धूमरी पियरी कारी काजरि कहि०	६
धनि धनि आजु की घरी प्यारी०	४५
धरि नेमहि स्वारथ साध्यो किधौं	४६
धाम ते वाम सुनाम सरोवर०	८६
न—नन्दनन्दन सखि कियें चन्दनखौरि०	५
नन्द को आवै री आवै०	१०
निकसी दधि बेचन गोपबधू०	१२
नन्द को किसोर भये भोर०	१८
नन्दलाला बंशीवाला वाला नी	१६
नेह निगोड़े को पैंडो ही न्यारो	२६
न्हाय आय भई ठाढ़ी प्यारी०	३२
ननद जिठानी के साथ दई दीठि०	३३
नागरी नागर मण्डल राय०	३५
नांचत मोहन मण्डल मद्धियां	३५
नांचत नागर नट०	३७
नांचैरी दोउ बांहां जोरी	३७
नाचत अद्भुत गति०	३८
निपट कपट को खान कन्हाई	४०
नख सौं लिखति भूमि को०	४१
नागर नलिन नैंन०	४६
नित नव नेह निबाहत मोहन०	४८
नेह को वेदन देह पियारे	४६
नन्दनन्दन देहि मे दृढभक्तिमीरा०	७१
नेहकी औषधि नेही वे जानैं	८१
नेही मन सूर नांही देही और देखवे	८१
नेही भो विदेही और जग०	८१
निरखि देखिरी कैसी छुइ०	६१
प—पालनैं झूलत गोकुल०	२
पालहि चढि लैंनी के लियें०	२
पानी लैन जानैन पैये०	११
प्रीति नई उरझांक जगी०	२०
प्रेम को रूप सो यही कहावै	२२
प्यारी तेरो बदन सुधा घर नीको	२३
प्यारी तेरे दृगजू खंजन नंनद	२४
प्यारी तेरे अंग अंग वानिक बन्यो	२४
प्रीतम मान प्यारे हौं तो०	२५
प्रेम की मरोरनि मसोसै मन मारिये	३१
मान पियारी मुख कंज लो०	३३
प्यारी तो ही सो प्यारे को०	३६
पांइन परेहू मान सुन्यो०	४२
प्यारी मनाइ लई हरिप्यारै	४४
पांव धारिये प्यारी बिहारी०	४४
प्यारी पिय तैं मिलन काज०	४४
पैढे दम्पति सुख सैन	४५
प्रीत करी ठहराई कहूँ०	४६
प्रात उठि आये लाल अलबेले०	५०
पतंग को रंग है नेह तिहारो	५१
प्रीति की रीति निबाहिनो०	५२
प्यारे बिनु सुखद लगे दुखदैन	५३
पहले तो गुरु जन डर ०	५५
पिय पिय बोलि रे पपीहा०	५५
प्यारा के मनोरथ रथ बैठे बिहारीलाल	६४
पौढ़े योग की नींद मुरारी	६४
पवित्रा पहिरावो हरि को होय पवित्र	६६
पिय बरवसी मांझ बसो निज०	८२
पिय मोहन पानिय मिल्यौ मन मिस०	८२
प्यारा लागो छोजी प्यारा०	८३
प्रेम अजाब मन भयो मरजिया	८४
प्यारी कौन कौन ठौर तैं तू भौंरनि बिहारी है	८६
पीठ दै नीठि गो बैठी कयोंहू०	६०

ब— बहुतै कछु गाल बजावति० १४
बुलायो हू का हू की क्यौंहूँ न बोलै २०
बनी कठिन दुहूँ विधि० २५
बैठि तहां मिलि गावन लागे ३८
बैठे कुसुम सेज पर आई ४३
बैठि तहां मिलि गावन लागे ४३
बीतति देखि जबै रजनी० ४४
बैठे सांझ श्यामा श्याम अटारी ६५
बलि कीनी मनैं बलबीर जबै० ६८
बैठी सोलह सिंगार कियें० ८३
बडी जू सुनों मसुक्यावति० ८६
भ—भोजन के लिये संग सखागन० १६
भोरहिं तरुनी तलप० ४६
भोरहिं मंगल आरती कीजे ४६
भोरहि सुमिरो युगल० ४६
भली कीनी भोर हू मोरे भवन० ४८
भली परि पाटी की पाटी पढ़े हौ० ४९
भलैं ही आये मन भाये लालन० ५१
भलां ही पधारया। ५२
भले तुम ले मन भावन० ५२
भौंन पधारे भलैं० ५६
भलैं ही पधारे मन भावन० ५६
भली बनि आई आज की घरी ५९
भादों सुदी एकादशी लई करवट० ६७
भा माधव माधव मैत्रीभाव ७१
भजे हं भजे केशवं कृष्ण चन्दम् ७२
भोरहि सुमिरो श्री गोविन्द ८९
भोरहिं मंगल आरती कीजे ८९
म—महरिजू ढीठ हि तो ढंग भलो सिखायो ११
माई मेरे मोहन गोहन परयो ११
मोहन जानदे जमुना पानी ११
मैन की ताप ते मैन भयो मन० १८
मन ले गयो सांवरो डारि ठगारी १८
मुकट लकुट पर वारी हौ गिरिधारी १९
मन मोहन मुरली तैंडी वे १९
मुसु काय कैं तैं वृषभानु सुता० २०
महा कठिन यह लागन निगोडी २५
मोहन मूरति सांवरे मोपै डारी कछु० २५
माई मिलि जिन बिछुरो कोइ २६
मो दृग लगे नन्द लाल सौं ननदी० २८
महा कठिन यह प्रेम सगाई २९
मोहि लई बहि नन्द किशोर ३०
महा कठिन कहा कीजिये० ३१
मोहन रास रच्यौ बंशीवट० ३५
मान कियो हरि सौं हरि प्यारी ३८
मन भावन सों री दुराव न कीजे ३९
मानिनि मान लै मेरो० ४०
मानिनि मान कयो किन० ४१
मानहु को विधि अवधि करी है ४२
मुसुक्यात मनै मन सौंचैं० ४८
मैं पन लीनौं आज तैं तुम तें० ४८
मन भावन आंगन पावन० ४९
मोहिं तो भरोसो है बिहारी० ५१
माई मिलि जिन बिछुरो कोइ ५२
मिलि सुख दै दुख दयो बिसासी ५४
मदन गोपाल तेरे हित मैं गृह वित० ५६
मन भावन आनन की बतियां० ५६
मथुरा तीन लोक ते न्यारी ७८
मोसो पतित न जग में और ८०
मोहन दे नैंन मारदे अब मैनूं ८३
मेरी सजनी हलधर वीर पी नित मोहिं० ८४
मुरली भली बाजे सप्त सुरन सौं रली ८४
मनु वा मेरो हर लियो० ८४
मृग नैनी तुवशिर वैनी० ८५
मोहनी डारैं मारैं आय ८६
मंजुल कुंज लतानि कै पुंज ० ८७
मिसरो नलकी मिलि कै ० ९०
मो मन बश नहीं कहा करिये हौ ९१
य— यह दुनिहायो ढोटारी माई १०
यहीं लौं मुराद हग राखे २५

ये दुख दाई माई बदरा गरजि० — ५५
ये नैन लालची रूप के० — ८३
यमुना तट भटपट घटई भरन — ८६
र—रंग भरे लिये संग सखागन० — ६
राधा राधा गावै मोहन मुरली मधुर० — १०
रंग भरे लिये लाल सखा० — ,,
रीतैं मोहि लियो मोहन लाल — २१
रास मंडल रच्यौ रसिक० — ३६
रास में नाचै मोहन लाला — ,,
रास रच्यौ वृन्दावन राधामोहन० — ३७
राजति है अति अद्भुत जोरी — ४७
रामकृष्ण केशव हरि गाओ — ६९
राधेकृष्ण राधेकृष्ण राधेगोविन्द — ७०
रही जु रही तुम सों बोलत कोई — ९१
ल—लालहिं देखन बाल चली है — ७
लखौचित चतुर बिहारी चोरि — ९
लटकत लटकत आवै नन्द को० — १०
लोइन लागने लाल तिहारे — ११
लाल झुलाये से डोलत० — १४
लाल मेरी इकछुरिया दूरे — १५
लाल गुपाल सबै रस भीनों० — १६
लोचन दुख मोचन गिरिधारी० — १९
लाल मनाई मनैं न गुसाइन — ४०
लटबावरि लाल० — ४१
लाल कहा तुम्हैं बानि परी० — ४५
लाल निहाल से डोलत हो० — ४८
लाल कबहूँ तो तनिक दीजे दरश० — ५२
लेलेरे लैलै हरि नाम० — ७०
लालन जू अब को तुम्हैं दीजै० — ८५
ब—ब्रजरानी की गोद विनोद करै० — २
बहु भांति के खेल न खेलत० — ६
वे देखो आवत लाल बिहारी — ७
वनितागन में हरि आवत हैं — ८
बांधे चिकन की पाग चिकनियां — ,,
ब्रज वनिता चित चोर री० — १०
बरबट छतियां लगाई माई० — ११
वृषभानु जु दान मुकातैं दियो० — १४
बनी कठिन कैसे धीर धरै री — १५
बरसाने की बानि करी तुम० — ,,
बसी तुव मुरति नैननि मेरे — २४
वृषभानु जु नन्द जू न्यौते सुनैं० — ३२
बालम की बतियां हैं मीठी — ,,
बसन्त वृंदावन चली० — ५७
बसन्त में कन्त बिना को रहै री — ,,
वै थोरी गोरी मिलि आई० — ५८
बगर बगर खेलत फिरैं हो० — ५९
बरसानें की बनि बनि बाला निकसी० — ६५
बेदहुतैं ब्रजरीति है न्यारी — ७८
बस कीनौं गुवाल तैं गूजरी० — ८५
बाग क्यौं श्याम जु रोष तजौ० — ९०
बढ़ी कहो किन ऐसी निठुराई — ९२
बहियां क्यों मरोरी तू जानैं दे लंगर० — ,,
बैठे श्याम संकेत निकेत में देखत प्रान० — ८७
बिलसत आजु सुरत सुख० — ,,
विधि शिव नारद पवन सुत० — ९७
स—सखि आजु मैं देखेरी कुञ्ज बिहारी — १८
सखि देखि री श्याम की सुन्दरताई — १७
समझो कहा आखिर होहि० — १४
सखि री आवत है गोपाल अँदेशो — ५४
सखि री सुनियो हरि की प्रीति — ,,
सब सुख दाई पावस ऋतु० — ६४
सब निशि लूटी मोहि अनारी — ८५
सखि लँगर रा संग लाग्यो ही डोलै — ८६
सब छोड़ि भयो मन मोहि० — ९०
सजे तन भूषन बसन पियारी — ९१
सांवरे रे पनियां लै जान दे — ९२
सांझ समें पहुँचे हरि पोरी — ८
सीसफूल शीश राजै विराजै० — २३
सुनोरी तुम दूध पूत भरी० — ३
सुनो को होरी को तुम० — १३

सुकुमार सितार से मर्कत तार से० ३२
सुनोरी सुनी कान दे तान० ४२
सूनीं लगै जग नीन्द गई० ६०
सोहै सुन्दर नन्दकुमर शिर सेहरा० ६६
श—श्याम पै श्यामा कियो जु पयान० ४४
शिशु ताकों जीति काम लीनों० ६६
श्रीपुष्कर निकर लिहुँ० ७७
श्रीवृन्दावन प्रभु चिदानन्द घन० ७८
ह—हरि को हरि औगुन गुन मान्यों ६८
हरि नाचत गोपवधू मणिमण्डल० ३५
हरि हारी हहा क्यों खोइ रहो० ४५
हाय मैंनु छोड़ि गया महबूब २६
हिण्डोले झूलत मचकि मचकि ६६
हेली यह चित लैगयो चोर २६
हेली हरि हरि लैगयो प्रान २७
हेली मन तो परवश ह्वै गयो० २७
हेली हरि मुख नलिन छिले मधुकर० २८
ह्वै गयो छिन में तन जु परायो ३१
ह्वै गयो मोमन तेरीय मूरति २४
होरी मांझ भोरी कोऊ जोरी चितु रहत है ५६
हो होरी खेलोंगी श्याम सुजान सों ६०
हो हो हरि भले अकेले पाये ६२
हौं तो पचिहारी बिहारी मानति न प्यारी० ५०

— इतिश्रीः —

श्री वृन्दावनदेवाचार्य जी महाराज अपने शिष्य श्री बृजानन्द जी तथा आनन्दघन जी एवं महाराज कुमार श्री सावन्तसिंह जी (किशनगढ़) को संगीत की शिक्षा दे रहे हैं।
यह जीर्ण-शीर्ण चित्र श्रीनिकुञ्ज वृन्दावन में प्राप्त हुआ है।

ग्रन्थ ग्रन्थकार सम्बन्धी दो शब्द

ग्रन्थ कार परिचय— श्रीगीतामृत-गंगा के रचयिता—श्री वृन्दावन देवाचार्यजी महाराज हैं जो अनन्त श्रीविभूषित आचार्याचार्य जगद्गुरु भगवान् श्री निम्बार्काचार्य के प्रमुख पीठ परशुराम पुरी पुष्कर क्षेत्र (सलेमाबाद, कृष्णगढ़ राजस्थान) स्थली निम्बार्काचार्य पीठाभिषिक्त प्रतापी आचार्य हो गये हैं, आपने अपने आविर्भाव द्वारा आदि गौड़ कुल को अलंकृत किया था. श्री श्री भट्टदेवाचार्य जी से इधर आज तक सात सौ वर्षों से इस पीठ पर आदिगौड़ कुलीन ही अभिषिक्त होते आरहे हैं। यद्यपि नामगोत्रं च चरणं देशंवासं श्रुतं कुलम्।

वयो विद्यांच वृत्तिञ्च ख्यापयेन्नैव सद्यतिः, इत्यादि नियमों के अनुसार महापुरुष आचार्य अपना विशिष्ट परिचय का प्रायः वर्णन नहीं करते - तत्कालीन लेखक भी अन्याऽन्य गुण गणों के वर्णन के अतिरिक्त परिचयात्मक उल्लेख स्वल्प ही किया करते थे, जिससे उत्तरवर्ती इतिहास लेखकों को प्राचीन महा पुरुषों के जन्म जन्मस्थानादि सम्बन्धी खोज में बड़ी कठनाई पड़ती है, अत इन विषयों पर आपके विस्तृत इतिहास में ही विशेष प्रकाश डाला जायेगा।

आचार्य पीठ के पत्र पत्रकों में एवं उदयपुर जयपुर जोधपुर किशनगढ़ बीकानेर भरतपुर आदि स्टेटों की तवारीखों में वि० सम्वत १७२५ से १७६७ तक आप के पुनीत नाम का उल्लेख मिलता है, वि० सम्वत् १७२४ में आप आचार्य सिंहासनासीन हुए और ४२ वर्ष से भी अधिक अपने सदुपदेशों द्वारा अनुपम लोकहित किया आपकी सादगी, सरलता, विद्वत्ता तपश्चर्या और त्याग से प्रभावित जयपुर उदयपुर जोधपुर किशनगढ़ आदि धार्मिक हिन्दु नरेशों ने जैसे अपने मुकटों की मणियों से आपके चरण कमलों का अर्चन किया: वाणी द्वारा स्तवन किया उसी-प्रकार मुसल्मान शासकों ने भी हृदय से पूजा की. आपके प्रति सभी धर्मानुयायियों की श्रद्धा बढ़ी, आचार्यं मांविजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित् यह भगवद्वाक्य आप में भली भांति चरितार्थ हुआ: उस समय के विद्वान कवियों ने आप के कलिमलापह कलेवर में अलौकिक ऐश्वर्य का अनुभव किया आचार्य श्रीवृन्दावनदेवजी में श्रीवृन्दावन विहारी का साक्षात्कार होने पर उनकी वाग्देवी ने भी यही प्रकाशित-किया-

श्री वृन्दावन देवाय गुरवे परमात्म ने
मनो मंजरि रूपाय युग्मलंगानुचारिणे॥

भजेहं वनाधीशदेवं महान्तं महा सौम्य-
रूपं जनानां सुशान्तम्।

सदा प्रेममत्तं महा प्रेमगम्यं
मुखेराधिका कृष्णलीलासुरम्यम्॥

पं० शेष श्रीजयरामदेव

मोहध्वंसोद्दंश वंशं विद्वनं हारणं विभुम्।
श्रीवृन्दावनदेवं तं भाष्यकारमहं भजे।

यशोदातनय? स्वामिन् द्विजराज? महेश्वर?।
प्रसीद त्वं महादेव? रविजानुज भक्षप?॥

"आचार्य श्री ब्रजानन्द जी,,

भक्तपालं दयालुं च देवेशं रसिकेश्वरम्।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे॥

श्रीवृन्दावनदेवाय सच्चिदानन्दरूपिणे।
नमस्ते वेदपाराय गुरवे परमात्मने।

(जयपुर नरेश महाराजा द्वितीय जयसिंहजी)

श्री निम्बार्काचार्य पीठ से अत्यन्त सन्निकट ही महाराजा श्री कृष्णसिंहजी ने आज से लग भग

साढे तीन सौ वर्ष पूर्व "किशनगढ़" राज्य स्थापित किया था। इसी कुल के नरेन्द्र श्री रूपसिंहजी ने "रूपनगर"※ में राजधानी स्थापित की।

आचार्यपीठ से पांच मील की ही दूरी पर होने के कारण यहां के राजकुल का आचार्यपीठ एवं हमारे चरित्रनायक श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी के चरणों में और भी विशेष अनुराग बढ़ा। आचार्यचरण के सम्पर्क से इस राजकुल के तत्कालीन राजा, राज महिला एवं राज-परिकर और प्रजाजनों में भगवद्भक्ति का अनुपम विकाश हुआ। महाराजा श्री राजसिंह जी, राजमहिषी श्री बांकावती जी, कुंमर सावन्तसिंह (नागरीदास) जी राजकुमारी श्रीसुन्दरकुंवरी और इनके दास और दासियां भी विशिष्ट भक्त कवि बने। उनमें से यहां श्री सुन्दरकुंवरी जी के ही कुछ उद्गार उद्धृत किये जाते हैं—

※ कवित्त ※

भक्ति मुक्ति ठाम श्री परशुराम देव जू की गादी है सलेमाबाद तहां पाप काँप ही।
कोटि कोटि जन्म सुकृत उदय तातैं पावैं महाभागी जन सेवत सजाप ही।
जहां कलिकाल के अँधियारे के तिमिरहर वृन्दावनदेव जू प्रकट प्रभु आप ही।
दीन के दयाल मोसी पतित निहाल कीनी लीनी अपनाय अब वन्दौं यहि छाप ही॥

चाहौं नहिं प्रसन्न कियो इन्द्र सुरराज को है, विधिहू न चाहौं प्रसन्न देवी को विचारी है।
चाहौं नहिं प्रसन्न कियो रिधि सिधि लच्छमी हूँ मुक्तिहू न चाहौं जो सकल सुखकारी है।
चाहौं नहिं प्रसन्न कियो आदि वैकुण्ठनाथ तीन लोक मांझ गति जाकी अति भारी है।
श्रीगुरु कृपा सों कहौं जन्म जन्म मोपै सदा भक्तजन प्रसन्न रहो यही चाह धारी है॥

येही कुलदेव मेरे येही शुभ सेव्य मेरे, येही गुणभेव मेरे इनहीं को गाय हों।
येही मति गति मेरी येही मातुपितु मेरे येही बन्धु सुत मेरे इनहीं को ध्याय हों।
येही पक्षधारी मेरे येही हितकारी मेरे येही रिधि सारी मेरे इनही को भाय हों।
श्रीगुरु कृपा तैं पाय अमृत अभय भेव ताहितजि आनभजि काहे विष खाय हों॥

इनकी माता श्री बांकावती जी आदि आदि ने भी इसी प्रकार अपनी अपनी धारणायें प्रकट की हैं। जयपुर के प्रसिद्ध कवि देवर्षि मंडन जी ने भी संक्षिप्त रूप से आपके प्रभाव का वर्णन किया है— भये नारायणदेव के श्रीवृन्दावनदेव। तिनके श्रीजयसाह ने करी चरण की सेव॥
श्रीवृन्दावनदेव को देत देवऋषि दाद। रघुकुल श्रीजयसाह सों, किय तब जस को बाद॥

आपके दो चित्र किशनगढ़ राजकीय चित्रकोष में उपलब्ध हुए हैं, उनकी पृष्ठ पर भी एक छप्पय द्वारा आपकी प्रभुता का विशेष उल्लेख इस प्रकार किया गया है—

चित्र नम्बर १४८ "हरि भक्ति निधान विद्याप्रकाशः, महामहान्त स्वामी श्री वृन्दावनदेव जी महाराज सलेमाबाद स्थल।"

※ पहिले प्राचीन समय में यहां पुष्कर क्षेत्र के इस भाग में 'वहुवलपुर" एक विशाल नगर बसा हुआ था जो विक्रम की ११वीं १२वीं शताब्दी में तहसनहस हो गया था और थोड़ी सी बसायत रह गई थी। उस (वहुवलपुर) का ही अपभ्रंश नाम "बबेरा" पड़ गया था। इसी क्षेत्र के अत्यन्त सन्निकट नील नगरी और भद्रावती (वर्तमान में जहां भदूण नामक ग्राम है) नगरी थी उनका सविस्तर वर्णन आचार्यपीठ के इतिहास में किया जायगा।

❀ छप्पय ❀

श्रीवृन्दावनदेव महान्त से दिग्गज भये न होहिं छित ।
दिनकर लौं जगमग प्रताप जश जक्त अखंडित, रसभाषा कविराज महा दिग्विजयी पंडित ।
अति निवही ऐश्वर्य भूप भये आज्ञाकारी । अन्त समय लौं परम धर्म मरजादा पाली ।
श्रीनिम्बादित्य पद्धति वहे हरिव्यासदेव गादी स्थित, श्रीवृन्दावनदेव महान्तसे दिग्गज भये न होहिं छित॥

ऐसे कितने ही विद्वान कवियों की उक्तियोंसे आपकी विद्वत्ता, भगवन्निष्ठा और ऐश्वर्य प्रतिष्ठा आदि गुणों की झांकी होती हैं। आपके जितने भी चित्र मिलते हैं उनके दर्शन से सरलता, सौम्यता, गम्भीरता का स्पष्ट भान होता है। किशनगढ़ चित्रकोष से उपलब्ध दोनों चित्रों में आपकी वेषभूषा सादगी और वयोवृद्धता, लीला विस्तार पर्य्यन्त आदर्श, भजन निष्ठा, स्फुटतया प्रतिज्ञात होती हैं। एक दूसरे चित्र में जयपुर नरेश सवाई जयसिंह जी (द्वितीय) को उपदेश करते हुए सिंहासनासीन प्रौढ़ावस्थापन्न आचार्यपाद के दर्शन हो रहे है। यह चित्र देवयोग से श्रीवृन्दावन धाम में अभी प्राप्त हुआ है। इन चित्रों के दर्शन से उक्त छप्पय के अनुसार आपका परिचय अक्षरशः मिल जाता है।

कविता के मनन से कवि के आन्तरिक भावों का एवं विशेषता का पता चल सकता है। अतः श्रीगीतामृत गंगा के पदों में कहां क्या मिलता है यह थोड़ा सा यहां दिग्दर्शन करा देना आवश्यक है—

ग्रन्थ विषयक— श्री गीतामृत गंगा के पृ० २ पद २० तथा पृ.३ पद २६ और पृ. ६२ पद ६२ में लौकिक रीत रिवाजों का सुन्दर चित्रण किया गया है। पृ ६ पद ५ में कई एक प्राचीन खेलों का उल्लेख और पृ. ६४ पद ६३-६४ में चौगान खेल का विस्तृत विवरण है, इस चौगान का ही रूपान्तर आजकल का पोलू खेल है इस से सिद्ध होता है कि पोलू भी एक भारतीय खेल है, यहां से ही अन्य अन्य देशों में फैला है। पृ. ११ पद ३८-३९ में गोहन, छानी इत्यादि स्थानीय शब्दों का प्रयोग है। पृ. १६ पद १८-१६ तथा पृ.२६ पद ६० में पंजाबी, पृ.५२ पद २२ में मारवाड़ी पृ ५२ पद २४ में मराठी पृ. ८३ पद २२ में बंगाली पृ. ६२ पद ६० में सूकल (मैथिली) इत्यादि भिन्न भिन्न प्रान्तीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है, इससे ज्ञात होता है ग्रंथकार कईएक भाषाओंके वेत्ता थे। पृ. ४ पद ३२-३३-३४ एवं ३५ से ४७वें दोहे तक श्रीराम आदि दश अवतारों के वर्णन से आपकी व्यापक एवं उदार उपासना का परिचय मिलता है। पृ.७ पद १० प्यासी ज्यौं नीर पै तीर ज्यौं छूटत., इत्यादि पदों में सुन्दर उपमा, पृ.८ पद १७ आदि में सुन्दर शब्द योजना, पृ. ६२ से दान लीला का बड़े ही अनोखे ढंग से सुन्दर वर्णन है, इस में वार्तालाप नाटकीय ढंग का है पूर्व वर्ती भाषा काव्यों में ऐसा वर्णन प्रायः कम ही मिलता है। अतः यह कहना होगा कि उपलब्ध सभी दानलीलाओं की अपेक्षा इसे विशेष महत्व प्राप्त होगा। पृ. १२ के एक ही पांचवें पद में 'अपने अपने घर ठाकुर हैं सब' अलराती सीरी ताती लोग सुहाती आदि कईएक मुहाविरों का सुन्दर प्रयोग हैं। पृ. ५१ पद ३१ "कुल्हरि में गुड़ फोड़ना , पृ. १२ पद ७ मान्यौं वो देव न भीत को लेव" "आंखिन गुड़ख्योजू„ इत्यादि मुहाविरे बड़े सुन्दर हैं पृ. २६ पद ६२-६४ पृ ५५ पद ५१ आदि में विरह का अद्भुत वर्णन है। पृ. २६ पद ७० एवं पृ. ३० पद ७४ आदि में 'नेह निगोड़े की पैंडो ही न्यारो' "आंखिन पांखि दई न दई किन' इत्यादि सुन्दर रचनायें हैं। पृ. ३१ पद ८६ आदि सुन्दर सवैया और

बहुत सी उत्कृष्ट रचनायें हैं । अनुप्रास यमक आदि शब्दालंकारों के अतिरिक्त रूपक अतिशयोक्ति; चित्र आदि अनेकों अर्थालंकारों से इसके पद विभूषित हैं । पृ. ३६ पद १० आदि में नृत्य कला एवं चतुर्दश याट के राग-रागनियों के विभेद वर्णन तथा विभिन्न विभिन्न रागों में पद रचना देख कर यह निश्चित होजाता है कि गीतामृत गंगा के रचयिता संगीत के, गीत, वाद्य नृत्य आदि सभी अंगों के विशिष्ट मर्मज्ञ थे । इसके पद लगभग ८० राग रागनियों के अन्तर्गत हैं । जैसे धनाश्री १६, पूरिया धनाश्री २ देवगांधार १७, रामकली १३, विभास १५, बिलावल ७, गौड़ बिलावल १, ललित ३, सारंग १०, गौड़ सारंग ६, खट १४ पञ्चम६, माल श्री ३ श्री १ शु. कल्याण ७ श्याम कल्याण १ कनड़ी ३२ गौरी १५ चैती गौरी १ त्रिवनगौरी १ गौरासारठा १ टोडी १३ भूपाली ३ अड़ानौं १० पूरिया १५ पूरियाईमन २ पूरीया कान्हरौ १ काफी ७ काफी वृन्दावनी २३ काफी मधुपुरी ४ परज १३ कालिंगड़ा ? सोरठ कालिंगड़ा २ आसावरी ३ श्री कंठ २ बिहागरौ १६ केदारा ८ दमार १ कान्हरौ ८ दरबारी कान्हरौ ५ नाईकी कान्हरौ १ मालाव ५ मालव गौड़ २ ईमन ५ बसन्त १ बसन्तबारंग ३ पूर्वी ५ जैत श्री २ मारवौ २ गूजरी ११ मालकोश २ भैरव ६ गारी व अरगजा ६ मलूबो १ नट ३ नटनाइकी५ नाइकी ७ मल्हार १३ गौडमल्हार २ सौहनी ५ भैरवी ४ खम्भावती २ हिन्डौल १ ध्रुवपद ८ वैजन्ती १ बंगाली ४ पंजाबो १ मारवाड़ो १ शंकरा भरन २ गोड़ी २ चौगन १ ओटक १ नाईकी विभास १ दरबारी ४ अन्याऽन्य मिश्रित रागनियों में ४५ इस प्रकार ५०१ पद और ८८ चौपाई ८२ दोहे हैं इन सबकी अनुष्टुप मान से कुल ग्रन्थ संख्या २००० से ऊपर है । हस्त लिखित मूल पुस्तकों में लीला प्रसंगवश कुछ पद दुबारा तिबारा लिखे हुए थे, अतः मुद्रित पुस्तक में भी ५-७ पद दुबारा छपगये हैं ।

ग्रन्थ कार आचार्य पाद ने सप्तम याट में श्री प्रियाजी के परकीया भाव का निषेध और स्वकीया भाव का समर्थन किया है, एवं पृ. ६५ ६६-६७ में श्रीराधाकृष्ण का विवाह का वर्णन कर उसकी दृढ पुष्टि की है जिन सज्जनों के चित्त में ऐसे अभिनिवेशनें घर बना लिया है कि अभिसार परकीया में ही घटसकता है उस अभिनिवेश की जड़ें काट कर आचार्य श्री ने इस गीतामृत गंगा में बहादिया है क्यों कि विवाह से पूर्व-एवं विवाह के अनंतर कुमारावस्था एवं स्वकीया नाइकाओं के अभिसार सम्बन्धी कितने ही उल्लेख जहां तहां ग्रन्थों में मिलते हैं श्री जयदेव और मैथिल कोकिल श्री विद्यापति ठकुर जैसे कट्टर स्वकीया वादी महा कवियों के पदों में भी इसी आशय को लेकर ही अभिसार की चर्चा की गई है अन्यथा श्री राधा कृष्ण का विवाह वर्णन संगति संगत नहीं कहा जा सकता । यहां इस विषय में इतना ही लिख देना पर्य्याप्त है ।

विशेषजिज्ञासु जन पद्मपुराण पाताल खण्ड वृन्दावन महात्म्य अ. ८ तथा सनत्कुमार संहिता का श्री नारद महादेव सम्वाद वृहद् ब्रह्म संहिता का श्रीनारायण ब्रह्मा सम्वाद,एवं नारदीयपुराण पूर्व खण्ड ८२ अध्याय; देवीभागवत नवम स्कन्ध पुरुषार्थ वाचना उपनिषत पञ्चतन्त्र के मित्रभेद कापांचवो कथा, हेमचन्द्र कृत हेम कोश आदि ग्रन्थ देखें, इन सब में राधाकृष्ण के विवाह का एवं दम्पति भाव का वर्णन किया है, जैसाकि आदिपुराण में-

"ततो विवाहमकरोद्वृषभानुगुणोदयः ।

वैशाखेच सिते पक्षे तृतीयाक्षयाह्वया ।

इत्यादि सन्दर्भ द्वारा स्पष्टतया श्री नन्द वृषभानुकृत श्रीराधाकृष्ण के विवाह का उल्लेख हुआ है"।

कल्प भेद से ब्रह्माजी द्वारा भी विवाह कराने का गर्ग संहिता आदि में उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार ब्रह्म वैवर्त में विस्तृत वर्णन है। शिवपुराण की कोटिरुद्र संहिता में " तस्य पत्नी समाख्याता राधेति जगदम्बिका" श्री नारद पञ्चरात्रान्तर्गत-श्रीराधा सहस्रनाम में नन्दनन्दन पत्नी च" स्कन्दपुराणान्तर्गत भागवत महात्म्य में तो आत्मारामस्य कृष्णस्य ध्रुवमात्माऽस्ति राधिका। तस्या दास्यप्रभावेण विरहोऽस्मान् न संस्पृशेत्। तस्याः पत्नीरविस्तारा: सर्वा: श्री कृष्ण नायिका:। सदव सा च सेवास्ति वंशीतस्येव रूपिका॥ इत्यादि वाक्यों से श्रीराधिकाजी को आत्माराम श्रीकृष्ण की आत्मा ही कहा है। इसी स्कन्दपुराण के वैष्णवखण्ड वासुदेव माहात्म्य में जब श्रीनारदजी को परमात्मा के मूलरूप का दर्शन हुआ तब-उनने परमात्मा की पत्नियों का इस प्रकार उल्लेख किया है,

" जयासुशीला ललितासुखानां
वृन्दै: सखीनां सह राधया च"
समन्वयेमानं रमया च भामा
कलिन्दजाजाम्बवत सुखानाम्।

श्री निम्बार्काचार्यजी ने " अङ्गेतुवामे०" अनुरूप सौभगाम्. इत्यादि शब्दों से और उनके शिष्य श्री औदुम्बराचार्यजी ने स्वसंकलित "औदुम्बर संहिता में- ब्रह्म वैवर्त पुराण के-

लक्ष्मीर्वाणीपत्न्यौ च जनिष्येते महामते।
वृषभानोस्तुतनया राधा गोष्ठे भविता प्रिया॥

इस श्लोक को उद्धृतकर " श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ इस वेदमन्त्र के अभिप्राय को अभिव्यक्त किया है अर्थात् भगवान् की श्री और लक्ष्मी येही दो पत्नियां राधा और रूक्मिणी नामों से शास्त्र प्रसिद्ध हैं। श्रीनिम्बार्काचार्य परम्परा वर्ती सभी आचार्यों ने और सूरदासजी आदि भाषा के उद्भट कवियों ने श्रीराधा कृष्ण युगल का दाम्पत्य भाव ही स्वीकार किया है तदनुसारही श्री स्वामी हरिदासजी श्री हितहरिवंशजी, श्री व्यासजी और श्री जीव गोस्वामी जी आदि ब्रज वृन्दावन के रसिक महानुभावों ने इसीपरम्परा का संरक्षण किया है। गीतामृत गंगा के रचयिता श्री वृन्दावन प्रभु " श्री निम्बार्काचार्यपीठासीन एक विशेषज्ञ आचार्य थे अत: आपने परम्परागत पद्धति का ही प्रचार किया है, आप के पदों में अभिसार प्रयाण आदि शब्दों को पढ कर किसी सज्जन को श्री राधिकाजी के परकीयात्व का भ्रम नहीं. एतदर्थ- थोडा सा दिग्दर्शन करादिया गया है इस विषय में " पं श्री भागीरथ झा न्यायवेदान्ताचार्य द्वारा लिखित- युगलतत्वसमीक्षा " भगवत्तत्व सुधाम्बुधि, आदि संस्कृत ग्रन्थ, एवं ब्रजभाषा भाषा के रसाभ सुधानिधि का उपोद्घात ग्रन्थ विशेष द्रष्टव्य हैं। यद्यपि श्री वृन्दावन देवाचार्य जी द्वारा रचेहुए और भी बहुत से संस्कृत ग्रन्थ थे जिनका कि श्रीब्रजानन्दजी आदि आपके साक्षात शिष्यों के " भाष्यका महं भजे" इत्यादि वचनों से पता लगता है, तथापि वे सब उपलब्ध नहीं होते, कुछ स्तोत्र और एक भक्तिसिद्धान्तकौमुदी आदि ग्रन्थ अवश्य उपलब्ध हुए हैं यह ग्रन्थ भी सुन्दर है किन्तु श्री आचार्य पीठ में इसकी जितनी प्रतियां मिली वे प्राय: खंडित ही मिली। उज्जैन की (Oriental Manu-cripts) लाइब्रेरी में एक पुस्तक पूर्ण है उसके अन्तिम श्लोक के " रस षण्मुनिचन्द्र के,, इस पद से वि. सम्वत १७६६ में संकलित यह ग्रन्थ आपकी अन्तिम कृति ज्ञात होता है। इच्छा थी कि आपकी उपलब्ध कृतियां और विस्तृत इतिहास इसी ग्रन्थ के साथ प्रकाशित होजाय परन्तु कई एक कारणों से वह मनोरथ अधूराही रहा, यदि प्रेमी पाठक इस श्रीगीतामृत गंगा का विशेष आदर करेंगे तो आशा है वे भी सभीग्रन्थ पाठकों के कर कमलों में शीघ्र ही पहुचेंगे।

—श्रीव्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ

जयपुर नरेश—महाराज श्री सवाई जयसिंहजी (द्वितीय) आचार्य श्री की स्तुति कर रहे हैं।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश श्रीमद्वृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज, सिंहासनारूढ़

वादिनागकृते सिंहं भाष्याविरोधकारिणम् ।
श्रीमन्नारायणंसाक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे ॥१॥
सर्वाचार्यमहार्घ्यं वै महाप्रेमप्रवर्षिणम् ।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे ।२।
भक्तवत्सं दयालुं च देवेशं रसिकेश्वरम् ।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे ।३।
राधाकृष्णप्रदं श्रीशं त्रिगुणागुणसाधुपम् ।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे ।४।
राधाकृष्णरहस्यज्ञं युगसेवापरायणम् ।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे । ५ ।
वनाधीशेमदा वासं वृन्दावनविहारिणम् ।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे ।६।
विख्यातं श्रीमतां श्रेष्ठं ज्येष्ठंश्रीयमुनाऽनुजम् ।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे । ७ ।
यशोदातनयं श्रीदं महीमण्डलपूजितम् ।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावनगुरुं भजे ।८।

पञ्चसंस्कारदातारं स्वामिनं सर्वसद्गुरुम् ।
श्रीमन्नारायणं साक्षाद्वृन्दावन गुरुं भजे ।९।
भजेऽहं वनाधीशदेवं महेशं महाप्रेमसिन्धुं-
मुनीशं जनेशम् ।
महापण्डितं मण्डितं सज्जनानां विरोधाऽपवादे
विवादे दिनेशम् ॥१०
नमस्ते नमस्ते वनाधीश देव ।
नमस्ते नमस्ते महाचार्य सेव्य ॥
नमस्ते नमस्ते गुणागाररम्य
नमस्ते नमस्ते महाभक्तिगम्य ।११॥
श्रीवृन्दावनदेवाय सच्चिदानन्दरूपिणे ।
नमस्ते देवराजाय गुरवे परमात्मने ।१२।
इदंस्तवं महागुह्यं श्रीवृन्दावनदेवकम् ।
यःपठेज्जनवर्यो वै तस्याचार्यःप्रसीदतु १३

इति श्रीश्रीजयसिंह महाराजेन विरचितं श्रीवृन्दावन देवाचार्यस्य महागुह्यस्तवं समाप्तम् ।

• श्रीसर्वेश्वरो जयति •

॥ श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्रायनमः ॥

अथ

श्री वृन्दावनदेवाचार्य जी महाराज की वाणी

❋ गीतामृत गङ्गा ❋

❋ दोहा ❋

मुरली मधुर बजाइ कैं, जिनमोही ब्रजबाल।
सोई नित प्रति गाइये, दिन दूलह गोपाल ॥
रसो वैसः श्रुति जो कह्यो, सोइ सच्चिदानन्द।
कहियत वेद पुरान में, परं ब्रह्म गोविन्द ॥
ब्रह्म प्रभा जाकी कह्यो, ज्यौं रविकिरनि लसन्त।
श्रीराधा आह्लादिनी, शक्ति वही इहि कन्त ॥
एकाकी न रमैं तुली, चाह भई जग आदि।
रमत जोग्य श्रीराधिका, प्रकटी शक्ति अनादि ॥
मूर्तिमान श्रृङ्गार हरि, सब रस को आधार।
रस पोषक सब शक्ति लै, ब्रजमें करत विहार ॥
देखउ ब्रह्मानन्द तैं, रसानन्द बढ़ि आहि।
नारद इहि रस ही पग्यौ, लागि छाडिकैं ताहि ॥
रसानन्द गांधर्व सुनि, थिर चर गति हो आन।
तिनकी का कहिये दशा, जिनकैं पूरन ज्ञान ॥
मृगशिशु बहियासौं बंधे इहिहित तजतजुवान।
समझि न यासौं जो पग्यौ, सो पशु तैं अज्ञान ॥
कह्यो जु श्रीभागौत में, वही पुरुष पशु रूप।
सुन्यौ न कबहूँ कान जिहि, गोविंदगीत अनूप ॥
तातैं सबरसशास्त्र मथि सुमिरि जु श्यामाश्याम।
गीतामृत गङ्गा रची करि गुरु चरन प्रणाम ॥
रसिक भक्त कलहंसजे, ते इहि करहु विहार।
जिनके हरिरसजलजबिनु, नाहिन औरअहार।
बक विषयीजन परस इहि, वेउ विमल ह्वै जाउ।
जानि अजानि लगै जु अय, पारस करै प्रभाउ ॥
प्रथमहि जन्मोत्सव कहत, जो है सबको मूल।
जाहि सुनत मिटि जात है, तनमन वाणिकशूल ॥
बरण्यौ है इहि घाट में, बालकुमार चरित्र।
जाहि गाय ह्वै जायँगे, कलिजुग जीव पवित्र ॥
जनम द्यौस को आदि लै, बरष अढ़ाई अन्त।
बाल्य अवस्था कहत हैं, जे विद्वान महन्त ॥
ता आगे कौमार है, होहि बरष जब पांच।
ता आगे पौगण्ड पुनि, दोय पांच लौं सांच ॥
ताते लै कैशोर है, सोलह के अवसान।
या आगे कवि कहत हैं, कितक बरषलौं ज्वान ॥

अथ पद

राग धनाश्री १८

आजु बधाई माई नन्दरायजू के धाम।
रानीजसुमति के भयो ढोटा सबको पूरनकाम।
घरघर वंदनवार पताका गावति मंगल भाम।
नाचतगोप करतकौतूहल अतिप्रफुलित बलराम।
मागधसूत भाट वंदीजन पढ़तविरद लै(लै)नाम।
गज रथ हय मोतीमानकमनि नंदलुटावतदाम।
दधिघृतदूध हरदकीसरिता बहिचलि ठामहिठाम
वृन्दावन तनमनधन वारत निरखि मनोहरश्याम।

(राग देवगंधार) १६

आजु अति प्रमुदित सागर नन्द।
जशुमति उदर प्राचीदिश ही तैं
उ(दै भ)दयो गोकुल चन्द।
असुर तिमिर गये मुदित भये हैं
उडुगन भ्रज जन वृन्द।
वृन्दावन प्रभु भक्त चकोरनि
मिटे सकल दुख द्वन्द।

२०

चली जशुमति पूजन जल जाइ ।
भादौं सुदी एकादशी गोपी सकल बुलाइ !
धरी सबै पूजा की सामा कञ्चनथार बनाइ ।
गावति गीतचली अहिवाती आनंद उरनसमाइ ।
बाजत ताल मृदंग नगारे सहनाई कर नाइ ।
घरघर गोकुल नगर रह्यो सबकैं उच्छव छाइ ।
मोदभरी लिये(गोद)लालको चली अंबिकाधाइ ।
आनन्दभार भरैं यौं हूरैं पहुँची जमुना जाइ ।
पूजि जथाविधि वरुण देवता दीनी विप्रनिगाइ ।
सबहिनकौं पहिरावनिकीनी लैनिजसदनजिवाइ।
वृन्दावनप्रभु झुलायपालनैं फिरिफिरिलेतबलाइ ।

राग रामकली २१

पालनैं झूलत गोकुल चन्द ॥ टेक ॥
हुलरावति गावतिनंदरानी झुलवत मन्दहिमन्द ।
नतर जटित कञ्चनमय पलना
लटकन मनि मुकतानि ।
वृन्दावनप्रभु चरनअंगूठा पिवतपकरि दुहुँपानि ।

राग विभास २२

ब्रजरानी की गोद विनोद करैं हरि
मोद भरी यौं लड़ावति मैया ।
नये गावत गीत नचावति दैचुटकी तिहिं
जो तिहुँ लोक नचैया ।
समात न नन्द आनन्द में देखि सुनैं
सु मनोरथ पूरयो है दैया ।
कब हूँ दिन ह्वै हैं वह मो लला सु
वृन्दावन जै हैं चरावन गैया ।

राग रामकली २३

आंगन खेलत बाल गोविन्द ।
इन्द्र नीलमनि बरन श्याम तन
नख शिष आनन्द कन्द ।
बिथुरि रही सिर कुटिल लटूरी
मृदु मुसुकत मुख चन्द ।
घुटुरनचलत किंकिनी नूपुरबाजत मन्दहिमन्द ।
थिरहू रहत किलकिरीगत अति
निरखि यशोमति नन्द ।
वृन्दावन प्रभु अद्भुत लीला
गावत चारयौं छन्द ।

राग बिलावल २४

प्रातहिं उठि लौनी कै लीये लौंद लौंदगी देत ।
जशुमति मात डरावति झूठैं लै लै कर में बेत ॥
धरे विविध पकवान आनि तऊ
तिनहिं न देखत खात ।
दृढ़ कर गह्यो न छोरत क्यौं हूं
निज कर अंचर मात ॥
रोवत रगरत चरन धरनि पर
हठ जु हठीलो ठानत ।
वृन्दावन प्रभु माखन मथि मैया
देति तबै भल मानत ॥

२५

आजु सखि साल गिरह गोपाल की ।
आवौ सब मिलि गावौ मंगल
छवि देखो जशुमति लाल की ॥
केशरिरंग बसन नखशिख तैं पहिरैं भूषणअंग ।
गावत गुन गन्धर्वगुनीजन बाजतमधुर मृदङ्ग ॥
अरु बाजे बाजत नाना विधि
चारण सूत पढ़त हैं छन्द ।
वृन्दावनप्रभु करन्यौछावर देतनवौंनिधि नन्द ॥

राग ललित (अथवा) गूजरी (उपालम्भ)

महरिजू ? ढोठहिं तौ ढँग भलौ सिखायो॥टेक॥
सूने सदन पैठि ऊखल धरि
वा ऊपर इक सखा चढ़ायो ।
उहिं काँधैं चढ़ि आप छींकेते
लीनो दह्यौ उतारि ।
आप खाइ अरु सखन खवायो
दोनों चहुँधाँ डारि ।
भाँडे फोरि मो सुत वारे मुख
दधि माखन लपटायो ।
वृन्दावन प्रभु मोहिं देखि कैं
भागि वहां तैं आयो ।

२७

सुनोरी? तुम दूधपूतभरी अस क्यों बोलतकूंठ।
बनाइ बनाइ जेतीबातैं कहोकहा मोसुतकीऊठि॥
इह तौ अबही चलन सीखतु है
कहौ कहा या को चित्त।
दधौ माखन जो खाय तो है कहा थोरो इत्त॥
तातैं मेरे सुत हिं आइकै मत दीयौ करौ दोष।
बिगरै सो लेजाहु यहातैं मतिकरो मनमें रोस॥
इकलोतौ को पूत मोहिं दयो विधाता नीठि।
वृन्दावनप्रभु माता कह्यौ तिहारे
पांवपरौं न लगावौडीठि॥

२८

आजु लाल की होत सगाई।
आवौ सबै गोपीजन मिलि कैं
गावौ मङ्गलचार बधाई।
चोटी चुपरि गुहँ सुत तेरी छांड़ो चञ्चलताई॥
वृषभानुगोप टीको दैपठयो सुन्दरजान कन्हाई।
तो कौं जो इहि भांति देखि है
करि है कहा बड़ाई॥
पहरि आभूषण-वसन अमोलिक
उन कौं देहु दिखाई।
यहसुनि नंदनंदन उठिआतुर बैनीबैठि गुहाई॥
वृन्दावनप्रभु जशुमतिमैया हंसिहंसि लेतिबलाई।

राग ललित (अथवा) गूजरी २६

आजु लाल को बरष गांठि है
घर घर मंगलचार।
बैठे नंद आनन्द भरे बनि दीने खोलि भंडार॥
विप्र सूत मागध चन्दी जन जे आये उहिं बार।
अभर भरे ऐसे सम्पतिकरि जाइ न दूजै द्वार॥
द्वार द्वार बंधी वन्दन माला
मजबाला करि२जु सिंगार।
आईं लै लै भेंट न्यौछावरि
भरि भरि कञ्चन थार॥
पीत वसन शिखनखतैं भूषन पहिरे नन्दकुमार।
देवविप्र गोधन करि पूजा
रतन सिंघासन बैठे उदार॥
विप्र सबासनि करि टीको कही
चिरञ्जीवरहो पुत्रतुम्हार।
कहैं सब पूरे पुण्य यशोमति
पुत्ररतन दीनौं करतार॥
सबनि जिथाय पहिरावनि कीन्ही
ब्रजरानी इकसार।
पीरौपहरि गोदलैबैठी बल्यौमैयाकैं मोदअपार॥
बहिनसुनन्दा करीआरती धरि बाती घनसार।
बाजत बाजे दधि अरु हरदी
छिरकत नाचत ग्वार॥
निरखि गोविंदचन्द मुख सुन्दर
घर अंबर भयो जैजैकार।
वृन्दावन प्रभु उछाव इहि करत
सफल तिनको संसार॥

श्रीप्रियाजू की बधाई (राग देवगांधार) ३०

आजु अति प्रमुदित है वृषभान।
कुंवरि जनमसुनि भुवन चतुर्दश बाजे हैं निशान॥
पुर वधू नव साज साजैं करत मङ्गल गान।
सुरवधू मिलि सुमन बरषैं चढ़ी विविध विमान॥
बरसानु ईश द्विज वेदि दीनन भरे कोटि निधान।
नन्द जशुमति सुनि बधाइन दये खरिक खैलान॥
नानाविधि के बजत बाजे परी सुनत न कान।
वृन्दावन जन लली ऊपर वारि डारत प्रान॥

राग विभास ३१

आजु लली की बरस गांठि है
बरसाने बाजत सादानें।
दान देत वृषभान जान मणि
गुणी करत गुण गानें॥
घरघर मोतिन चौक साथिया
धुजा पताका वंदन बार।
रम्भा खम्भ अम्भ भरि २ धरे
कञ्चनघट आंवनिभरि द्वार।
नगर नगर घर घर नाना रंग
वसन अमोलिकन छाये।

मानों मघवा असवारी त्यारी
विविध विमान बनाये ॥
रस ओपीं गोपीं घर घरते
करि करि सुघर सिंगार।
चलीगावती मंगलसामा भरि भरि कञ्चनथार ॥
पहुँची जाय सकल जब द्वारैं
तहां भइ भीर अनन्त।
भीरनिवारि सबै भीतर लई कीरतिजू कै कन्त ॥
कीरति उठि आदर करिलीनी बैठाईं सबजाय।
भूषनवसन अमोल सुताको पहिरायेजु बनाय ॥
पीरोपर्ह्यार गोद लै बैठी भावत मोद न अंग।
गोप सबैछिरकत दधिहरदी नाचतबजतमृदङ्ग ॥
टीको करि सबहिन कह्यो ऐसे
अविचल रह्यौ सुहाग।
इह कन्या नंदलाल पाहुनों भानभूप बड़भाग ॥
कीरतजू पहिरावनिकीन्हीं सकलवधूनि जिवांइ।
वृन्दावन प्रभु प्यारीमुख लखि (लखि) कहै
धनि कीरत लेत बलाइ ॥

श्री वामन बधाई राग सारंग ३२

आजु अमर पुर मंगल चार।
अदिति कैं प्रकटभये अरिसूदन
वामन वपु अवतार।
द्वार द्वार दुन्दुभि धुनि गाजत
सुर वनिता सजि कञ्चनथार ॥
गावत गीत चली अति आतुर
जुरि मिलि कश्यप द्वार।
भईं दसौं दिश विदिशु सु निर्मल
मिटिगयो मेदिनिभार ॥
वृन्दावनप्रभुको यशगावत विधिशिव बारम्बार।

(श्रीरामचन्द्रजी की वर्ष गांठ) राग गौड़ सारंग ३३

आजु सखी बरष गांठ श्रीराम की
निजजन पूरन काम की।
घर घर मंगल चार बधाई
छवि औरैं अयोध्या धाम की ॥
घनतन पीतवसन भूषनवर पहिरें अनुजसमेत।
अंगभंग लावन्य ललितलखि मन्मथ मनमथिलेत।
गजरथ अश्वपदाति असंखित
चहुँदिसि खरे सिंगारे।
झांझमृदङ्ग करनाइमझीरी बाजतविविधनगारे।
गावतगुनीं भाट चारनगन बरनत विरद नये।
देत हैं मौज फौज हैंगे की किन पै जात लये ॥
करतआरतीमातकौशिल्या फिरिफिरिलेतबलाय।
वृन्दावन प्रभुसहित जानकी सिंहासन बैठाय ॥

श्री नृसिंह बधाई राग खट ३४

दास प्रह्लाद हित हिरनि कश्यपु हरन
खम्भते निकसि नरसिंघ गाजे।
गिरिगये गरभ सरव रिपु बधुनि के
असुर सिंधुरहि जितजितते भाजे॥
बरसैं सब सुमन मिलि सुमनयाननि चढ़े
अमर पुर विविध वादित्र बाजे।
वृन्दावन प्रभु शरन पालन-करन
धरत बहुभांति वपु भक्त काजे ॥

दशावतार (अवतार दिवस स्मरण) बधाई

❀ दोहा ❀

कहत जन्मदिन दशनि कै हैं लीलातन और।
नित्यधाम में नित्य सब राजैं निज निज ठौर ॥
कृष्ण बसैं गोलोक में, जो हैं स्वयं प्रकाश।
तहिं प्रकाश व्रजभूमि है जहां करैं नित वास ॥
प्रकटि चैतसित पंचमी,[1] मीन रूप भगवान।
ल्याये हनि शंखासुरहि, वेदनि धर्म निदान ॥
भये ज्येठ सुदी द्वादशी,[2] कूर्म रूप अवतार।
पृथ्वी धारी पीठ पर, अरु मन्दर आधार ॥
कृष्णा नवमी चैत्र की, दिन प्रगटे बाराह।
रसा उधारी पैठिकैं, दुर्घट वारि प्रवाह ॥३५॥
माधव सित चौदस धरयौ, माधव नरहरिरूप।
आदि असुरको मारि सुत, राख्यौ भक्तनिभूप ॥
भादौं सुदि की द्वादशी, वामन वपुधरि आप।
बलिको छलि आपुहि बंधे हरे सुरनि संताप ॥

---

१. चैत्र शु० ३ । २. वै० शु० १५ कल्पभेद

माधव की सुदि तीज कौं, भये भारगव रूप ।
दुष्ट भूप संहारि कैं, किये विप्र सब भूप ॥४२॥
शुक्ला नवमी चैत की, दशरथ के भये राम ।
दंडक बन निःकंट करि, पूरे भक्त नि काम॥४३॥
प्रगटे भादौं छट्ठ कौं, कृष्ण भ्रात बलराम ।
कढ़े देवकी गर्भ ते, संकर्षण भयो नाम ॥४४॥
भये जेठ सुदी द्वैज कौं, बुद्ध रूप गोविन्द ।
निंदा करिकैं यज्ञ की, असुर भ्रमाये मंद ॥४५॥
ह्वै है जेठ सुदी छट्ठ कौं, कल्की श्री भगवान ।
करिहैं म्लेच्छनिकी निधन, कर गहि कठिनकृपान॥
भादौं बदि की अष्टमी, अरु रोहिणि बुधवार ।
अवतारो श्रीकृष्ण निज, प्रगटे हरन भू भार ॥४७

॥ इति श्रीकृष्ण गीतामृत गंगा प्रथम घाट ॥

❀ द्वितीय घाट ❀

दोहा—अब बरनौं गोविन्द जी, लीला की पौगंड । ब्रज देविनि आशक्ति की, उँहि वैतैहैं मंड ॥१॥

राग पंचम ॥ पद २ ॥

नन्दनन्दन सखि लियैं चन्दन खौरि ठाड़े खरिक पौरि प्रान प्यारे ।
सरद ससि वदन दिये कुन्द कोर करदन सकल सुख सदन पर मदन वारे ॥ टेक ॥
झुकि रही पाग सिर सुरंग बायैं भाग लसत मृदु हंसत अधिकै सुहाये ।
अरुन आयत नैंन सकल सुषमा ऐन नचत मनौं मैन नटुवा नचाये ॥१॥
गंड मंड सुमणि मकर कुण्डल झलक अलक की रलक लखि पलक थाकैं ।
भृकुटी कमान सम बान कुंकुम तिलक सोई जन जानैं हिय लागे जाकैं ॥२॥
तार उर हार मंदार माला बनी कंठ कौस्तुभ मनी अधिक छाजै ।
नील गिरि शिखर ते उतरैं मनौं गंग द्वै करत तप तपत मनौं मध्य राजैं ॥३॥
चरन लपटाय रहे चारु कंचन लकुट बरनी न जाय मन हरन शोभा ।
मनहुँ थिर ह्वै रही चपल सौदामिनी तासौं रही लपटि मनि नील शोभा ॥४॥
रुक्मरुचि वसन पर रुचिर मणिमय रसन श्यामघन बरन तन पीत उपरैना ।
वृन्दावन प्रभु की माधुरी उदधिमधि मीन ज्यौं लीन भये निरखि नैंना ॥५॥

राग खट् ॥ पद ३ ॥

ठाढ़े हरि खरिक की पौरि सखि दौरि री देखि नख शिख तैं अंग अंग शोभा बनी ।
चारु मुख चन्द अरबिन्द से नैंन युग हंसत मन्द मन्द रद मनहुँ हीरा कनी । टेक ॥
अलकरही छूटि सब लूटि छबि जगत की पुंज पुंज गुंजत मधुप सरस सौंभैं सनी ।
श्याम अभिराम तन कनक सदृश बसन लसत पुखराज मिलि मनहुँ मरकत मनी ॥१॥
खौरि कुंकुम कियें रही भृकुटी छियें पाग पचरंग पर रतन शोभा बनी ।
खचित कुण्डल मकर करन गिरिधरन कैं हरन मन जलज की माल राजत घनी ॥२॥
तनक हो सैंन मैं मैंन कोटिक भ्रमत बरनि सकै कौन कवि अखिल उपमा खनी ।
नित्य निरखत रहत श्रीवृन्दावन प्रभु कौं जे लिखी विधि जिन मैं आब तिनकी गनी ॥३॥

राग पंचम ॥ पद ४ ॥

रंग भरे लियें संग सखागन गोधन संग चले नट नागर।
मुरली मुहचंग बजावत गावत एक तैं एक बने गुन आगर॥ टेक॥
हरें ई हरें बहु हास्य करें गिरिराज तरें पहुँचे गिरिधारी।
सारिद बारिद सी बन मैं सब फैलि गईं गैय्यां न्यारी ह्वै न्यारी॥१॥
जाइ उहां गिरि कन्दर मैं फल पत्र प्रसूननि माल बनाई।
श्री वृन्दावन प्रभु कौं तब ही अब दान लीला करिबे सुधि आई॥२॥

राग गौड़ सारंग ॥ पद ५ ॥

बहु भांति के खेलन खेलत हैं इडडूक बड़ी भुलनी भिडियाई।
आइ गये सुधिकौं लघु भाई कि औचक ही कहुँते चल भाई॥टेक॥
इक ओर भये बलराम बली इक ओर श्रीदाम सुदाम कन्हाई।
होड परे भरे रोष महा कहैं जीते हैं जीते हैं नन्द दुहाई॥१॥
च्यारि घरी दिन जानि गैय्यांनि करैं इकठी मुरली जु बजाई।
श्रीवृन्दावन प्रभु की सुधि आई सुगायें आईं अलवाई ज्यौं धाई॥२॥

राग मालश्री ॥ पद ६ ॥

कान्ह ठाढ़े री गाइन के गन में।
कहा कहौं अनुपम शोभा री राजत मानों श्यामघन शरद घननमें॥टेक॥
बंशी बजावत गावत मधुरैं सुर सुधि न रही सुनि काहू तनमन में॥१॥
श्रीवृन्दावन प्रभु की छवि निरखत कोउ न रहत अपअपनैं पनन में॥२॥

राग श्री ॥ पद ७ ॥

धौरी धूमरी पियरी पियरी कारी काजरि कहि कहि टेरत॥ टेक॥
बरह मुकुट शिर कामरि कांधैं दक्षिण कर पीताम्बर फेरत॥१॥
सुन्दर नागर नट यमुना(की)तट लियें लकुट गाईन निबेरत॥२॥
सुधि न रही मोतन मैं तनकी श्रीवृन्दावन प्रभुकी छवि हेरत॥३॥

राग गौड़ सारंग ॥ पद ८ ॥

चले गिरिराज तें मित्र समाज मैं साज सबै नटराज को किये।
मृदु गावत वेनु बजावत हैं पुलकौं पशुपंछी प्रमोद हिये।
रही अनिमेष ह्वै गैय्यां सबै मन मोहन रूप अनूप पिये।
मुख चन्द मनौं अरविन्द से नैंन बड़े लगनैं श्रुतिमूल छिये।
श्रीवृन्दावन प्रभु देखन कौं उतचाहि रही सब घोष तियें।

राग शुद्ध कल्याण ॥ पद ९ ॥

आजु विराजत मदन गुपाल ।
नटवर वेश किये मन मोहन उर वैजन्ती माल ॥टेक॥
चित्रित नाना रंग श्याम अंग काछैं काछिनि लाल ॥१॥
ग्रथित कुसुम पल्लव जूड़ा पर सोहत बहीं पिच्छ विशाल॥२॥
गावत आवत गाइन पाछैं वेनु बजावत परम रसाल ॥३॥
श्रीवृन्दावनप्रभु कौं देखन उठि धाईं तजि गृह कारज बाल॥४॥

॥ पद १० ॥

लालहिं देखन बाल चलीं हैं ।
गृह गृह तैं सजि भूषण अम्बर मूल तैं काम लता सी फलीं हैं ॥१॥
प्यास्यो ज्यौं नीर पै तीर ज्यौं टूटत यौं अति आतुर जाय मिलीं हैं ॥२॥
श्रीवृन्दावनप्रभु कौं अवलोकत मानहु मैन की सैंन फलीं हैं ॥३॥

राग देव गांधार ॥ पद ११ ॥

चलै किन देखिरि गोविन्द ।
लालपाग की झलक अलक पर अलक मनो भव फन्द ॥१॥
भौंह कुटिल दृग मञ्जु कञ्ज से निरखि मिटैं दुख द्वन्द ॥२॥
पीत झगा झीने मैं झलकत श्याम अंग छवि अनुपम चन्द ॥३॥
श्रीवृन्दावनप्रभु सो सुत जिन कै धन्य यशोमति नन्द ॥४॥

राग पञ्चम ॥ पद १२ ॥

चलौरी चलौ लालहि देखैं ।
कोटि काम अभिराम श्याम तन निरखि निरखि नैननि फल लेखैं ॥
मदगयन्द गति आवत ह्वैं हैं वंशी अधर धरैं ।
नित नव रंगी ललित त्रिभंगी नटवर वेश करैं ।
हम तन हेरि फेरि नीकैं सुर नई नई तान सुनैं है ।
श्रीवृन्दावनप्रभु नेह को नातो नैन की सैंन जनैं है ।

॥ पद १३ ॥

ये देखो आवत लाल बिहारी । संग सुदेश सुवेश सखारी ॥
सुनिये मुरली जु रली अधरामृत सौं उठी गोधन धूरि घटा री ॥१॥
ठौर हि ठौर जु सौर परी सब दौर चलीं पुर कों बनिता री ॥२॥
रूप उजागर है नट नागर सागर री गुन को गिरिधारी ॥३॥
विमान चढ़ी गुन गान करैं हरषैं बरषैं सुमनौं सुर नारी ॥४॥
श्रीवृन्दावनप्रभु रूप निहारि कैं दीठि कहूँ न टरैं पुनि टारी ॥५॥

राग कनडी ॥ पद १४ ॥

देखो रि देखो आवत नन्द दुलारो ।
चाइन चाइन गाइन के संग गोप वधूजन नैंननि तारो ॥१॥
मुरली सुर लीन प्रवीन महा सु हरयो चित गौरी बजाय हमारो ॥२॥
श्री वृन्दावन प्रभु अंग अंग छवि निरखि निरखि तन मन धन वारो ॥३॥

राग पञ्चम ॥ पद १५ ॥

आजु सखी वनते बनि आवत गावत श्याम सखागन में ।
गति गंजत मत्त गयन्द हु की लखि कौन रहै अपने पन में ।
पगियां शिरलाल रही झुकि भाल सुपीत मगा झलकैं तन में ।
उपमा उमजी मन मैं इक यौं सुमनौं चपला लपटी घन में ।
घुंघरारी लटैं लट कैं मुख ऊपर रंजित है रज गोधन में ।
चित्र लिखी सी रह्यो हौं निहारि श्री वृन्दावन प्रभु वृन्दावन में ।

॥ पद १६ ॥

वनिता गन में हरि आवत हैं ।
मुरली मुहचंग बजावत गावत तान तरंग बहावत हैं ॥१॥
काहु सौं सैन कैं बैन कै काहू को मैन तरंग बढ़ावत हैं ॥२॥
श्री वृन्दावन प्रभु आननचन्द विलोकि न मोद में मावत है ॥३॥

राग गौरी ॥ पद १७ ॥

बांधे चिकन की पाग चिकनियां ।
चाइन चाइन डोलें गांयन दुहतरी दोहनी लियें कर मोहनी डारत सोहनी सूरत खासे की तनियां ॥१॥
पीन पिछोरी कांधें सेली कुटिल कनौती कुछेल सौं सनियां ॥२॥
[श्री] वृन्दावन प्रभु की छवि देखि थकित भई हौं भरन गई ही पनियां ॥३॥

॥ पद १८ ॥

सांझ समैं पहुंचे हरि पौरी ।
हरैं ई हरैं पग पैंड धरैं वन माल गरैं करैं चन्दन खोरी ॥१॥
नन्दजु नन्दन लाय लियो हिय आरति साजि यशोमति दौरी ॥२॥
न्यौछावरि आरति कै मुख चूं बि सु लै अँचरा कर झारी रजौरी ॥३॥
भीतर जाय बैठाय तबे कह्यो गोपिन मंगल गीत कढौरी ॥४॥
[श्री] वृन्दावन प्रभु छप्पन भोग जिवाये दै दै अपनैं कर कौरी ॥५॥

राग कल्यान ॥ पद १९ ॥

चांइन चांइन रो गांइन दुहत गोपाल लाल ।
कनन कटक मकरा कृति कुंडल गरैं धरैं मुक माल ॥१॥
सोहनी दोहनी करनो ईं कांधे कुंकुम बिन्दु बिराजत भाल ॥२॥
(श्री)वृन्दावनप्रभु की छवि देखन गृह गृह तैं दौरी ब्रजबाल ॥३॥

राग टोडी जौनपुरी ॥ पद २० ॥

अरी हांरी मोपै डारी सखी कछु मोहनी, वनि सांवरि सूरति सोहनी।
धेनु दुहांव न गावरी खरिक में जब लइ करते दोहनी ॥१॥
वंकविलोकनि देखि कैं वा की मदन बान नहीं कोहनी ॥२॥
श्रीवृन्दावन प्रभु पहलैं मंत्र पढि मोसौं करी कीधौं टोहनी ॥३॥

राग धना श्री ॥ पद २१ ॥

तव तो मोसौं मानत ही रिस नेकु ही बात कहैं री।
अब तो नेह् बढ्यो दिन दिन नव छिनक में जाति दुहीवन कै मिस।
घर वन मन लागत नहिं तेरो चकित भई चाहति अब चहुँ दिश।
नये नेह की टेव बढी है पिय बिन और सबै लागत विश।
तब लाल हि लखि डरि भाजत ही दुरी रहत ही भौंन चौंस निश।
अब (श्री) वृन्दावन चन्द विलोकत मिटवत नैंन चकोरन की तिस।

राग षट् वा ललित ॥ पद २२ ॥

आजु भली विधि देखि कैं माई सु आई गोवर्द्धन नाथ हि दौरी।
एक ही अंग निहारि जो नागि रही अपनैं पन ताहि बदौरी।
भाग बड़ो वनिता सुख चित सन ल्याये जिनहीं चढि चौंरी।
हम कुल कानि मानि निशि वासर भई चंपक की भौंरी।
गई करन वश भई विवश अब दई करी कछु औरी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु पीछैं बिकल भई फिरत आपको गौरी।

राग परज ॥ पद २३ ॥

लयौ चित चतुर बिहारी चौरि।
लाल पाग रही लटकि भाल पर ठाढो ब्रज की खोरि।
एक दिना सखि रोकि रह्यो मग गयो मेरी बहियां मरोरि।
वश कीनी वन रसिक आपनैं बांधि प्रेम की डोरि।
ता दिन तैं मैं सुजन बन्धु पति सबसौं डारी तोरि।
(श्री) वृन्दावन प्रभु हाथ बिकानी कहो कोउ बात करोरि।

राग ललित ॥ पद २४ ॥

छवि देखे हरि देव की कछु और न भावै। निशिदिन देखयो कीजिये मन मैं यहि आवै ॥टेक॥
अंग अंग शोभा समूह कवि उपमा पावै। नैन सैंन रस औंन मैंन मनहूँ ललचावै ॥१॥
वाम पांनि पर गिरि धरैं हरैं हरैं मुसुकावै। गोपीजन मन मदन की कल्लोल उठावै ॥२॥
इन्द्र कोप छिन करि गर्व्यो सब मिया मिलावै। (श्री) वृन्दावन प्रभु घाट घाट देखन जिन्हैं पावै ॥३॥

राग गौरी ॥ पद २५ ॥

ब्रज बनिता चित चोर री श्याम आवै ।
लटकि लटकि चलै लाडिलो मुरली तान सुनावै ॥ टेक ॥
तन सुधि तनक रहै नहींरी ताथर धुरपद गावै ॥ १ ॥
घन तन पीत बसन सौदामिनी आनन्द रस बरषावै ॥ २ ॥
(श्री) वृन्दावन प्रभु माधुरी मूरति निरखत कौन अघावै ॥३॥

राग कनडी ॥ पद २६ ॥

नन्द को आवैरी आवै, बनतैं बन्यो गोधन में ।
फूलन मुकुट और फूलनिके आभरन गौरी राग गावैरी गावै ॥
अंग अंग शोभा की शोभा उठत मानौं मदन लजावै री ॥
श्री वृन्दावन प्रभु की शोभा निरखत मन न अघावै री ॥

॥ पद २७ ॥

लटकत लटकत आवै नन्द को इहि मग मुरली की टेर सुनावै ।
चटक मटक किये बहुत सखी री चितै चितै चितहि चुरावै ॥१॥
श्रवन सुनत है जात बावरी कनरी राग अभावै ॥२॥
(श्री) वृन्दावन प्रभु बसि कर लीनी और न कछू सुहावै ॥३॥

राग कनडी ॥ पद २८ ॥

यह ढुनि हार्यो ढोटा री माई ।
बड़े बड़े नैन मैन सरमानो कर कंचन को सोटा री ॥
जा दिन तैं निरख्यो छवि ताकी सहि न सकत पल ओटा री ॥
(श्री) वृन्दावन प्रभु मोहि लई मन पर्यो प्रेम के कोटा री ॥

॥ पद २९ ॥

राधा राधा गावै मोहन मुरली मधुर बजावै ।
बांकी पाग भौंह अति बांकी बांके नैन नचावै ॥
बनघट रहत रैन दिन ठाढो गज गति लटकि लखावै ।
युवतिन आवत देखि सखिन कौं करि करि सैन बतावै ॥
कंदुक मिस कंचुकि टक टोरत नैंकु न ढीठ सकावै ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु ललित त्रिभंगी लै लै तान रिझावै ॥

राग भूपाली ॥ पद ३० ॥

अनोखे छांडि लला लंगराई । बहुत अनीति सही मैं तेरी खाति हौं बाप दुहाई ॥टेक॥
चोर्यो चीर कंचुकी फारी यह सीखे चतुराई । जाहु जाहु जैसी नहि नीकैं राखत नैंकु बड़ाई ॥
जित-जित नगर-नगर घर-घर में इह नित कीरति गाई । निपज्यो निपुन नंदको नंदन नारिन बचन दराई॥
यह तुम लाड करौ उनहीसौं जे तिहारे मन भाई । श्रीवृन्दावनप्रभु तुमहि परयातन हौं इनिबात नि पाई॥

राग गौरी ॥ पद ३१ ॥

बर बट छतियाँ लगाई माई, मोहि बनि लंगर कुंवर कन्हाई।
बहियां पकरि मोहि लैगयो कहियां नहियां करत कीनी मन भाई।
क्यौं करि कितहूँ निकसिये सजनी जित देखौं तितही मंडराई।
(श्री) वृन्दावन प्रभु अति ही अचगरी तजि हौं नगरी इन बातनि धाई।

राग अडानौं ॥ पद ३२ ॥

माई मेरे मोहन गोंहन परयौ, कहा जानौं उन कहा चौंकरयौ।
मन बीथन घर घाट बाट मैं जित देखौं तित रहत अरयौ।
कहा कहौं अंग अंग माधुरी, मृदु मुसकनि मेरो मन जु हरयौ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु नन्ददुलारो नख शिख रूप भरयौ।

राग पूरिया ईमन ॥ पद ३३ ॥

पानी लैंन जान न पैये, या लंगर नन्दलाल पै री।
साथ होत गृह द्वार हितैं उठि गुरुजन ले जु मकैये।
नैंन सैंन मिलवत हँसि हेरत टेरत बातन नैंकु चितैये।
(श्री) वृन्दावन प्रभु मोहनी मूरति देखैं होत मन हीननि अंथे।

राग कनडी ॥ पद ३४ ॥

मोहन जान दे यमुना पानी।
मोहि लई तेरी इन चितवनि सूधैं देखि गुमानी।
लाज भरी डर बदन माधुरी निरखि न कबहुँ अघानी।
कहिहैं जाय परोसनि घरतो दहि हैं ननँद जिठानी।
सुनि हैं नाहु अनाहक जरि हैं सासु महा अनखानी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु प्रीति निगोडी रहत न क्योंहूँ छानी।

॥ पद ३५ ॥

लोइन लागनैं लाल तिहारे, देखत ही हरैं नैंन हमारे।
खंजन मीन कुरंग सरोरुह जिनकी कटाक्ष पैं वारे।
मन युवती जन मन हरबे की विधि मांनों टौना संवारे।
(श्री) वृन्दावन प्रभु मोल लई बिन दाम नि कान्हर कारे।

राग गौरी ॥ पद ३६ ॥

दृग बांनांन मारि डारी, अलबेले कुंज बिहारी।
घायल भई घूमत हौं डोलौं दरशन बिन गिरिधारी।
मन उरझो सुरझै नहीं क्योंहूँ अलकैं घूंघर बारी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु सूरति ऊपर बेर बेर बलिहारी।

राग ललित ॥ पद ३७ ॥

चीर हरे बलबीर जबै सब नीर में ठाढ़ी पुकारति नारी।
पर के सुनि हैं कहि हैं जु कहा हम ठाढ़ी सबैं जल बीच उघारी।
अम्बर देहु हमारे लला हम खाति हहा अब दासी तिहारी।
कदम्ब चढ़े सब अम्बर लै हरि बांधि दये तब डारिन डारी।
सँवार की आई हैं होति अँबार सुनीते लला तुमहीं हम हारी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु लेहु बखौ सु सबै मिलि देहु दुहूँ करतारी।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा पौगण्ड लीला वर्णन घाट द्वितीयः ॥

❀ अथ तृतीय घाट ❀

❀ दोहा ❀

गोरस दान अनूप सुख, लेत बिहारी लाल।
यह लीला बरनत सुनैं, होतजु रसिक निहाल ॥१॥

राग पञ्चम ॥ पद २ ॥

रंग भरे लियें संग सखागन गोधन संग चले नट नागर।
मुरली मुहचंग बजावत गावत एक ते एक बने गुन आगर।
हरैं हैं हरैं बहु हासि करैं गिरि राज तरे पहुँचे गिरिधारी।
शारिद बारिद सी बन में सब फैलि गईं गैय्यां न्यारी ये न्यारी।
लाय वहां गिरि कन्दर में फल पत्र प्रसूननि माल बनाई।
(श्री) वृन्दावन प्रभु को तबहीं अब दान लीला करिबे सुधि आई।

राग वृन्दावनी काफी ॥ पद ३ ॥

निकसी दधि बेंचन गोप बधू इत घाट में दानी ह्वै बैठे कन्हाई।
बांधिके चवौंतर मंडप छाय बनाय जगाति की ठौर बनाई।
कारकुन पयादे ह्वै बैठे सखा सुमहीं करिबे को बही उ कराई।
कान खसोंलिकें लेखनी औ मसिहू घसिकें भरि दौति धराई।
इतनैं जितहीं जितते तरुनीनि सुहूजनि हूजनि दीनी दिखाई।
(श्री) वृन्दावन प्रभु सैन दई मधुमंगल दीनी ब्रजेश दुहाई।

सखा वचन पद ४

सुनौं को होरी को तुम जानि चली हो।
दान दै काहु न गोरस को सु जुरी जु मिली दश बीश अली हो।
काकी सुता अरु काकी बधू तुम दीसति हो सबभांति भली हो।
(श्री) वृन्दावनप्रभु बोलत हैं तुम्हैं मारगते कहो काहे टली हो।

गोपी वचन पद ५

काहे तुम को हो कम बाती कहते भये अगाती।
ऐसे कहा डराये डरिये है हम पैं तिहारी कछु थाती।
अपनैं अपनैं घर ठाकुर हैं सब आंखि करत कापैं तुम राती।
महा नृशंस कंस राज में मति कोऊ बात करौ चर जाती।
करि राखे नन्दराय लाड़िले कबहुं न देखी शीरी ताती।
निर्जन वन रोकत पर नारिन धन्य तिहारी छाती।
गोरस मिस चाहत हो गोरस ऐसे चढ़े तुम माती।
(श्री)वृन्दावन प्रभु अति न भली कछु रीति करो सबलोग सुहाती।

सखा वचन पद ६

आजु दान दियें बिन जान न पैहो।
कै तुम्हैं जान जु दैहैं तबै हमारी मन भावति ओल जो दैहो।
जानत हैं हम हूँ अब उवाब सुनाई कहूँ जो पुकार हू कैहो॥
वृन्दावनप्रभु आज कहाँ हूँ गई कालिहहुतो इहि मारग ऐहो।

गोपी वचन पद ७

कहो गोरस को कहुं दान भयो जु।
कीनो नई जो सपूत काहू तब अपनी हो हद मैं सु लयो जु।
अपनैं अपनैं घर ठाकुर हैं सब दायजैं काहू कैं कौन दयो जु।
मान्यौं तो देव न भीति को लेव कहाभयो जान बड़ो जो नयोजु।
सूझत नांहि न लाल तुम्हैं सुध जानिये आंखिन गूद छयो जु।
वृन्दावनप्रभु बोलत हो बढ़ि चाहत हो कछु भाग लयो जु।

सखी वचन पद ८

कही जु कहो यौंही आई हो दैन टका कहुं पै नहीं लेत दही को।
गोधन को धन और कहा यह जीवन है जग मैं सब ही को।
या बिन रूखो ही दीसै सबै यह सर्बसु है सब गोपन ही को।
जानति बूझति मानति हो बुरो (श्री) वृन्दावन प्रभु बात कही को।

गोपी वचन पद ९

इहि ठां कब दान लयो जु तिहारैं।
यह तो हद है वृषभानु जु को डरि हैं हम नांहि न देहै निहारैं।
डांडे मैंड की बात है लालन जु निबहैं सोई कीजिये सोचि बिचारैं।
राजा भये तुम गोपनि के अब ऐसी करो सब कोऊ ज्यौं ठारैं।
सुपूत भये तुम नन्द जू कैं भलैं यौं कहा काहु को देहो निकारैं।
वृन्दावन प्रभु आज कहाँ हू हम कीनी गई रहियो जु सकारैं।

सखा वचन पद १०

वृषभानु जु दान मुकातैं वृथो हमें होत कहा कहू और के रूठें।
दानी नहीं यह है कब हूँ कहि हैं सब बात बताऊई झूँठें।
लैहैंजु ठौंकि बजाय कैं दान गुमान तुफान करौ तुम झूँठें।
वृन्दावन प्रभु हैजु गई तुम हीं बरसानैं बसी हो अनूठें।

गोपी वचन पद ११

कौन कैं नाहिन ह्वै है भयो धन लालन जू इतनो अब थोरी।
इहि मारग ऐहैं नहि कबहूँ इतनोंई तो है तिहारी अब जोरी।
ऐसी कहूँ हमारैं बतहू समझौ मन में मति ही रस तोरी।
वृन्दावन प्रभु मारो न गाल सु देखैं बिलारि के नीचैं ही कोरी।

सखा वचन पद १२

समझौ कहा आखिर होई गंवारि करो बहुतैं हम कानि तिहारी।
ज्यौं ज्यौं गही नरमी हम त्यौं ही त्यौं मूड चढी बढि बोलति भारी।
चौंहनी तो कर आहु न बोलत आई बड़े घर की जु सकारी।
वृन्दावन प्रभु गोपनि राव हैं नन्द जु को घर छानों कहारी।

गोपी वचन पद १३

तुम तो जदुवंशिन राव हुते तब आय गँवारनि मांझ पले हो।
पूंछ बड़ो सु बड़ाइ है आप की लाभ तुम्हैं जु प्रवीन भले हो।
हमें तो सब जानैं गंवारि हैं ये अब तो तुमहूँ हम मांझ रले हो।
वृन्दावन प्रभु कैसे रही तुम रोके गंवारनि चाल चले हो।

सखा वचन पद १४

बहुतै कछु गाल बजावति बाल निहाल मनौं करि डारैंगी काहू।
तो हुतै चोंकी जो आई यहां सुनि सांकी हमौं सबभांति कैं चाहू।
बातनि हीं बहरावति हैं ठहराबात नाहि नैं देति जु नाहू।
वृन्दावन प्रभु सूधेई बोलत हैं किन आपनैं मारग जाहू।

गोपी वचन पद १५

लाला भुलाये से डोलत काहू के सोचि विचारि सम्हारिकैं बोलो।
वे कोऊ और ही जानों बधू जिन सों हँसि बोलि कैं आंखिन घोलो।
उन को सम्मान करो तुम्हैं दान ये देहैं सही उनसौं मन खोलो।
वृन्दावन प्रभु वैसा नहीं हम घेरो फिरैं इतनौं कहा ओलौं।

सखा वचन पद १६

अजू तुम तो ऐसे घिरियोगी सु और कोऊ जिहि भांति न घेरी।
मारन काज जगाति इतै वन ग्वाई तुम्हैं बहुतैं चकफेरी।
हम जो इत बातनि लागि रहे सु सखा जु भली मधुमंगल घेरी।
वृन्दावन प्रभु दान लियें बिन जानन दैहैं करो बहु तेरी।

गोपी वचन पद १७

अजु लेहु दह्यो जु कह्यो सु मह्यो न रह्यो इहि मारग औरौ दैवो।
तांति ही बाजे तें रागु लह्यो जु गह्यो तुम दाव कहैं ऊ रिसैवो।
जो रस ढूंढत डोलत हो इन बातनि सो रस नाहि न पैवो।
वृन्दावन प्रभु आहु चले घर बातनि को कहा और ही लैबो।

सखा वचन पद १८

अजू वह्यो ऊ दियें निरो छुटि हो नांही।
स्याम तो दाम चुकाय के लैहैं दह्यो हमरो समझो मन मांही।
सुधि में आय कैं काहु अवैं ऐसी बातनि तो हम नाहिं सकाहीं।
वृन्दावन प्रभु सुधि भयैं कहि हौं तिहारी करि हैं मन चाही।

गोपी वचन पद १९

अजू और जु हु हैं सु ह्वै है रहैगो लई इंडुरी तिहारे काहू संगी।
हांसी में हु जैहैं खांसी कछु नहीं वेगि मंगाय के देहु त्रिभंगी।
तिहारो कछु ठाठ कुठाठ सो है मन लूटन को पकरी तुम ढंगी।
वृन्दावन प्रभु पोढ़ो विचारत नांहि भये हो नये बहुरंगी।

गोपी वचन ॥ पद २० ॥

लाल मेरी ईंडुरिया दै रे। पाट फुंद की जानों भलि तुम रतन जटित बहु है रे।
कोर कोर लागे हैं जाकें मोती अमोलक पै रे। मर्कत मणि चोटी गज मोतिन झूमक है है है रे।
सखा संग ये हु रहे मोटे पर गोरस खै खै रे। कैसें पचैगी हमें यह तनकी यह न धरो हिय मैं रे।
लैलै दान हिले हो बनमें खबरि परैगी अबै रे। वृन्दावन प्रभु छुटि हो नाहीं सरबसु ही दै कै रे।

श्रीकृष्ण वचन पद २१

बनी कठिन कैसें धीर धरे रे। तुम्हरी भैय्या इनकी इन्डुरी किन चोरी परी बगरें रे।
आपनें ही मुंह कहत अमोलिक पावैं जो याहू तो झूठी करें रे।
यह सुनि सुनि मधुमंगल ले आयो कहा करें कीरति पति सौं डरें रे।
वा घर की यह बात जितीक कहै सु तितीक परें ई वरें रे।
वृन्दावन प्रभु दै इन्डुरी कह्यो सब मिलि याकें पाय परें रे।

श्रीकृष्ण वचन पद २२ वृन्दावनी काफी

बरसानैं की आनि करी तुम कानि सु रोष तजो रस मैं घर जैहो।
अबकी करिवी तुमकों न कछु धरि हैं जु लाई तुम ज्यों सुख पैहौं।
बड़े घर की तुम मोहनी मूरति चाँदनी कैं समैं आइ सवै हो।
वृन्दावन प्रभु मानि हैं लाभजु राजी हु कैं तुम हो कछु देहो।

गोपी वचन पद २३

अजू यौं रस मैं सब गोरस लीजै।
हमारी तिहारी कछु दोइ नहीं सु सयानि हूं प्याइयैं आप हूं पीजै।
टैट कियें रस बेट ही टूटत जात सबै किन राई न दीजै।
वृन्दावन प्रभु मीत लंगोटिया आगैं कछू चतुराइ न कीजै।

श्रीकृष्ण वचन पद २४

अजू बात चली तुम्हैं कछु दिखैये।
पाहुनी हौ हमारे तुम आजुसु बैठि यहां कछु सौं कछु खैये।
डीठ परी जबतें तुम ही तबतें हमारें तिहारो गुन गैये।
विधि ऐसी अनूप तुम्हैं जु रची लाख रूप तिहारो न नैंकु अघैये।
जो कोउ आप सौं ब्याह करे हठि भैंटु कहा जु यहां चलि जैये।
वृन्दावन प्रभु सुनियौ इक बात ही आपहू की सु हमैं सुनैये।

गोपी वचन
पद २५

अजू नैंनें नहीं यहि कुंज कैं नैरें।
तुमसों बहुतेरिय बात कही डरु लागत मोहिं अकेलैं अधेरें।
यह तो अपने मन की रुचि है चलि यों कोउ काहू कैं आवतु घेरें।
लालन जु जमुनां रहैगो कहैं खेलि हैं काल्हि कहां कहू हेरें।
कहनौं कछु होइ यहां ही कहो सुकहा समझी नहीं जात उजेरें।
वृन्दावन प्रभु दै हौं कहा कही उत्तर जो घर की कहुँ टेरें।

पद २६

गई मिलि कुंज में पुंजनि पुंजनि गुंजै अलि मकरन्द के माते।
बैठी तहां लता मंडप आय बिछाय बिछौनां दये मन भाते।
दौनंनि दौंननि आनि धरे पान मिठाई मेवा रस राते।
गोप सुता नि खवाय बनाय गये मिलि मित्रनि आपहु खाते।
फूलन बीनन काज सखीन समाज गयो सबही चाढ छाते।
वृन्दावन प्रभु श्यामाजु श्याम मिले दोउ पूरन काम कलाते।

पद २७

लाल गुपाल भये रस भीनौं।
चित चोर किशोर महा ही प्रवीनौं। लखि गोरसु है कहा परवश दीनौं।
जिहिं पानिप बूडि गये दृग मीनौं। वृन्दावन प्रभु टौनों सो कीनौं।

राग सारंग
पद २८

दुपहरी भई हरि भूखो दई सुत छाक तबै पठई ब्रजरानी।
मित्रनि संग विचित्र पै भोजन बैठि कै लैंन लगे जहां पानी।
चखावत चाखत परस्पर विस्मित देव सबै करयें सुन।
आपुस में कहिं निर्जर अद्भुत वृन्दावन प्रभु लीला लखी सुख।

पद २९

भोजन कै लियैं संग सखांनि लगे तब ही बहु भांति के खेलनि।
फौज बनाय है श्याम श्रीदाम लगे लरिवै फरशांनि के सेलनि।
लरतैं लरतैं न हटैं दुहुं ओर सु आइ गये पुनि ठेलनि ठेलनि।
पातन के छवनां करि डाल सुगार गुपाल सबै लगे मेलनि।
कौहू पछाड लैजांहि पै श्याम को श्याम सखा अबौं लगे ठेलनि।
देखत देव खरे नभ मैं मिलि वृन्दावन प्रभु की सब केलनि।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा दान लीला वर्णन घाट तृतीयः ॥

❀ अथ चतुर्थ घाट ❀

दोहा:—अब बरनत कैशोर की, लीला अद्भुत हैं जु। धर्मी है कैशोर वय, और सबै इहि मैं जु॥

राग कनड़ी
पद २

जय जय गोकुल राज कुमार। रसिक भक्तजन प्राण अधार।
नव खंजन नैनी दृग अंजन राधा उर मर्कत मणि हार।
व्रजरानी लोचन जुगतारक धारक त्रिभुवन-विदित अपार।
जोगी जनमन भंजन मंजन नामही भंजन पाप पहार।
विधि शिव ईश मान जब गुन करैं प्रिया पाइन परैं बारम्बार।
वृन्दावन प्रभु निगम अगम हू सुगम भयो ब्रजमैं बस प्यार।

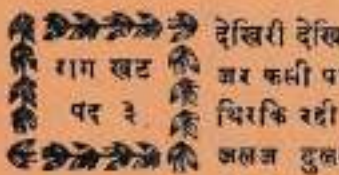

राग खट
पद ३

देखिरी देखि छबि मदन गोपाल की।
सिर कसी पाग पर लियें वरभाग कौं ललतमणि पेच सखी मिलैं दुति भाल की।
थिरकि रही चन्द्रिका चारु चावर अरी हरत मुसुकानि मन लोचन विशाल की।
अलक घुँघरी सीव मंजु मुक्तावली पुञ्ज गुञ्जन अली बास बनमाल की।
श्रवन कुण्डल कनक कटक हीरा जटित सिञ्जि धुनि नूपुरनि किंकनी जाल की।
वृन्दावन प्रभु का रूप गुन माधुरी जीव जीवनि हहै सकल ब्रज बाल की।

पद ४

इत को हेरी श्याम काम मूरति सुबल अंश बाहु दीनें।
लाल पाग पर मोर चन्द्रिका चन्दन खौरि कीनें।
मो तन लखि मुसुकात अलसात से नैन सैन भीनें।
वृन्दावन प्रभु शोभा को वारिद सींचत दृग भीनें।

राग काफी
पद ५

सखी ? देखिरी श्याम की सुन्दरताई।
तिहुँ लोक की शोभा सकेलि सबै इह मूरतिमानों विरञ्चि बनाई।
मन भावत यों अपनी मति ही करि छाँड़ि चुक्यौ रचना चतुराई।
चन्द कहा अरविन्द गयन्द हू ढूँढे कहाँ उपमा नहीं पाई।
जिहिं अंग के संग लगैं दृग रंग सौं फेरे फिरैं न रहैं ही लुभाई।
काम के तन्त्र के मन्त्र के जन्त्र सु मोहन की जग भौंह री माई।
हौं तो निहारि कै रीझिगई छकि लेत बलाय न चित्त अघाई।
वृन्दावन प्रभु देखैं रहैं पल मैं सु कहूँ ऐसो को है लुगाई।

राग मालवगौड़ ॥ पद ६ ॥

जोबन मद छकयौ छैल लाल मिस गैल इति सिधुर करैल ज्यौं आवत गुपाल री।
अलक गज गाह गन्ध अन्ध अलि फिरैं घेरैं बाहु शुंड बस्न शुकलावा बनमाल री।
घनन घनन धुनि घण्टकान होत कल नाना धातु विचित्र बिराजै खौरि भाल री।
सखा गहदार लियें फिरैं आगें जित प्यार वृन्दावन प्रभु देखैं होत हौं निहाल री।

पद ७

नन्द को किशोर भयें भोर चितचोर बनि आवत इहि ओर नित रसिक गुपाल री।
लोनें कर नवलासी फेरत विलासी श्याम नैंन मैंन गांसी लागैं घूमत दिहाल री।
पीत पाग बांधें कांधें उपरना पीत पियरे बसन धोती कोंनी श्रवन रसाल री।
सखा कंध दियें बांह देखत चलत छांह वृन्दावन प्रभु देखें परी प्रेम जाल री।

राग शुद्धकल्याण
पद ८

आजु मैं देखे री राधा रवन।
कोटि गुनी शोभा बाहू ते सुनी हती जैसी श्रवन। आजु०।
अंग अंग में बसत मोहनी बरनि सकै कवि कवन।
अब वृन्दावन प्रभु बिन छिन हूँ मोहिं सुहात न भवन।

राग काफी
पद ९

सखी आजु मैं देखे री कुञ्ज बिहारी।
बंशी धरें गरें गुञ्ज की माल करें तन चन्दन खौरि सुधारी।
कञ्ज से नैंन मुहैं छवि अैन विलोकि मोपैं भुरकी हँसि डारी।
ता दिन तें दिन रैंन न चैंन सु देन लग्यो दुख मैंन महारी।
तोसों कहूँ कहा रूप कहूँ ऐसो मैंन सी मूरति मैं न निहारी।
वृन्दावन प्रभु सौं मोहि मिलाव तू तोसों का मेरो दुराव कहा री।

राग वृन्दावनी
काफी—पद १०

मैंन की ताप तें मैंन भयो मन मोहन की मुसकान बिलोकें।
सुन्दरता चिहुट्यो नहि छूटत चंचलता तजि मेरे ऊ कोकें।
फैलि परयो सिमटै न कयौंहु सुव सावन की सरिता जिमि रोकें।
(औ) वृन्दावन प्रभु ऐसी बनी उत नन्द जिठानी वे डारत टोकें।

राग मधुपुरी
काफी—पद ११

मन लै गयो सांवरो डारि ठगौरी।
डार गईं जमुना तट कुञ्ज की गावत हो मधुरैं सुर गौरी।
पहिरैं मणि भूषण मोर किरीट धरैं नक बेसरि केसरि खौरी।
सुन्दरताई निहारत माई सु लागे नहीं पलकौउ पलौरी।
मुनिकैं मुनि ध्यान ते न्यारे भये मुनि मोहि रहे पशु पंछी दुमौरी।
ताहि कछू न सुहात लगि जिहि वृन्दावन प्रभु प्रेम की डौरी।

पद १२

उन डौरी लगी इत बौरी भई फिरौं पौरि दुलौं अरी जान न पावौं।
पानी चलौं तो जिठानी कौं आगे कै पीछे हूँ ननँद सो देखि सकावौं।
भौरी बडी लग्यो कोरि रहै पति जौरि न काहू की डीटि बचावौं।
वृन्दावन मन होत याहि तन वारिछारि करि चरणकमल लगिजावौं।

राग सारङ्ग
पद १३

लोचन दुख मोचन गिरिधारी।
कोटि इन्दु छवि छीनत आनन कानन कुण्डल दमकत भारी।
शाभासिन्धु कलोलत मानों मदन मीन के जुगल बपारी।
पाग पीत कछु छबीलि रिति सौं दै है जरकसी पेच संवारी।
लाल झगा पटुका हरियारो अंग अग भूषन बरनौं कहा री।

मुरली मधुर बजाय कैं गाय कैं मोपर प्रेम ठगौरी डारी।
वृन्दावन प्रभु चातिक देखैं को न जात मोह्यो नर नारी।

राग परज
पद १४

मुकुट लटक पर वारी हो गिरधारी।
मुरली बजाय गाय गौरी सुर डारी लगाइ सुधि हरो हमारी।
तन घनश्याम पीत पट चपला छोरि मनौं धुरवा छुटे भारी।
वृन्दावन प्रभु नैन सैन में मोपर प्रेम ठगौरी डारी।

राग देवगंधार
पद १५

चलौ किन देखें री गोविन्द।
मुरली अधर धरैं तिरभंगी मृदु मुसकत मुख चन्द।
लाल पाग की अलक भलक में कोटि मनोभव फन्द।
वृन्दावन प्रभु सों सुत जिनकैं धन्य जसोमति नन्द।

पद १६

अद्भुत छवि कछु गोपी नाथ।
अंग अंग जगमग नग भूषन लखि न रहत मन हाथ।
अधर धरैं बंशी मुख शशी कल हंसी प्यारी लियें साथ।
वृन्दावन मानस नित विहरैत मदन मनोहर मंगल गाथ।

राग परज
पद १७

देखनी देखि कहत हो मोसौं तेरो प्रीतम को है।
इत मेरो मन मोह्यो सजनी श्याम सलौनो मूरति सौ है।
अंग अंग प्रति अमित माधुरी को धीरज धारि जा है।
वृन्दावन प्रभु मुसुकि विलोकनि को न देखि तिय मोहै।

राग गौरी
पद १८

मन मोहन मुरली वैंडी वे।
सुनि धुनि सुनि मन मत जन मोहि मती हुं गई वैंडी वे।
कुटिल अलक अनियारी अखियां मत्त दुरद गति ऐंडा वे।
वृन्दावन तिरभंगी मूरति छतियां खुभि रही मैंडा वे।

राग कनड़ा
पद १९

नन्दलाला वंशी वाला वाला नी।
लाय गया कछु मैंनु चेटक मदन मनोहर काला नी।
की जाणां की कीता कामणु बिनु दिट्ठा वे हाला ना।
वृन्दावन प्रभु रूप लुभानी हुई दिवानी वस नाला नी।

राग कालिंगड़ा
पद २०

आली वनमाली मन हरयौ।
जा दिन ते देखी वह मूरति तन मन धन बिसरयौ।
लोक लाज कुल कानि सकल तजि हरि निज रूप अरयौ।
अब न फिरत फेरयौ कैसैं हूँ परबस जाय परयौ।
कल न परत नैकौ बिनु देखैं चाहि कछु मोहि करयौ।
वृन्दावन प्रभु नटगुपाल पर सरबसु वारि धरयौ।

राग गौरा
पद २१

गिरिधारी की आंखि लगी अनियारी, अबतो नहिं होत किहीं बिधि न्यारी।
दिनैं दिनैं सुकति जाति सखी री मैंन मूंठि मनौं मारी।
कौन उपाय कीजिये सजनी मन गुरुजन डर कांपत भारी।
वृन्दावन प्रभु कहूं मिलैं तो तन मन ताप मिटै सब सारी।

पद २२

घायल कीन्ही तैं कान्हर कारे श्याम ठगारे।
नैंन मैंन सर सान चढ़े मानौं भौंह कमान तकि मारे।
इहिं बान घाव की वांनहिं औषध याही ते प्रेम के पंथ हैं न्यारे।
वृन्दावन प्रभु वेगि दरश दीजे दुखित करत हा हा रे।

राग ललित
पद २३

इहिं मग आय निकसे लाल कैहूं बाल झरोखें झांकी।
होतो थकित भई आलीरी छवि निरखत दुहूं घांकी।
तिहिं छिन छैल छबीलैं लखि ऊंचे लख्यो नीचें नजर करि बांकी।
वृन्दावन प्रभु कैं मानौं तानि कैं दई काम सर पैनां की।

पद २४

मुसुकाय कैं तैं वृषभानु सुता बलि मोहन पैं कछु मोहनी डारी।
राधा ई राधा रटै न हटै छिन देखन ठाठ ठटै गिरिधारी।
मोसों अनाचन तोसों कछा सुन तू कहि उत्तर देत कहा री।
वृन्दावन प्रभु भोरी बनी अब वे घनश्याम तू गोरी महारी।

पद २५

तेरो ही ध्यान निरन्तर अन्तर, मंत्र ज्यौं जपै नाम हो तेरो।
आखिन मांकी कहूं झिझकी झुकि ताछिन आंखिन कीनों बसेरो।
अबतो निरबाहु किये ही बनैं अलि तोहिं लखे बिनु दाहु घनेरो।
वृन्दावन प्रभु है गरजी अरजी दई आकर द्वारे न बेरो।

पद २६

प्रीति नई उर मांझ जगी पिय नैंनिन तेरिय चाह लगी है।
देखैं बिना पलकौं न लगी पल देखैं तें लागि रहैई टगी है।
तेरो हि ध्यान रहे निशिवासर और सबै चित चाह भगी है।
वृन्दावन प्रभु कैं मन मानिनि तेरिये मूरति आय खगी है।

पद २७

बुलायो हू काहू का क्यौंहू न बोलत लाल तो देखन लालच डोलें।
कबहूंक झरोखनि मोखनि ह्वै कबहूं तो अटा चढ़ि नैंननि तोलें।
घाट रु बाट फिरैं बन बीथिनि केतकि बास लैं भौंर ज्यौं तोलैं।
वृन्दावन प्रभु को गत गाविनि ? चेरो कियो बलि तैं बिनु मोलैं।

राग पुरिया
धनाश्री–पद २८

नव मूरति नैंननि मांझ रही बसि।
सांचे ढरी सो भरी गुन रूप सौं चित्र लिखी सी सुमानौं रही लसि।
देति ही लाख करोरनि मोल सु नैंकु बिलोकति हो जबही हँसि।
वृन्दावन प्रभु को मन भामिनि बाँध्यो है आंगी के बांधिबे में कसि।

राग नाइकी
पद २९

री तैं मोहि लियो मोहन लाल, रूप सलौनी बाल।
अब तो बिन तलफत सफरी लौं परयो प्रेम के जाल।
लगे मदन के बान करेरे फिरत भयो बेहाल।
वृन्दावन प्रभु तोहि मिलै जो करि गावै वर माल।

राग अड़ानौं
पद ३०

तैं बसि कीन्हौं री बाल लाल गोपाल रँगीलौ।
जिहि मोही सगरी ब्रजवनिता बन्यौं बानिक छैल छबीलौ।
तुही तुही रटत रहत रैंन दिन तन घनश्याम बसन ओढ़ै पीलौ।
वृन्दावन प्रभु तेरे ही दरश कौं तरसत फिरत हठीलौ।

पद ३१

गौरी गूजरी तैं मोह्यो गोकुल चन्द री।
चम्पक चन्दन कुन्द हुते सुच लागति तो दुति ऊजरी।
सेवत कंज कुरंग दोउ वन देखत नैन बिसाल री।
लेत खेद सिर सिंधुर निशिदिन निरखत तेरी चाल री।
तुव नाद सुनत पिक पीन सुहावन मंजु घोषा रही लजाई री।
बैंनी निरखै अहि कुण्डलि मिस राखत देह दुराई री।
कंठ पोति मोतिन सर शोभा उपमा कहा बखानौं री।
कंचुकी लखि कैं कनक लता सौं मनौं भुजंग लपटानौं री।
बिंब गुलाब लाल लाली कहाँ आनौं अधर ललाई री।
मनौं राका उडु पति मैं सोहति सन्ध्या की अरुणाई री।
मुक्ता हार हियें ही धुकधुकी शोभा बढ़ी अपार री।
मनौं कनक गिरि द्वैविध राजत चन्द लियें परिवार री।
नासा बेसरि राजही अरु केशरि आड ललाट री।
मानौं प्रकट निहारियें पीव मनोरथ बाट री।
अलक लसैं लट कारी कारी न्यारी यौं छबि देत री।
अरि अरि रहे मनौं शशि ऊपर अहि शिशु अमृत हेत री।
लागत श्रवन तरयौनैं लोनैं मृगमद बैंदी भाल री।
मनौं अरविन्द मकरन्द कौं लेत मधुव्रत बाल री।
भौंह सौंहनो नैना ढिंग छबि कछु बरनी न जाई री।
मृग निकन्द नीलमणि जूवा मनहुँ परयो बहुराई री।
पीन उरोज नितम्ब बिम्ब भर लचकति कटि अति छीन री।
टूटि जाय मति निरखि सखी जन डरपति रहति प्रवीन री।
नाभि कमल रोमावलि मानौं अलि सुत निकसे सैल री।
किधौं नीलमनि करस बंधी इह कुच कञ्चन गिरि गैल री।

हेम नग सु चूरी श्यामल कर कञ्चन बनैं जगाई री।
पायल नूपुर ऊपर जु जे हरि मनमकत पाई री।
अनवट बनैं अनौठि बिछिया अंगुरिन पर छबि पावे री।
रचे कमलदल मञ्जुल मनौं बिसकर्मा रमा सुहाये री।
तन जोवन यौं जगमगै ज्यौं खुल्यो रतन अमोल री।
रूप सुधानौं सो परे ज्यौं मुख रच्यौ तम्बोल री।
अंगिया पीत मीत मन बांध्यो नीवी बंधन जाल री।
सची घृताची मेनका और तिलोत्तम नारि री।
रति रम्भा उरवसी सुकेशी तोपर डारी वारि री।
मृदु मुसुकिनि हारी जा दिन ते तू भयो बावरो श्याम री।
पढि टौना मनौं ताही दिन हठि मुर की डारी काम री।
तुही तुही बरराइ सुपन मैं उठत लाल अलबेलो री।
चाल देहि दिखाई वृन्दावन प्रभु कौं उठत लाल अलबेलो री।

राग नाइकी
पद ३२

ऐसी बात तैं गोपालहि टौना कीनौं। निशिदिन रहत तेरे रस भीनौं।
तेरोई ध्यान सुपन जागत मैं लाल न आन आधीनौं।
सुनत अघात न तेरी बातन करत मिलन की घात प्रवीनौं।
वृन्दावन प्रभु तुव दरशन बिन भयो बिना जल मीनौं।

राग आसावरी
पद ३३

ऐसी ग्वालि टाइल कीनैं क्यौं गुपाल ऐसे घायल।
चित बित हरि लीनौं मनमोहन कौं घूमत बान लागैं जैसे साइल।
भूली सुधि देहगेह खान अरु पान हू की निशिदिन तुही तुही रटत मन भाइल।
वृन्दावन प्रभु रस बस करि लीनैं अब कैसें बनैं भये मन खाइल।

राग भूपाली
पद ३४

एरी बाल तेरे बिरह बेहाल लाल छिन लेहु सम्हाल।
निशिदिन नाम रटत तेरो ही और पूछैं बोलैं आलबाल।
कौन मन्त्र पढि डारयो तैं सु व तोही देखे होत निहाल।
वृन्दावन प्रभु की देखि दशा अब मोहि परयौ जञ्जाल।

राग कनड़ी
पद ३५

प्रेम की रूप सु इहै कहावै।
पीतम के सुख सुख अपनौं दुख वा हित होत न नैंक लखावै।
गुरुजन बरजन तरजन ज्यौं ज्यौं त्यौं त्यौं रति नित नित अधिकावै।
दुरजन घर घर करत बिनिन्दन चन्दन सम शीतल सोउ भावै।
पलक ओट हू कोटि बरस सम छिनक ओट सुख कोटि जनावै।
वृन्दावन प्रभु नेही की गति देही त्यागि धरे सोइ पावै।

राग श्री टंक
पद ३६

तुव नैंन कजरा रे पर वारे खञ्जन मृग वारे।
अनियारे रतनारे डरारे मतवारे ऐसे मैं न निहारे।
अति चञ्चल तारे बांकवारे भारे तेमें पौंछ सँवारे।
वृन्दावन प्रभु कान्हर कारे प्यारे न्याय अपन पौ हारे।

राग टोडी
पद ३७

डस्यौ दृग नागिनि कारी तिहारी।
रोम रोम गयो व्यापि प्रेम विष घूमत लहरनि लेत विहारी।
करि करि कोटि उपाय पचिहारे क्यौं हू जात न बिथा सहारी।
चलि वृन्दावन प्रभु उपाय करि चंक त्रिलोक नि मंत्र महारी।

राग सारंग ॥ पद ३८ ॥

एक समैं नन्दलाल बाल के मिलन काज भांवरी सी देत हुती वाहीके सदन की।
लाग्यो नयो नेह देह गेहऊ बिसारयौ उन दिन दिन बढन लगी व्यथाई मदन की।
गृह ते सु चली चली बीनन मिस भली भांति गली मांझ मिल अली साथ लियें तन की।
वृन्दावन प्रभु अंक भरी धन रंक जैसे कछुक सशंक साध पूरी सब मन की।

राग काफी
पद ३९

अहो पांय परूं मोहि जान दै प्यारे।
घर की नारि हूं न सखी परि हैं करि हैं जु परौसी चवाव हहारे।
आंखि निगोडी लगी न रखो परै छीन वियोग भई हौं तिहारे।
वृन्दावन प्रभु जाहि न हो डर सो पर पीर हि जानैं कहारे।

राग ललित
पद ४०

तो मुख चन्द किधौं अरविन्द ये मो दृग धोखैं परे ही रहैं री।
देखन को अति आतुर हैं सु इन्हैं ऊ चकोर कै भौंर कहैं री।
ये सब प्रेम मनौं इन हीं बस मोहू लियें फिरैं गैल गहैं री।
वृन्दावन प्रभु रोके रहैं नहीं धाय परैं जब तोहि लहैं री।

राग बिहागरो
पद ४१

तुम्हैं देखें तैं जानौं हौं देख्यौ करौं पर से जानौं परस्यौई करौं।
जु महारस ऐंन वे बैंन सुनैं तैं सुन्यौं करौं चित्त न और धरौं।
मोद विठास सुवास लियें तैं लियेई करौं रोम रोम ठरौं।
वृन्दावन प्रभु अधरामृत पान किये ते जानौं इहां ते न टरौं।

राग गौडमारंग
✓पद ४२

तव मुख देखि देखि हौं जीवत।
दूर ही भयें चकोर चन्द लौं रूप सुधारस पीवत।
ए दृग लगे पगे तोही सौं, आन सुपन नहिं छूवत।
वृन्दावन रानी भयो तोपर टूक टूक मन तो गुन सीवत।

राग केदारो
पद ४३

प्यारी तेरो बदन सुधाधर नीको॥
इह निशिधीस प्रकाशक दूनौं वह दिन लागत फीको॥
मित्र अस्त भयें होत उदय वह इह उदय चहत मितहींको॥
वह दोषा कर कहियतु जग मैं इह आकर गुन ही को॥

यह नित घटत बढ़त छिन छिन में इह नितप्रति परवी को॥
वृन्दावन इह नाहि बिछोहक कुच चकवा चकई को॥

राग मालश्री, कामोद कल्यान ॥ पद ४४ ॥

तेरी तिरछी चितौनी किधौं बरछी है मैन की ॥
है ई जाति बारपार हति न सम्हार नैंकु भये हैं सुमार चलावनि सैंन की।
कसकत हिये नित निकसत क्यौं हू नाहिं कराहत कराहत थकी गति बैंन की॥
वृन्दावन प्रभु प्यारी देखी गति न्यारी इह वही विधि लागति पुनि औषध वैन की ॥

राग कान्हरो ॥ पद ४५ ॥

काम के सुभट बाम तेरे दोऊ ईछन ॥
काजर कर वाल भृकुटी कमान वान कुटिल कटाच्छ तीछन ॥
सुरप कटारी नौंक पलक छुरा सैं ढाल प्रति भट लाल पर चढ़िआये बिचछन ॥
हाव भाव दाव घाव करि जीति वृन्दावन प्रभु प्रेम फांसि बाँधि बसि किये तिहीं छिन ॥

राग हमीर
पद ४६

प्यारी तेरे दृग जुग खंजन नन्दन ।
अति चञ्चल मुख मञ्जु कञ्ज पर नाचत हैं दुख कन्दन ।
भृकुटी काम नरिंद फन्द मनौं रच्यो इन ही हित फन्दन ।
वृन्दावन प्रभु दृग खञ्जन हू विधये इन करि छन्दन ।

राग ईमन
पद ४७

करत कलोल तेरे लोइन लोल, नील निचोल की ओट भये ।
ताकत पिय मन मृग की घातनि सिखवत काम करोल ।
बाजत छुद्र घंटिका कटि तट बोलत मधुरे बोल ।
वृन्दावन प्रभु प्रेम रमनां रच्यो विधि अधिक अमोल ।

राग पूरबी कान्हरो
पद ४८

प्यारी तेरे अंग अंग बानिक लखि मानिक छवि दबि जात ।
सुधा सो सींचति पिय नैंन मान कौं जब दुरि मुरि मुसुकात ।
वचन रचन मन नैंन प्रान में बसी रहति दिनि राति ।
वृन्दावन प्रभु तो बिन जोगति होति सु कहति सकाति ।

राग धनाश्री
पद ४९

बसो तुव मूरति नैंननि मेरैं ।
कैसैं चैन परैं प्यारी अब भली भांति बिनु हेरैं ।
तनक फिर फिरी खरकति सोतो नखसिख भूषन तेरैं ।
वृन्दावन प्रभु नेह अजन ते खरकति और घनेरैं ।

राग बिहागरो
पद ५०

ह्वै गयो मो मन तेरीय मूरति ।
जो जो नजरि परैं जग मेरैं सो सो दीखति तेरीय सूरति ।
जबलगि तोहि निहारौं नीकैं तब लगि और सबै सुधि भूलति ।
कहि वृन्दावन प्रभु मिलैं(वा)बिछुरैं दुहुँ विधि मोमति में तुही झूलति ।

राग बिहागरो
पद ५१

जब जब लाल निहारौं तोहि ।
तुम ही वे हैं हौं इह इह कछु नाँहि रहत सुधि मोहि ।
तन मन श्रवन रसन इन्द्रिन गति रहति जु दृगनि समोइ ।
वृन्दावन प्रभु प्रेम तरंगनि कहूँ जो कहन की होइ ।

पद ५२

महा कठिन इह लगनि निगोड़ी ।
मत कोई नेह फन्द में परियो करि नेहिन की होडा होडी ।
चैन नैंन देखे ही उपजत पलक ओट दुख पोटनि कोडी ।
वृन्दावन प्रभु जातन छोडी अब पहलैं जोडत जो जोडी ।

राग परज
पद ५३

मोहन मूरति सांवरे मोपैं डारी कछु ठगोरी रे ।
गृह वन मन लागत नहीं मेरी बिन देखे आवत ताव रे ।
अटकी अब इह कान्ह कुंवर सौं यौं कहैं गोकुल गांव रे ।
वृन्दावन प्रभु प्रीति कैं पाछैं भई घर घर बदनांव रे ।

राग नट नाइकी
कनड़ो—पद ५४

बनी कठिन दुहुँ विधि कहा कीजै ।
इन गुरुजन डर घर घर करै छाती उत मोहन बिन छिनक न जीजै ।
लोक लाज घूंघट कियो चहिये दृग जानैं रूप निसक ह्वै पीजै ।
वृन्दावन प्रभु देखैं मनोरथ होत इहै हिय लाख कैं लीजै ।

पद ५५

प्रीतम प्रान पियारे हौं तोपर वारि डारी, (वारि वारि डारी) ।
मोहन मूरति सूरति तारी अबसैं नैंन निहारी ।
बसि कर लीनी देखत ही इन अँखियां कामन गारी ।
वृन्दावन प्रभु हियते न्यारे हो जिन करज हमारी ।

पद ५६

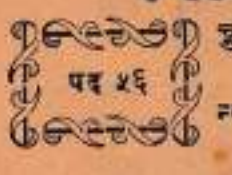

चुभी चित नैंननि नौंक तिहारी, तुम सांचे बंक बिहारी ।
अब क्योंहु निकसत नाहिन इह हौं कैसी पांचहारी ।
न्याय फिरत घायल ज्यों बन बन बिकल भईं ब्रजनारी ।
वृन्दावन प्रभु गृह काजहू ते क्यों करि न्यारी बिचारी ।

राग नाइकी नट
पद ५७

तुम बिन दृगन सुहात न और ।
नींद रैन दिन कहा रहत ही चाहू को नहीं ठौर ।
अब कैसें फीको लग भावत चाखे रूप सलौनैं कौर ।
वृन्दावन प्रभु सुरझत नाहीं परे प्रेम के झौर ।

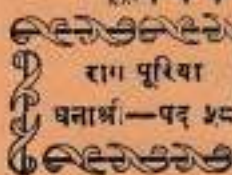

राग पूरिया
धनाश्री—पद ५८

यहां लौं मुराइ दृग राखे ।
अबतो द्रोण सुत लौं मोहन के रूप सांचे पय चाखे ।
और रूप चांवर के जल सों फीके सकल करि नांखे ।
वृन्दावन प्रभु सौं रांच मानी मानैंन गुरुजन कहि भये खाखे ।

राग रामकली
परज—पद ५९

माई ! मिलि जिन बिछुरी कोइ।
जनम मरन हिय परन गरन ते इह दुख दारुण होइ।
प्राण जांत कीं कष्ट रहत लगि ज्यौं अंकुर मुख तोइ।
वृन्दावन प्रभु बिरह न जानैं जामैं बीते सोइ।

पद ६०

हाय मैंनु छांडि गया महबूब।
भौंह कमान दृग बाण अमा घायल करि गया खूब।
घूंघर वाली जुलफैं मैंनूं मैंडा बांधि कुलफ कीती काम।
वृन्दावन प्रभु प्रेम दी डोरी लाय गया बे काम।

पद ६१

कोई मैंनूं कान्ह बतावो नी सैयें ? घायल करि गया नी बन विचु।
उस सूरति नूं बन बन ढूंण्डा चित चोर मैंडा दयें नी दयें।
विरह दिवानी हुई उस कारन किस मिस घर विच अयें।
वृन्दावन प्रभु बिन कछु नहीं भांवद। विरह आंच तन तये की कवे।

राग नट नाइकी
पद ६२

आली मेरो लैगयो हरि कैं प्रान, सुन्दर श्याम सुजान।
गृह बन वीथी ढूंण्डत डोलौं मारि गयो दृग बान।
घाइल भई सु मार दई हौं बनत उपाय न आन।
वृन्दावन प्रभु कौं बिनु देखैं भांवत खान न पान।

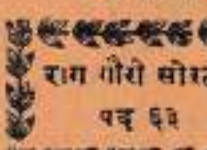

राग गौरी सोरठा
पद ६३

हेली वह चित लैगयो चोरि।
तैं इक दिन जो छैल गैल में मोहि दिखायो निहोरि। हेली।
एक दिनां पुनि मोहि अचानक मिल्यौ सांकरी खोरि।
मन्द मुसकि मो चिबुक पकरि मुख कियो आप तन मोरि। हेली।
हौं सकुचनि नीचो चाहौं रह्यो नैंन नैंन सो जोरि।
पुनि तौ देखत रूप माधुरी बंधी प्रेम की डोरि। हेली।
कहा कहौं वा मुख की शोभा वारौं सुधानिधि कोरि।
लाल पाग पर मोर चन्द्रिका वंक अलक दई छोरि। हेली।
नैंन कोक नद मोद भरे मो अंखियां लीनी भोरि।
रही न रोकी रूप पियासी चली साथ ही दौरि। हेली।
अब न लगै जिय कित हू मेरी मारत मैंन मरोरि।
आनत बूझत मेरी माई लोनीं दुःख बटोरि। हेली।
तन तौ परयौ सोच सागर मैं उठत अनेक हिलोरि।
महा कठिन है लगनि प्रेम की सरबस लेत ढंढोरि। हेली।
मैं कुल कानि बहुत डर ओनौं मन मिल्यो मैंड को तोरि।
वृन्दावन प्रभु रसिक शिरोमणि लई आप रस चोरि। हेली।

राग बिहागरो
पद ६४

हेली हरि हरि लै गयो प्रान, मेरो चित न धरत कहूँ चैन।
विकल भई ढूंढत द्रुम बेली कोऊ बतावै कान्ह।
एक दिनां इहि डगर नगर में कहूँ तैं कीनौं आवन।
ता दिन तैं कोमल मटुकी मैं दै गयो नेह जु जावन। हे०।
सिर चीरा हीरा हिय दमकत अरु बीरा भरें गाल।
मंद मंद ब्रजचन्द आवही मद गयन्द की चाल। हे०।
रतन पेंच पर सुन्दरी तुर्रा तापर शिखी शिखण्ड।
घन पर मनौं दामिनी दामिनि पर सुरपति चाप अखंड। हे०।
नांक लसत मोतीक विगोती तिहि छोती कछु बरनि न जाई।
मनहुँ चन्द अरविन्द कली कैं रह्यो मकरन्द लुभाई। हे०।
अमल कमल दल नैंन मैंन सर भौंह भंवर तति चाप।
जब ते वै लागे अनुरागे हिय मो हुँ गयो कांप। हे०।
झलमलात सखि ? लाल झगा मैं नील मनों सम अंग।
मनहुँ सरसुती धार धार धसि राजत जमुन तरंग। हे०।
हार बिराजत उर गज मोतिन अरु मनिकुण्डल श्रौन।
कटि पै पटु चटकीलौ सोहत मोहत लखि नहिं कौन। हे०।
रतन जटित पहुँची मोतिन लर लपटि रही दुहुँ पांनि।
मनौं इन्दीवर तर लपटानौं विमल नखत गृह आनि। हे०।
हाथ लियें बहुरँग नवलाखी मृदु हांसी फांसी मनु प्रेम।
देखत ही वह मदन मोहन हाये छूटि जात सब नेम। हे०।
वैजन्ती माला बनमाला पहिरें सकल सुख दैंन।
वृन्दावन प्रभु इहि बानिक सौं बसि रह्यो मेरे नैंन। हे०।

राग गौरी ॥ पद ६५ ॥

हेली मन तौ परबस ह्वै गयो कहूँ लगै न तनकौ। नैंननि कौं चसकरौ परयो कल परै न छिन कौ।
जिय तौ लोह भयो फिरै मन चुम्बक संगी। डारि दई मुरली कछू पांट ललित त्रिभंगी।
बनि ठान सुन्दर सांवरो मोहि देत दिखाई। लाज काज घर कौ सबै तनकौ न सुहाई।
मोहिं देखि मृदुमुसुकि कैं कर कमल फिरावै। सुरचंद अति ही लगनि के मधुरे सुर गावै।
तब तन सुधि न रहै कछू विह्वल ह्वै जाई। कहा करौं कासौं कहूँ विधि कठिन बनाई।
मोहि करि राखैं द्वैज कौ तन चन्द जु नारी। अंगुरि पसारि पसारि कहैं इह कान्हर प्यारी।
यौं ब्रज मैं कन कन भई झूंठी ई बातनि। लोग चबाई नगर कौं करि पातनि पातनि।
मैं कुल कांनि निगोडी आगैं कबहुं न देख्यौ निहारि। मिलन होय किहि विधि कही संग दुरजन धारि।
तोहि पूछौं हौं कहा करौं बनि ऐसी आई। वृन्दावन प्रभु सौं एकबेर तू मोहि मिलाई।

राग गौडबि-लावल–पद ६६

मो दृग लगे नन्दलाल सों, ननदी हौं अटकी नैंन विशाल सौं, ननदी।
इन्द्र नील इन्दीवर घन छवि छीनत श्याम शरीर री।
भौंह चाप सर कुंकुम टीकौ नासा राजत कीर री ॥न०॥
अधर बिंब मृदु हास चन्द्रिका दशन सिखरि मनि पांति री।
चारु चिबुक अम्ब फल वारौं ग्रीव कम्बु मणि कान्ति री ॥न०॥
बदन शरद शशि अद्भुत देख्यौ लियें इतौ परिवार री।
ऊग्यौ रहत पौन निशि ब्रज में बरसि अमी रस धार री ॥न०॥
उर मर्कत मणि लसत कपाटो बाहु मदन करि शुण्डरी।
रोमाली व्याली रच्छक मनौं नाभि अमृत की कुण्डरी ॥न०॥
कटि अति छीन मृगेश हु कीर्ते जंघ सुरत रम्भ थंभ री।
पिंडुरी मन्मथ तूण चरणयुग अमल कमल सौरभ री ॥न०॥
नखर रुखर दश पद्म राग से पदतल ईंगुर रंग री।
देखत ही यह मोहन मूरति होत सकल दुख भंग री ॥न०॥
पीत पाग रही वाम भाग झुकि तापर शिखी शिखण्ड री।
मानहुँ मेरु शृङ्ग पर ऊग्यौ मघवा धनुक् अखण्ड री ॥न०॥
रतन पेच मणि कुण्डल राजत छाजत उपम अनूप री।
मनु उडुगण सेवत मुख चन्द हि जानि आपनो भूप री ॥न०॥
बेसरि प्रिया प्रेम वशि पहिरैं अटकत अलत सुढार री।
बदन कञ्ज मकरन्द हि मानौं लेत शुक सुकुमार री ॥न०॥
आसावरी लाल को वागो बन्यौं रह्यौ लगि अंग री।
तन दुति वसन मिली अति अद्भुत छवि की उठत तरंग री ॥न०॥
कण्ठ लसत गज मोतिन कण्ठा लामचि झुक झुकि हार री।
मनहुँ नील गिरि चहुँ दिशि गंगा बैठ्यो दिन कर तीर री ॥न०॥
उर विशाल मनि माल रही फबि छवि कछु बरनि न जाय री।
मनु तमाल पर मदन सुनैया बैठी पांति बनाय री ॥न०॥
बाजू बन्द पहुँची मुंदरी कर–कमल रही छवि छाजि री।
मनु तमाल शाखा पल्लव जुत फबि रही अधिक विराजि री ॥न०॥
पटुका बांधैं छुरयौ पैंच दी उपमा कहत सकात री।
मनहुँ कल्प तरुवर गचिलपटी माधुरी लता सुजात री ॥न०॥
कटि किंकिनि ठन ठनन करत रव लागत श्रवन रसाल री।
करत कलोल तमाल छांय तर मनु हंसन के बाल री ॥न०॥
झनन झनन नूपुर धुनि पाइन उपमा कहत विचित्र री।
मानहुँ मदन मत्त गज शृङ्खल बाजत चलत सुचित्र री ॥न०॥

कबहू मुरली लैजु बजावत गावत विपि सुर साधि री।
तान मूर्च्छना श्रुति सुनि सर्व को जात श्रवन मन ब्याधि री ॥न०॥
मोहन खग मृग द्रुम बेली सब नरनारिन कहा बात री।
थावर जंगम जात हैं अरु जंगम थिर ह्वै जात री ॥न०॥
श्रवन मयी सब देह होत तब और न वृत्ति रहाय री।
नाद ब्रह्म में सब जग डोरै शिव समाधि टरि जाय री ॥न०॥
मद गज गति बलबीर धीर अति लटकि चलत मुसुकाइ री।
तन मन सुधि हरि लेत देह तब नैंन गई ह्वै जाइ री ॥न०॥
सुनी किन्नरी नरी विश्व (त्रिहुँपुर) में कोई ऐसी नारि री।
रहै आपनी पन पतिव्रत लियें एक ही अंग निहारि री ॥न०॥
हौं तो अँग अँग छवि तरंग में भई भँवर की नाव री।
वृन्दावन प्रभु देखे हि जीवूं और न कछू उपाव री ॥न०॥

राग सोरठ
कालिंगड़ा
पद ६७

हेली हरि मुख नलिन हिले मधुकर दृग तनक घरत नहीं धीर।
इत उत चाहि चपल रस लोभी रहत न जात चले वाही ढिग।
परम रूप मकरन्द लुभानैं छुवत सुमन नहीं आन।
वृन्दावन दिन रैंन प्रफुल्लित भांन किरन वृषभान।

पद ६८

छली बदि छैल छबीले कन्हाई, मेरी माई।
डारि दई सुर की हंसि हेरि कै हेली री नाते न और सुहाई।
एक दिना मेरो नांव लै लै मुरली मधुरैं सुर ऐसी बजाई।
ता दिन ते मोहि भूख न प्यास सु श्यामहि श्याम लगी बकबाई।
जागैं न चैंन सोयें दिन रैंन बढ़ै तन मैंन की पीर सवाई।
बरजैं तरजैं कहैं बौरी भई इह मात पिता पति बन्धुर भाई।
मैं तो लई धरि शीश सबैं सु करों कहा ईश जु ऐसी बनाई।
कही लख बात रही नहिं जात सु वृन्दावन प्रभु प्रेम सगाई।

राग बसन्त
सारंग
पद ६९

महा कठिन इह प्रेम सगाई, याकी है माई अकथ कथाई।
छिन इक बिछुरैं कोटि दहन की दाह होत है पुनि मिलें कोटि शशि की सीराई।
निशदिन सुखनि गुरुजन डर सब भूलति पिय जब देत दिखाई।
वृन्दावन प्रभु नेही की गति दुरि धरैं शिर तिन ही कछु पाई।

राग पूर्वी
पद ७०

नेह निगोड़े को पैंडो ही न्यारो।
जो कोई होय पैं आंधी चलै सुल है प्रिय वस्तु पहुँचो उजारो।
सो तो इतै जब भूल्यो फिरै न लहै कछु जो कोउ होय अंखयारो।
वृन्दावन सोई याको पथिक है जापैं कृपा करैं कान्हर कारो।

राग बिलावल ॥ पद ७१ ॥

कठिन लगनि है नेह की बीतै सोही जानैं। मोमैं बीतति जो दशा काहि कहौं को मानैं।
सजनी छिन बिछुरैं जुग कोटि की जानों हौं दुखिया। बहुरि मिलैं पल एकही मोसी नहिं सुखिया।
दृग चाहैं देख्यौ करैं वह सुन्दर मूरति। दुरजन डर कछु ना बनैं मन मांझ बिसूरति।
तन तरसत पिय परस कों दूभर दरशन ही। साथ फिरै मनमथ बली कर साधें धुन ही।
तनि तनि मारत पंच बान घायल करि डारैं। यहि समय मदन गुपाल बिना काहि कौन उबारै।
बीथी मैं सुनि बचन भन भनक भगि जाऊं झरोखैं। सासु ननद कन सुवनि लागि रहैं आयजु मोखैं।
हैं दुरजन बिच लीह ज्यों चित हूँ जु रहै है। उत देखन अखरैं इत डरनि दहै है।
तब मूर्छित ह्वै जाऊं प्रान परैं संकट माहीं। मारैं कुबचन बान सबै गुरुजनन दया नाहीं।
यौं दिन भरियें कौन भांति सोचन जिय सूकै। वृन्दावन प्रभु श्याम बिना को सुनैं अब कूकै।

राग चैती-गौरी

पद ७२

मोहि लई यहि नन्द किशोर ॐ मो मन चुभी दृगन की कोर।
तब तैं कछु सुहात न मोकों ॐ रुचि कहौं सजनी हौं तोकों।
जब वह सुन्दर मूरति देखौं ॐ तब अपनों जीवन फल लेखौं।
पलक हूँ ओट होत जब न्यारी ॐ तब की कहियें कहा बिथारी।
गुरुजन लाज काज गृह करिये ॐ बाहिर दुरजन से अति डरिये।
मेही सम दुखिया नहीं कोऊ ॐ सुखिया ऊ न मिलैं जब दोऊ।
वृन्दावन प्रभु प्रान पियारो ॐ मिलैं तब ही मो होय उबारो।

राग कनड़ो

पद ७३

इन सोचन लोचन होत सँवारी।
को मिलवै कब कों नव भांति मिलैं मनमोहन प्रान पियारी।
असन बसन तन धन जीवन सब वा बिन लागत आकसौं खारी।
वृन्दावन प्रभु जीजैं कौन बिधि पैंड़ै परयौ बिरहा बजमारी।

पद ७४

आंखिन पांखि दई न दई किन।
प्रीतम बदन नलिन मकरन्द हि मधुप ज्यौं पी पी आवति प्रतिदिन।
क्यों हूँ चैन परै दिन रैंन सु मैंन दहै तन कों छिन ही छिन।
वृन्दावन प्रभु बिरह कसाई मोहि करी बकरी बकरी इन।

पद ७५

इन नैननि बैंचि दयो मन मेरो।
रूप अनूप लुभाइ लालची नेंकु करयौ नहीं भेरो।
बहू बत गाय पाय सुख मानयो भयौ जनम लौं चेरो।
प्रीति पुरातन जानि तनक हू मीतन कियौ न फेरो।
मोहि अकेलि जानि आंगि कैं मदन कियौ है घेरो।
वृन्दावन प्रभु बिन अब निकसन कौं कहूँ न पैहुं सेरो।

राग पूरिया
पद ७६

इन नैन निगोड़नि गौंडि लई हौं ।
मोहि बीच की किये वे भारत आप पगे मनमोहन पीसौं ।
वे सुखदुख सहैं देखैं अन देखैं रूप लालची जानि आपनी गौं ।
वृन्दावन प्रभु सौं बहसि मिलैं बिनु चैन नहीं कबहूँ मो जी कौं ।

पद ७७

देखो मन सा की कुटिलाई ।
मैं दूती करि पठई अपुही रही लुभाय नहिं आई ।
हौं देखत मग इक टक लागी, पगी लाल कछु न सुहाई ।
वृन्दावन प्रभु कहिये कौन सौं अनग की हितू भई दुखदाई ।

पद ७८

हूं गयो छिन मैं तन जु परायो ।
मोहि छोड़ि पर हाथ अनाथ कौं साथ फिरत आपु ही अब धायो ।
सदा संग ही रहत मित्र हो तनक तरस याकौं नहिं आयो ।
वृन्दावन अब कोउ न काहू को सुख पायो जब निज जिय भायो ।

राग धनाश्री
पद ७९

आली मेरे नैननि को तारो प्यारो कैसे भयो भावतु है न्यारो ।
जबलौं देखौं हौं वह मूरति नव दशहूँ दिशि होत उज्यारो ।
पलक ओट भये कछु नहिं सूझत तब सबही जग होत अन्धियारो ।
वृन्दावन प्रभु मनि बिनु अहिलों फिरत अब भयो प्रान दिवारो ।

राग रामकली ॥ पद ८० ॥

महा कठिन कहा कीजिये क्यौंहूँ रह्यौ न जाई । मन उरझै सुरझै नहीं तन तपन मिटाई ।
इह गति भई धन मीन की तलफै अकुलाई । जल दूरी नहिं परस कौं कछु बनै न उपाई ।
प्रेम तृषा ज्यौं ज्यौं बढ़ै रुचि नित अधिकाई । ज्यौं निरजुर घट मधुर कौं निशिदिन तरसाई ।
पलक कलप सम बीतई अरु कछु न सुहाई । वृन्दावन प्रभु इह व्यथा कहौं काहि सुनाई ।

पद ८१

प्रेम की मरोरनि मसोसे मन मारिये ।
दृगनिके साथ हूं बिकानी पर हाथ इह दीजे काहि दोष कहौ कौन पै पुकारिये ।
भूल्यौ धन धाम अब कहा घनश्याम आली बिना काम देह यौं वियोगि आगि जारिये ।
वृन्दावन प्रभु कहूँ नैंकहू निहारिये सु तनमनधन प्रान वारि वारि डारिये ।

पद ८२

जब जब सुधि आवति वह मूरति तब तब सुधि भूलनि सब ही की ।
सुनि सुनि श्रवन गुन देखन की लालसा लागे रहौ ही कबही की ।
नख शिख तें मोहनी देखी माहनी रूप धरें बंशी चितु जब ही की ।
वृन्दावन प्रभु अब फेरि मिलैं जो तपति मिटैगी तब ही की ।

राग जैतश्री
पद ८३

अहो पिय कैसें मिलन हौं आऊं, बिन मिलैं अति अकुलाऊं ।
घर गुरुजन बाहर दुरजन भै देखन हू नहिं पाऊं ।
दौरी फिरत तकति बौरी लौं लगी डौरि तिहारे गुन गाऊं ।
वृन्दावन प्रभु मनकी वेदनि तुम बिनु काहि सुनाऊं ।

राग काफी
मधुपुरी-पद ८४

आँखिन क्यौंहूँ रही हटकी री आली।
परीं रसकैं चसकैं अब श्याम सुरूप अनूप सुधा गटकी।
भीर हू भेदि कैं भाजि मिलैं हठि लाज की पाज सबै पटकी।
जीव की जीवनि प्रान को प्रान उजागर नागर सौं अटकी।
पल हू न परै कल देखें बिना फिरैं बावरि ज्यौं दुखिया भटकी।
वृन्दावन प्रभु वेगि दरश दीजे मो पर काम करी कटकी।

राग जोगटोडी
पद ८५

वृषभानु जू नन्द जू न्यौंते सुनैं किये श्यामा शिंगार बनाइ के सोलैं।
मन भांवन आंवन को जु उछाव सु आनंद मैं उमँगी अति डोलैं।
छिन आंगन मैं छिन छति चढै छिन जाय झरोखें किंवारि ये खोलैं।
उतहू अति आनन्द है हरि के मनौं नैंन तुला धरि प्रेम ही तौलैं।
तयो सोनों सो आंगु दिये मुख सौगुनो कोइल सी कुहू कै जब बोलैं।
वृन्दावन प्रभु ब्रजचन्द हि देखन चन्द मनौं चपला चढ़यौ डोलैं।

राग गौड-सारंग
पद ८६

आज नवल महल उज्वल पर छबि सौं चढि ठाढी मृगनैंनी।
मानहुँ शरद सघन घन ऊपर सौदामिनि दमकति सुख दैंनी।
नील बरन सारी तन गौरैं जामधि झलकति सुन्दर बैंनी।
मानहुँ दुरि रही श्याम घटा तर मेरु संधि अलि सैंनी।
देखति उझकि उझकि प्रीतम तन वेधि कटा छिन पैंनी।
वृन्दावन प्रभु कैं मनभामिनि बसी रहति दिन रैंनी।

राग सारंग
पद ८७

आठौं जाम चौंकत हैं चौंम हो गनत अजहूँ न आये मन भाये लालन।
सुधिऊ न लई दई भई कछु चूक मोतैं किधौं वे रसिक कहूँ पगेहैं अनत।
पहलैं अरुझाय मन अब सुरझावो चाहौं बुरी रोमरोम गांठि कछू न बनत।
वृन्दावन प्रभु येतो बहु नाइक हैं करत कछु और कछु और ही भरत।

राग ललित
पद ८८

न्हाय आई भई ठाडी प्यारी निहारो देखो बिहारी कछु छबि सरस न्यारी है।
हरन दुख द्वन्द सुन्दर मुखारबिन्द मंद हंसति नाव लाल तन सारी है।
छूटि रहे बार सँवार हू नैं सुकुमार मानौं मार जार पंगति पसारी है।
वृन्दावन प्रभु दृग मीन फंसे तहां आइ ऐसी होस नाइक मदन सिकारी है।

राग श्रीकंठ
पद ८९

सुकुमार सिवार से मर्कत तार से कज्जल सार से बारनि बारि मुकावलि बाला।
मार के जार सिंगार के चौंर से ऐंडी छिवैं पुनि ऐसैं बिसाला।
श्याम घटा ते मनौं निकसैं मुखचन्द दिपैं तन दामिनि माला।
वृन्दावन प्रभु ओट भयें लखि पांनि पै रीझन नँद के लाला।

राग मारवो
पद ६०

सीसफूल शीशराजै विराजै मुख लौंनो, तिहुँ पुर मैं ऐसो नहीं होनौं ।
मोतिन की झालरि मौं छत्र माथैं धरैं मानौं बैठ्यो ऋतुराज महाराज सुठौनौं ।
अलक रलक मानौं दुहुँ दिशि चौंर ढोल दृग जुग श्याम चिन्द मृग छौनौं ।
तिलक सर कुटिल भौंहैं तानैं कर धनुक चोहैं वृन्दावन होत सौंहैं डारत पछिदोनौं ।

राग गुजरी
पद ६१

आजु भलैं बानिक बनी पियारी ।
लहँगा लाल कसूँभी अँगिया रुपहरी कोर केसरी सारी ।
अंग अंग नग भूषन भूषित अरु राजत उर मोती हजारी ।
नानाफूल पल्लव जुत मानौं फरी मूल ते कनक लतारी ।
सारी किनारी बीच बदन की उपमा कहूँ निहारी ।
मानौं रस बरषा की सूचक भयो विधु मंडल सुखद महारी ।
इत उत उमँगी फिरत उछाह मे मनौं कौंधनी चपलारी ।
वृन्दावन प्रभु निरखि निरखि छवि बिबस भये गिरिधारी ।

राग मालकोष पद ६२

प्रान पियारी मुख कंज लाग्यौ रूप सरोवर ।
हरिमन मधुकर सुरति लगायें प्रभवत रहत चाहि वाही पर ।
गुरुजन भीति निश सकुच्याई रहत अति मुकुलित होत देख देखि पिय दिनकर ।
वृन्दावन जाको शोभा मकरन्द गन्ध फैलि रह्यो दशौं दिशि घर घर ।

पद ६३

देखो देखो लाल छवि लाडिली अनूप की ।
छूटि रही लटा मानों दामिनी की छटा घटा पर उन ईशु मानों घटा रूप की ।
बरसत सरस त्यौंही त्यौंहि सरसत ललित लता नवीन पञ्च सर भूप की ।
वृन्दावन प्रभु चष चालकनि देत मोद रची विधि हरन हारि विरह दुख धूप की ।

राग देवगंधार
पद ६४

देखो अचरज कनकलता पर तापर पूरन चन्द ।
नील नलिन तापर द्वै राजत तिनपर दोय मिलिन्द ।
नीचै चम्पकली इक सोहति तातर बिम्बी दोय ।
तिन मधि दमकति बीज दाडिमी तरैं अम्ब फल जोय ।
तातर द्वै लागति अति नीके अरुन जु नलिन सनाल ।
तिन मधि द्वै श्रीफल भल दीसत तिनतर वेलि सिवाल ।
ताकै मूल अलौकिक वापी बँधी कनक सोपान ।
तातर द्वै कदली द्वै तिनतर कनक केतकी कली समान ।
तिनतर द्वै पुनि कमल अधोमुख तिन दल पर दश इन्द ।
वृन्दावन प्रभु वनमाली जिहिं रस सींचत गोविन्द ।

राग नाइकी-कान्हरा पद ६५

ननद जिठानी कैं साथ ह्वै दीठि नवोढा सु सैंन कैं ऐन धसी ।
आवत देखि कन्हाई कौं माई कबौं जू खरी तहां ते हुलसी ।

लालन दौरि गही लइ अंक में सोनैं ज्यौं काम कसौटी कसी।
मानहुँ दौरि गही चपला घन यौं घनश्याम कैं हिये लसी।
रोइ रिसाइ रही चुप ह्वै अकुलाइ डरी पुनि देखि हँसी।
वृन्दावन प्रभु नैंन अमी किल किंचित सिंचित चित्त बसी।

राग दरबारी कान्हरा पद ९६

जतन जतन क्यौं हूँ ल्याई हौं आई प्यारी पाऊं जो बचन देहु तब ही चहत।
कहति हौं हाहा खाइ लेनि दै बलइ लाल छुवो जिन याहि देहु बैठी ये रहत।
रही भौंन कौंन दुरि दामिनी सी दीन ह्वै कैं लागी जलधार दुहूँ नैननि बहत।
देकैं भुज बीच कुच रही कर गहि नीवी देखिकैं दशा मोहिं बीत्यो है गहन।
आतुर न होहु मधुसूदन रसिकवर मालती लता सी लागी अब ही लइ लहत।
वृन्दावन प्रभु चतुर विचारि देखो मींडि मुरझाये रस पैहौ इहन।

राग कान्हरो पद ९७

तेरी छवि देखि छके पिय नैंना।
घूमत झुकत झिझकत मचकत लाज लाल भये दिन रैंना।
मानतन काहूकानि लगी ठगी तोहीं सों फिरतन क्यौं हूँ प्यारी सुखदैंना।
वृन्दावन प्रभु की वह शोभा निरखत थकित ह्वै रहत दोऊ रति मैंना।

पद ९८

तेरो अधर अद्भुत सुधाधर। करि करि पान लाल भये हैं अमर।
जाके दरश ही जीवत्त अमर जो आरप्यो हर।
याही तें वह दीनो सुरनि कौं मथि अपनें कर।
वृन्दावन प्रभु याही सौं रचि मानो जानि सब रस को भर।

राग श्यामकल्याण-पद ९९

आजु मिले कहुं लालन बाल सों डोलति फूली निहाल भई सी।
झरोखनि मोखनि ही बहती लगि देखन कैं बलि बौरि भई सी।
या लाज कैं ऊपर गाज परी नित लात ही काम की ताप तई सी।
वृन्दावन-प्रभु अँग संग भलैं भयो सो तेरी लागत आजु गई सी।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा कैशोर लीला वर्णन घाट चतुर्थः ॥

❀ अथ पंचम घाट ❀

॥ दोहा ॥

अब श्री युगल किशोर को, बरनत रास विलास । याही में सब रसनिको, दीसत प्रकट प्रकाश ॥१॥

राग पूरिया
पद २

कैसी रैंनि उज्यारी छाई लगत सबनि मन भाई ।
अनुपम छबि लखि रास करन कौं मन भयो कुँवर कन्हाई ॥
देखौ शरद प्रफुल्लित मल्ली बल्ली और सुहाई ।
वृन्दावन प्रभु अघटित घटना निपुन शक्ति है माई ॥

पद ३

मोहन रास रच्यो वंशीवट सुनियत तत थेई थेई थेई थेई रट ।
मुरली करषी ब्रजनी हरषी सुरखी न रही गृहते निकसी झट ।
झकझार लगी हियमार की मार सु दारुन बार संभार रही पट ।
आइ मिली सु हिली चपला सी खिली ढिग श्यामघटा नटकै घट ।
बरष्यौ चहुँ कोद सु मोद तहां पुरवासी रही छुटिकै अलकै लट ।
वृन्दावन प्रभु पीय प्रियान कै प्रेम लता सुकरी चित कै नट ।

राग पञ्चम
पद ४

हरि नाचत गोप वधू मधि मंडल कुण्डल लोल कपोलनि में ।
उघटैं गति भेद अनेक अनेक सु मोहन है मन बोलनि में ।
सुन्दरताई कहां लौं कहौं उपमा नहिं आवति तोलनि में ।
नैंनन वही रस सा भये डोलत वृन्दावन प्रभु डोलनि में ।

राग कनड़ी
पद ५

नागरी नागर मण्डल रास में लेत दोऊ गति भेद नि भारी ।
तत किट थौं किट तकि थौं थौं उघटत मोहन नाचत प्यारी ।
तक कुक नगतकि किकि धिध्धा उघटैं विहारनि नाचैं विहारी ।
धिधिकट धिकट धिद्धिधिधी बाजै मृदङ्ग हू में गति न्यारी ।
झिकि झिकि रिझिझिमि झणझण नन नन नूपुर झणकारी ।
वृन्दावन प्रभु रीझि प्रिया पिय कहत हरषि वारौं हौं वारी ।

पद ६

कैसे री दोऊ रास में नाचत नीके । देखोरी दोऊ० । लागैंरी दोऊ० ।
अप तिरप गति लेत होड़ परे चाहि चुरावत चित सबही के ।
ता थुंगा थुंगा तिथि तत थेई थेई उघटैं समूह सखी के ।
कुण्डल हलनि चलनि मोंधनि की निरख मदन रति लागत फीके ।
प्रिया बदन श्रमकन पौंछत पिय प्रिया पौंछत अंचर लै पी के ।
वृन्दावन प्रभु लाडिली लालन जीवनि रसिकन जी के ।

पद ७

नांचत मोहन मण्डल मढ़ियां ।
जमुना पुलिन नलिन वन फूले मन्द पवन वंशीवट छहियां ।
वृन्दावन प्रभु अद्भुत लीला तिहुँपुर मैं देखी नहिं कहियां ।

राग केदारो
पद ८

आजु रास रच्यौ वृन्दावन तरनि तनैया तीर ।
तैसिय शरद रैन उजियारी तैसेई विशद वसन पहिरें तन ।
नाचत हीर मण्डल पर दोऊ अँग अँग फबि रहे भूतन भूषन ।
नृत्यत मानो शशि मण्डल पैं सौदामिनि के संग सजल घन ।
ताल मृदंग बजावत गावत थेईथेई उघटि संगीत सखी जन ।
वृन्दावन प्रभु रीझि प्रिया-प्रिय भरि भरि लेत परस्पर अंकन ।

राग खट ॥ पद ९ ॥

रास मण्डल रच्यौ रसिक हरि राधिका तरनिजा तीर बानीर कुञ्जें ।
फूले जहां नीप नव बकुल कुल कुल मालती माधुरी मृदुल अलि पुञ्ज गुञ्जें ।
सुमन के गुच्छ अति सुच्छ चलदल तरल तरु मनौं चहुँदिशि चँवर करहीं ।
करतरब सारि शुक पिक सुनाना विहग नचत केकी मनहिं हरहीं ।
त्रिगुन जहां पवन कौ गवन नित ही रहत बहत श्यामल तटनि चल तरंगा ।
विविध फूले कमल कोक कज हंस कुल करत कल कूजित जल विहंगा ।
हेम मण्डल रचित खचित नाना रतन मनहुँ भू करन कुण्डल विराजै ।
वंश बीनादि मुहचंग मिरदंग वर सबनि मिलि मधुर धुनि एक बाजै ।
नचत रस मगन वृषभानुजा गिरधरन वदन छबि देखि सुधि जाति रति मदन की ।
मुकुट की थर हरनि पीत पट फर हरनि तत्त थेई थेई करनि हरनि सब कदन की ।
दशन दमकनि हसनि लसनि अंग अंग की अधर वर अरुन लखि उपम को है ।
दृग जलज चलनि ढिग कुटिल अलकनि झुलनि मनहुँ अलि कुलनि की पाँति सोहै ।
लाग अरु डाट पुनि उरप हुरमई तिरप एक ते एक गति लेति भारी ।
करत मिलि गान अति तान बन्धान सौं परस्पर रीझि कहैं नाग्यौ वारी ।
चारु उर हार वर रतन कुण्डल ललित हीर वर मोर श्रवननि सुहाई ।
नील पट पीत तन गौर श्यामल तन मनौं परस्पर घन श्री दामिनि दुराई ।
सखी चहुँ दिशि बनी कनक चम्पक लनी चन्द बनी इक एक तैं आगरी ।
नचत मंडल किये चित्त दुहुँ तन दिये भूलि गई सकल अप अपनी सुधि नागरी ।
रमत इहि भांति नित रसिक शिरमौर दोऊ संग ललितादि लिये सुघर सुन्दरि अली ।
मनसि वृन्दावन बसहु जीवनि धनां मजराज सूनु वृषभान जु की लली ।

राग ईमन
पद ९

कन्हैया नाचैरी, नाचैरी, नांचैरी गोपवधू मण्डल में ।
थिथिता थिमिता बाजै मृदंग देखि कौन राचैरी ।
देखौ सखा यह सुख वृन्दावन नाचैरी, नाचैरी । नाचैरी ।

पद १०

रास में नाचै मोहन लाला ।
लाग डाट अरु उरप तिरप में उछरनि है बनमाला ।
ततथंग तकिट किटि दिमि किटि थुं गिटि तक दिगि तक थुं गादिमि-

धिमि किटि धिमिधी त्रुगढ धां धिकि तकतधुं थुं ग थ तंग
तक थिधिगिन द्रुतक भेद रसाला ।
तक नक झिझि जिह किटि झिनि किटि त कुं दा किटि न कुं-
झेजगजग जिहि किटि थुंगा कधिकित उघटत हैं ब्रज बाला ।
वृन्दावन प्रभु निरखि थकित भये शशि उडुगन मद जाला ।

राग मालव पद १२

नाचत नागर नट बंशीवट जमुना तट ततथेई थेई उघटत रामा अगनित री ।
मुकुट की लटक पटक दुहुँ पाइन की पीत पट चटक चाहि चिहुँटि रह्यो चित री ।
मुख की मटक डिढि अटकन मानि दृग गटक गटक रूप पीवत अमीत री ।
वृन्दावन प्रभु मांन झटक झटक लेत ठठकि रहत काम कटक सहत री ।

राग कनडी पद १३

नांचै री दोउ बांहा जोरी ।
इत नन्दनन्दन रसिक लाडिलो उत वृषभानु किशोरी ।
गौर श्याम भुज गहैं परस्पर निरखि प्रेम उपजत मति भोरी ।
शोभा सर लाल नील कमल मनौं मिलैं करत झकझोरा कोरी ।
मुकुट लटक पट चटक फटक कर चरण पटक मिरदंग जोरी ।
तत्थ खिरिरिरि था तननन नंन सखी सुघर उघटति चहुँ ओरी ।
अलापत रागिनी राग तांन श्रुति लागि रही एकैं सुर डोरी ।
वृन्दावन प्रभु धुनि सुनि थिर चर मोह्यो जात न कोरी ।

राग गारो, वा करगजा-पद १४

घनश्याम घनश्याम घनश्याम प्यारा, नाचत ततथेई थेई थेई भारा ।
तो सुगति पर ता तन नननन तन मन धन वारा,
अहो प्रीतम बलि जाऊं बलि जाऊं नननननन हो नैंननिते न्यारा ।
वृन्दावन प्रभु वशि करि लीनी झांझन नननन नूपुर झनकारा ।

राग बिहागरो पद १५

रास रच्यौ वृन्दावन राधा मोहन जमुना कूले जू ।
चैत चन्द सुख कन्द गुञ्ज अलि कुञ्ज लता द्रुम फूले जू ।
शीतल मंद सुगन्ध महावत वहत पवन अनुकूलें जू ।
ठौर ठौर सुमननि के गुच्छा छवि पावत अति झूले जू ।
बाजत ताल मृदंग चंग वर वंशीवट कै मूले जू ।
गावत नाचत मंडल कीयें सजे सखिन के झूले जू ।
सुनि सुनि धुनि अति मधुर मनोहर शिव विरंचि सुधि भूले जू ।
वृन्दावन प्रभु को सुख निरखत मिटत सकल तन शूले जू ।

राग भैरों ॥ पद १६ ॥

क्रीडत कालिंदी तट गोपिन संग लीनैं ।
सुन्दर विशाल नैंन सुरत रंग भीनैं । मनौं मीन बाल उभय लोहित वपु कीनैं ।
उरसि तिय नख महार सोहत अति नीको । जाहि देखें द्वैज चन्द लागत अति फीको ।

ओढ़ें पट पीत बसन त्रिभुवन मन मोहैं। जैसे घन-माल मांझ दामिनि दुति सोहैं।
प्रफुल्लित बन शरद रैनि जमुन बहति धीरी। करि करि निज करनि आप देत त्रियनि बीरी।
सुन्दर सब गोप नारि षटदश वैकेरी। जिनहिं देखैं अमर नारि लागति हैं चेरी।
केऊ सखी मिलि गान करत मुखतन केऊ हेरैं। केउ गहि कर कमल नाल प्रभुनित हैं फेरैं।
इहि प्रकार करैं बिहार वृन्दावन महियां। हँसि हँसि प्यारिन भेटि मेलत गर बहियां।

राग कान्हरी द.वा.सा.वा. टोडी–पद १७

नाचत अद्भुत गति भेदन गोपाल लाल, अरु ब्रज बाल।
धुमां धुमक तिक धुम धुमक तिक धुम धुमक थिक अति विकट ताल।
ताधुं तकधुं तक तक थिक तक धलांग तक थेई।
वृन्दावन प्रभु गावत राग कान्हरी सारंग वा टोडी श्रुति मूर्च्छना तान मान मिलेई

राग वृन्दावनी काफी ॥ पद १८ ॥

बैठि तहां मिलि गावन लागे। बीरी खाय खवाय परस्पर तान मान सुनि अति अनुरागे।
मूर्छना रचना श्रुति धरि भये थिर जंगम थावर आगे।
वृन्दावन प्रभु रीझि अवन पौ भूलि गये दम्पति रस पागे।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा रास क्रीड़ा वर्णन पञ्चम घाट ॥

❁ अथ षष्ट घाट ❁

॥ दोहा ॥

मान चरित सुनि लेहु अब, प्रेम कसौटी है जु। यामें जानी परतु है प्रिया पीय की पै जु ॥ १ ॥

पद २

मान कियो इहि सौं हरि प्यारी।
रास विलास में पास कहूँ तिय और सौं पीय कीदीठि निहारी।
भौंन के कोन मे बैठि रही धरि मौंन उसासन लेत है भारी।
भौंह मरोरि कै त्यौरिन फेरि बखेरि दये गहनें झनकारी।
आली खरी बिलखानी सी भ्यांनी सुकीनी कहैं ठकुरानी कहारि।
(श्री) वृन्दावन प्रभु दूति मनावन पठई रहै लागि कोरैं विहारि।

राग गारो पद ३

एरी निठुर बाल तोबिन लाल अनमनें बैठे तैं इत मान अनोखो ठान्यौं।
चलि हठु तजि सजि अभरन अम्बर काहे करति सौतिन मन मान्यौ।
शरद चन्द सुख कन्द मनोहर नाइक नन्दनंदन रस सान्यौं।
इहि समैं वृन्दावन प्रभु सौं जुदो ह्वै जो याही मैं तेरो सयानप जान्यौं।

राग केदारो
पद ४

प्यारो तोही सौं प्यारे कौ प्रेम है परम।
तो हित विकल भये वे डोलत तऊ न तू होति नरम।
जिहि इहि भांति अपुन पौं कीनौं तासौं रुखाई कौन है धरम।
सुनि सुनि तेरो सुहाग भामिनी निशिदिन छेदि इत सौतिन मरम।
सब गुन पूरन रची विधि नारी पै न रच्यौ काहू को तेरौ सौ करम।
चन्द्रमुखी ? चलि मिलि खिलिकैं हरैं किन वृन्दावनप्रभु बिरह घरम।

पद ५

दूध को उफान ऐसो मान कीजे भामिनी।
बैठे कुञ्ज भवन रमन गमन कीजे बीती जात बावन ही छोटी मधुयामिनी।
तो बिनु सलौंनी सब लागत अलौंनी जदपि निकट हैं अनेक शत कामिनी।
वृन्दावन प्रभु संग तूही यौं बिराजति है जैसे हेम मानिक औ श्यामघन दामिनी।

राग बिहागरो
पद ६

तुव सुख सदन बदन बिनु देखें लालहि अदन न सदन सुहात।
मदन कदन अति देत बावरी रदन छदन रस क्यौं नहि प्यावत।
कहा परी बानि तोहि मानिनि ? अब हित उपदेशन तो मन आवत।
नित उठि मान सयान कौन इह आप दुखी औरनि दुख धावत।
वे निश दिन शुनि जन ज्यौं ईशहि तुव मूरति ही ध्यावत।
वृन्दावन प्रभु गिरिधारी के तू प्यारी औगुन ही गावत।

राग परज
पद ७

ऐसी मन कबहूँ मति आनौं।
मोकौं तजि पिय अनत पगे हैं झूठी सुनि सुनि कानौं।
वे कबहूँ तुम सा नहि दूजे इत को इत ऊगो जो भानौं।
तुम उनको जीवनि वे तिहारी तिहारी सौं निहचैं इह जानौं।
तिहारै बिरह विकल अति वेऊ जैसें होत देह बिना प्रानौं।
वृन्दावन प्रभु सौं तजिये हठु हौं तिहारी मेरो कह्यो मानौं।

राग काफी
पद ८

मन भावन सौं री दुराव न कीजै।
मिलिये हँसिये खिलिये किये रोष यौंही तन को रंग रूप ही छीजै।
इत की उत की जो मिलावति नारि गंवारि उन्हैं मति भूलि पतीजै।
अपने मन की उन सौं कहिये अरु आप सबै उन की सुन लीजै।
मान में कौन सयान है सुन्दरि लीजै अहू सुख जो लगि जीजै।
वृन्दावन प्रभु कैं तू ही जीवनि ऐसे तो ईठहि पीठि न दीजै।

राग कल्याण
पद ९

कोप किये नित कौन बड़ाई।
जनम ही तैं जानौं मेरी गुसांइन बैठी ए बैठी तू मौंन कमाई।
केऊ पढ़ी रस रीति औ नीति सु प्रीति की रीत जु गौरव ताई।
ताकौं यो ऊंट कटेरे ज्यौं भामिनि है दिन जामिनि ऐसी सुहाई।
वृन्दावन प्रभु सौं कहिये कहा ऐसी अनोखी सौं प्रीति लगाई।

राग अड़ानों
पद १०

एती रिस काहे कों करति प्यारी तेरे आधीन।
तुव मुख चन्द चकोर चतुर मनि तू पानी वह मीन।
वे सिगरी चाहति लालन कों है लालन तेरे रस लीन।
वृन्दावन प्रभु तेरे ही हाथ बिकानों अब चाहत कहा कीन।

राग कनड़ी
पद ११

मानिनि ? मान ले मेरौ बचन। काहे कों करत प्यारे सों अनबन।
बातनि बातनि बीतति रजनी छांडि दैरी ठम गन।
उदास है रास विलास सों तो बिन तोसों लियें प्रीतम यों पन।
वृन्दावन स्वामिनि मुरि बैठी काहे हरयो तव लालन को मन।

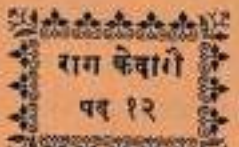

राग केदारो
पद १२

बालम की बतियां ही मीठी। क्यों आई तू जा किन पूठी।
नैंक सकालन जात पुकारिकैं जो चोरी आंखिन हम दीठी।
इत तू हमहिं मनावन आई उत कहुँ ह्वै है फिरत बसीठी।
जो न सांच मानैं तो दिखाऊं लिखी अपनैं कर जिनको चीठी।
तिन सों कह्यो बसाइ कौन को नख शिख उपटे कपट की पीठी।
काकों दोष रचो विधि हम कों वृन्दावन प्रभु बिरह अंगीठी।

राग परज ॥ पद १३ ॥

निपट कपट की खांनि कन्हाई। मेरी सी मोसौं तेरी सी तोसौं इह न मिटी है बानि।
काहू सों भेंट महेल काहूसौं काहूसौं नई पहिचानि। वृन्दावनप्रभु बहु नाइक सौं कीनौं नेह अजांनि।

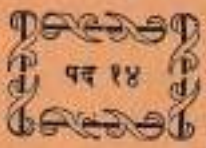

पद १४

कान्ह सों छांडि दे मान भटू इह मांगति दान हों तोपैं अवै।
लाल भयो लटू मानें वृथा अब तो बिन रास को ठाठ सवै।
दान न देहि तो सों पि अमानति देऊंगी चाहैगी मान जबै।
वृन्दावन प्रभु सों बदि आई हों पैंजु परयो जसु मोहि फवै।

राग बिहागरो
पद १५

लाल ? मनाई मनैं न गुसांइन।
हों कितनौं समुझाइ थकी रु जकी रिस सोऊं परी पुनि पाइन।
मूरति पाथर की कों मुलाऊं डुलाऊं सुमेरु तो रावरी नाइन।
हीरेऊ तैं हीयो याको महा दृढ केतो कहो कोउ टांकउ भांइन।
जिन फेरी थवै चित दूति निपूतिन और की और मिलावनि डाइन।
वृन्दावन प्रभु आपु हो जाइ सु कंठ लगाइ कैं लीजिये दाइन।

राग अड़ानों
पद १६

हों तो पचिहारी बिहारी मानति न प्यारी तिहारी।
रूप की उजारी भारी चिक्किना संवारी पैं ऐसी अनखारी नारी मैं न निहारी।
तुम जानों प्रीति न्यारी और कासों बिसतारी डिगही गयेतैं गारी देति सुकुमारी।
वृन्दावन प्रभु ऐसी देखी मैं निठुर आजु मानि है न पांइ परे कहैं हू हहारी।

राग पूरिया
पद १७

कानन की काची हो लाल प्यारी तिहारी सुकुंवारि।
झूठी सांची कहि कहि भरमावति याकौं वे इत उत की दुखदाई नारि।
मैं तो बहुतेरी निहोरी भोरी अति ओरी पखारि कीनी मनुहारि।
मानती न क्योंहूँ वृन्दावन प्रभु आपुही मनाइये कंठ लगाइये पांवधारि।

पद १८

लडबावरी लाल करी अति ही लग लागि न देवि न काहू कौं प्यारी।
निहारी दुहाई न मनाई मनैं हम तो चतुराई कै कै पचि हारी।
पीठि दियें सम्हैं मीठिहू डीठि करै न धरै चित बात हमारी।
पाइ लुयें अनखाइ महा वहि भाय सुहाय ठगौरी सी डारी।
सयानी कहैं क अयानी यहैं नहि जानी परै अति रूप उजारी।
वृन्दावन प्रभु देखो तो जाइ मनाइ इती रस दैहो न भारी।

पद १९

आये हैं लाडली लाल मनावन सूधैं तो नैंकु चितासनि ओर।
शोभा सदन मदन दुख भंजन बदन कहा रही गोइ।
तेरी तो रिस ही मैं रस उपजत अनत इती रस हू मैं न होइ।
वृन्दावन प्रभु तेरे गुनन तैं राखें हैं रोम रोम मैंनोइ।

राग नाइकी
पद २०

अब आये हैं पिय पांइन परन। पतेहू पै लाडिली तू लागी है लरन।
चौंसठि कला प्रवीन तेरेई रसमैं लीन, काकैं ऐसो नाइक है दुख को हरन।
कारे कजरारे दृग कीजे इन्दीवर ही से जेव करि राखे कोकनद कैं बरन।
वृन्दावन प्रभु प्यारो कंठ सौं लगाइ लीजै परैं जैसैं सोघु जाइ सौतिन घरन।

राग अडानौ
पद २१

नख सौं लिखति भूमिका बैठी बावरी, तू ठाढे हैं द्वार लाल सुकुमार री।
सखी अनमनी सुकुमारि काऊ पढत न तजि बैठे सब तो इह अहार री।
वैसो न अपराध कछु सब गुन पूरो प्यारी उठि भरि अंक हौं कहति बारम्बार री।
वृन्दावन प्रभु बिन हिय ताप आन विधि दीसत न आन कोउ करि तू विचार री।

पद २२

मानिनि ! मांन कह्यौ किन मेरो मनावत मोहन मीत।
कबके हाहा खात लाल इत देखन जात कहा घटि तेरो।
न कछु बात पर गहि एती हठु कीजै न कोप घनेरो।
वृन्दावन प्रभु कौं फदै तो पाइ पाइ कहावैं चेरो।

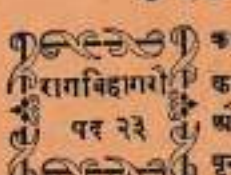

रागबिहागरो
पद २३

कब के बिहारी करत हहारी नैंकु हूंतो देखि इत दई की संवारी।
काहे ऐती रिस करै उठि क्यौं न अंक भरै प्यारे कैं तो तोसो और देखति न प्यारी।
औरनि को कह्यो मान तोरै जिन कान्ह कानि तेरी अपमानि चै चाहति हैं नारी।
वृन्दावन प्रभु रूसें पीछैं हूजो पछितैहो अबतो न मानति ही बातौं हमारी।

पद २४

देखरी देखि प्यारी मनावत प्यारी।
परम सुजान मान हूँ ते वल्लभ हिय तें कबहुँ न कीजिये न्यारी।
नाहक रही मरोरि हठीली भौंह कटीली कही मानि हमारी।
वृन्दावन प्रभु भये आधीन अब अति न भली जोवन की गारी।

॥ पद २५ ॥

ज्यों ज्यों करे प्यार पिय त्यों त्यों तू रुषाई देति, ज्यों ज्यों परे पांइ तू ठठूंस हूँ रहति है।
लाल होत सन्मुख तब तू विमुख होति करत यह बीनती कछू न तू कहति है।
विपरीति रीति फल इतोदि निहारि नीकें, चन्दन चन्द्रहु ते दाह तू लहति है।
ऐसो हठ और नारी कैं निहार्‌यो मैं न वृन्दावन प्रभु प्यारी जैसो तू गहति है।

राग विहागरी ॥ पद २६ ॥

पांइन परें हूँ मान सुन्यो कहूँ कान है।
और तो रची विरंचि तिहूँ लोक रूप संचि इहै बड़ो औगुन जु रंचक अयान है।
सकल सुख दायक पायो ऐसो नायक औंड़ें पैठि पैठि दीनों बहु दान है।
वृन्दावन प्रभु ऐसी पहिलैं इ चढ़ाइ मूण्ड ऐसें क्यों रूठें यें जान्यों रावरी सयान है।

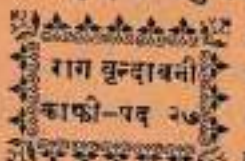

राग वृन्दावनी काफी–पद २७

झूंठ रु सांच को लीजिये और यौं झूठी यें बातनि क्यों अनखाइये।
कला सब ही में प्रवीन महा ही अयानीयै होयजु ताहि सिखइये।
पांइ परे पिय देखि इतै वलि चूक परी गुनहगारी लिखइये।
वृन्दावन प्रभु भांवती हूँ (मन भांवती हूँ) अनमांवति ह्वै मुख कैसे दिखइये।

राग पूर्वी पद २८

मानहु की विधि अवधि करी है।
तोलौं ही मान सयान भलो जिच चोलौं फिरै सजनी दिकरी है।
तब तो नहीं राखनों जोगि जबै पिय मूरति आइकैं पाइ परी है।
वृन्दावन प्रभु वौं गज गामिनि लागत तेरी रिसौं मिसरी है।

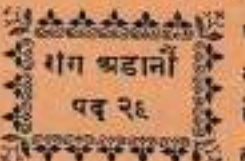

राग अडानों पद २९

कहा करों तू आई माई तोसों मेरी कछु न बसाई।
नहीं में पन लीनों है ऐसो अब क्यों हूँ न मनों मनाई।
ये तो महा कपट की सींवा जिनकैं नांही प्रेम सगाई।
तूं तो हितू जनम की मेरी तो कहौ कैसें डारयों जाई।
जिनके देश नगर घर घर हित ते कहा जानैं पीर पराई।
वृन्दावन प्रभु बहु नाइक सों नेह कियो पीछैं पछिताई।

पद ३०

प्यारी मनाइ लई हरि प्यारैं।
वर्षन बचन बहु विनय बीनती निरखि अपन दौं सखि जन वारैं।
केलि सदन चले मुदित बदन ह्वै भुजा परस्पर अंसनि डारैं।
वृन्दावन प्रभु दम्पति छकि देखें ललिता राई लौंन उतारैं।

राग देश। पद २१

बैठे कुसुम सेज पर आई, रचि राखी जो सखिन बनाई।
खवावत खात परस्पर बीरी आनन्द उर न समाई।
नाना विधि सौंधे सौं औंदे पिय प्यारी मन भाई।
देखि परस्पर रूप गये छकि सुधि न रही तन काई।
कोक कला पंडित गुन गर्वित दोऊ रसिकन राई।
वृन्दावन प्रभु दम्पति रस बातें करन लगे मन्मथहिं मनाई।

राग वृन्दावनी काफी-पद २२

बैठि तहां मिलि गावन लागे।
बीरी खाय खवाय परस्पर तान मान सुनि अति अनुरागे।
मूर्च्छना रचना श्रुति धारि भये थिर जंगम थावर जागे।
वृन्दावन प्रभु रीझि अपनपौ भूलि गये दम्पति रस पागे।

पद २३

सुनौं री सुनौं कान दे तान सखी कहा गावति प्यारी बिहारी के संग।
बजावति बीन विशाखा प्रवीन कला सुललिता ललिता लै मृदंग।
नामदी नामद्री तत्तामदीया धरनि परै दुहुँ आनि सुधंग।
वृन्दावन प्रभु दम्पति रस सम्पति भरे बरसैं मिलि अद्भुत रंग।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा मान लीला षष्ठम घाट षट ॥

❀ अथ सप्तम घाट ❀

॥ दोहा ॥

दम्पति रति लीला अगम अब बरनत भलि भांति। जिसमें लाडिली लाल की सब विधि पूरति कांति॥१
कबहुँ न बिछुरैं जोरि यह दम्पति जनमन चोर। सदा एकरस नेहमय विहरत युगल किशोर॥२
ज्यौं रविकर रवि सौं सदा बिलग न कबहुँ होयँ। त्यौं श्रीहरि अरु राधिका छिनु न्यारे नहिं होयँ॥३
जनमनरंजन हेतु प्रभु रचे विविध विधि खेल। क्यौं विलास लौकिक ललित, दम्पति रस की रेल॥४
एक ईश सब लोक के स्वामी श्रीभगवान। यातैं हो किस भाल में परकीया का भान॥५
ब्रज वनिता वनिता नहीं नहीं कामभय राग। श्याम सुधा निधि की कला स्वाभाविक अनुराग॥६
श्रीराधा सर्वेश्वरी सर्वेश्वर ब्रजचन्द। परकीया तिनको कहैं ऐसो को मति मन्द॥७
विविध भांति की नाइका ज्यौं सरिता जग मांहि। श्रीराधा सर्वेश्वरी वारिधि मांझ समांहि॥८
सर्वोपरि नायक परम परं ब्रह्म ब्रजराज। मूल नायकनि सबनि को कवि बरनत रसराज॥९
हरि की लीला अटपटी कोउ न पावैं पार। मानव कहा ऋषि मुनि सभी करि करि थके विचार॥१०

राग बिहागरी
पद ११

गईं करि रास विलास सबै अपनैं अपनैं घर गोप किशोरी।
मुरली करखी हरखी हरखी उठि आईं हुती घरके न की चोरी।
श्यामा जू कें हित श्याम संकेत निकेत विराजि रहे गिरिधारी।
वृन्दावन प्रभु प्यारी हु आइ निकेत करी सु पयान की त्यारी।

पद १२

बीतति देखी जबै रजनी सजनी पठई पिय लैंन पियारी।
बैठे हुते रजनी मधि के बनि केलि निकुञ्ज ही में गिरिधारी।
सहेट समीं लखि वेष उतै चलिये उठि यौं मनमांझ विचारी।
वृन्दावन प्रभु लाडिली पांइ सु आइ परी कही हौं गई वारी।

पद १३

पाव धारिये प्यारी बिहारी तिहारी निहारत बाट हुते दृग दियें।
मनोरथ रावरे पूरन काज सु आजु सिंगार बनाइकैं कीयें।
कैहूके बैठे संकेत निकेत धरें इक आप को ध्यान हियें।
वृन्दावन प्रभु अकुलात ह्वै है न डरो चलि हौं तुम्हैं सौंपं जियें।

राग पूरिया
पद १४

कैसी रैंन अँधियारी भारी नखत मणि पांति दमकत सुखारी।
ऐसी मैं श्याम सुजान पैं बनि ठनि चलिये श्यामा प्यारी।
सजि मृगमद अंग लेप नीलमणि भूषण नीली सारी।
वृन्दावन प्रभु मग देखत ह्वै है आतुर कुञ्ज बिहारी।

पद १५

श्याम पैं श्यामा कियो जु पयान सौ श्यामा अपार अंधेरी में छाई।
श्याम ही भूषन सौं धौऊ श्याम अनंग महाई।
पहुँची अब जाय संकेत निकेत तहां मणि दीपनि ज्योति महाई।
वृन्दावन प्रभु देखत ही उठि पौरी लौं दौर कैं कंठ लगाई।

पद १६

आलीन के संग ह्वै कुञ्ज गली न चली पिय पैं सजि प्रान प्रिया री।
धीर समीर कलिन्द जा तीर पैं बैठे जहां बलबीर बिहारी।
शिखते नखलौं मुकता पहिरैं अरु सारी सुपेद रुपहरी किनारी।
तारनि वृन्द लियें चपला मुख चन्दहिं भेंटन आई कहा री।
फूलन सेज रची पचिआलि न छाय रही छबि सौं उजियारी।
वृन्दावन प्रभु देखत ही उठि धाइकैं प्यारी भरी अंक वारी।

राग केदारो
पद १७

प्यारी पिय तैं मिलन काज धाई।
नूपुर की झनकार भई तिहिं बार मार मनों किलकार सुनाई।
मंद गज गति लटकति लटकति लचकति कटि कुच वारन के भार।
नख सिख भूषन साजे अरु राजैं उर गज मोतिन के हार।
वृन्दावन प्रभु उठि आदर करि लीनी कण्ठ न परत कह्यो आनन्द अपार।

राग कान्हरौ दरबारी
पद १८

धनि धनि आजु की घरी प्यारी पधारी पिय पैं बनि ठनि।
बड़ी छबि दून री चूनरी पहिरैं चूनि अंगिया कसि बाँधे तनि तनि।
नख सिख रूप भरी चिति चाव करी कर अति कमनी मनि।
वृन्दावन प्रभु धाइ धाइ अंक भरी लीनी कीनी रसभीनी सुरत रंगनि।

पद १९

आजु सुख लूटत लाल बिहारी, बैठे चित्र विचित्र अटारी।
ज्यौं ज्यौं पिय निरखत मुख त्यौं त्यौं हंसि हंसि उर लपटाति पियारी।
चुम्बन दै पुनि लै लज्जित ह्वै छिन ह्वै अति नियारी।
वृन्दावन प्रभु लय अंकन भरि रीझि प्रकाशत कामकला री।

पद २०

आजु सखी सुरत जुद्ध दोऊ करत सजे।
कटि किंकिनि नूपुर रुण झुणझुण गति डुडहक बाजे बजे।
धीरज हरष गरब मद अमरष ये अति सूर समर हित गजे।
भय शंका लज्जा श्रम आलस ये व्यभिचारी कायर भजे।
अधर हरोल भये अति घाइल कुच गोलहु पर परयो अति भार।
दशन कटारी तीछन नख गन भई तरवारनि मार।
कुटिल कटाच्छ दुहुँ दिशहू ते बरषत बान कतार।
वृन्दावन प्रभु कौं रीझ मदन नृप मौद इनाफी देत अपार।

राग विभास
पद २१

अब तौ सोवन देहु हाहारे।
सारी रैन जगेरु जगाई लगत न नैन तिहारे।
तुम्हें तौ परयौ बातनि को चसको करत करत नहिं हारे।
वृन्दावन प्रभु अमृतहू को कोऊ खाइ अजीरन करत कहारे।

राग केदारौ
पद २२

लाल कहा तुम्हैं बानि परी रस ना रहैगो कहूँ बात खरी।
मोंहि तो आवत नींद निगोडी जगावत आनि परोये परी।
है जिनकैं यह भूख महा पिय रे इन बातनि हौ मैं डरी।
वृन्दावन प्रभु बछ करीर के फूलन की गति एक करी।

राग बिहागरौ
पद २३

हरि हारी हहा करौं मोइ रहो अब चाही कहा तुम हारें न हौ।
प्यारी तिहारी की सौंहें तुम्हें अब तौ कछु प्यारे जो मोहि कहौ।
तुम तौ जिहिं बात के पैंडे परौ फिरि ही फिर वाही की गैल गहौ।
वृन्दावन प्रभु गोरस खायो परायो याते इतो खेद सहौ।

राग देवगंधार
पद २४

पौढ़े दम्पति सुख सैंन।
परम कोमल सुरत लीला श्रमित पायें चैंन।
परस्पर भुज अंश दीनैं सकल सुख के ऐंन।
वृन्दावन प्रभु प्रेम माते कछुक मुकुलित नैंन।

राग विभास
पद २५

भोरहि तरुनि तलप उठि बैठी अलप अलस युत दृग जल जात।
अंग अंग रति चिन्हनि भूषित देखि मुकुर मुद उर न समात।
छुटि रही अलक अवलुनी पलकनि अधर सुछत तन तोरि जंभात।
वृन्दावन प्रभु रसिक शिरोमनि निरखि निरखि छवि छिन न अघात।

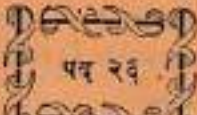

पद २६

नागर नलिन नैंन सुनि सुनि कलविंक बैन उठि बैठे सैंन पर रसिक रझावनैं।
सौंधें रंगमगे रति रंग भांभ पगे रैंन के जगे लगें परम सुहावनैं।
घूमत झुकत झपकत भिभकत मैंन मदमातें बोलैं बचन तुतरावनैं।
वृन्दावन प्रभु आली देखि देखि लालिन मैं पावैं सचु गावैं मिलि मदन बधावनैं।

रागविभास वा.
भैरव-पद २७

भोरहि मंगल आरति कीजै।
मंगल सदन वदन जोरी कौं निरखि निरखि कैं जीजै।
मंगल नाम कृष्ण गोविन्द हरि गोपीजन प्रिय लीजै।
वृन्दावन प्रभु त्रिभुवन मंगल यश सुधा श्रवन पुट पीजै।

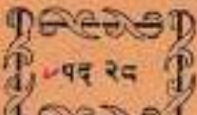

पद २८

उठि बैठे प्रात मोद न समात गात करत रसीली बात अति ही विचच्छन।
उरमी लट सौं लट पट सौं उरमे पट हारन सौं हार दृग दृग तन मन।
नखनि के छत उर महावर पीक मानौं उगे हूँ ज शशि सांझ गोर श्याम घन।
कछुक मुकुलित नैंन सकल शोभा के ऐंन निरखत पावें चैंन दुरि सखी जन।
वृन्दावन प्रभु ऐसी माधुरी पर वारि डारौं कोटि कोटि रति औ मदन।

राग बिलावल
पद २९

उठि बैठे दम्पति रस सम्पति भरे भोर।
चन्द मन्द दुति देखि दोऊजन सुनि कलविंकनि शोर।
आलस वलित अरुन लोचन वर मानौं मत्त चकोर।
चितत परस्पर वदन चन्द्रिका इक टक भये दुहुँ ओर।
पीक लीक अंजन रंजित अंग छवि न फबी कछु थोर।
वृन्दावन तन मन धन वारत निरखत नन्द किशोर।

राग विभास
पद ३०

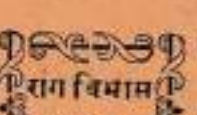

आजु विराजत युगल किशोर।
अंग अंग रति रंग सनैं दोऊ उठि बैठे शय्या पर भोर।
नैंन मैंन मद घूमत झुमत चारु चिकुर बिथुरे चहुँ ओर।
वृन्दावन प्रभु दम्पति सुख सम्पति, है रतिपति रति की चित चोर।

राग देवगंधार
पद ३१

भोर हि सुमिरो युगल किशोर।
कुञ्ज महल मैं रतन पीठ पर बैठे नित्य कृत्य करि भोर।
रति विनोद कहि कहि मृदु मुसुकत प्रिय सखि तन निरखत दृग कोर।
वृन्दावन प्रभु दम्पति सुख सम्पति ललितादिक देखति चहुँ ओर।

राग श्री, बिला-वल-पद ३२

राजति है अति अद्भुत जोरी, कहा बरनैं कविजन मति थोरी।
सजल नील घन बरन बिहारी, सौदामिनि दुति राधा गोरी।
इन्द्र नीलमणि-दुति दामोदर कुन्दन दुति वृषभानु किशोरी।
श्याम तमाल लाल मनमोहन कनक लता कीरतिजा भोरी।
मरकत मणि नन्दलाल लाडिलो हाटक थेहा बन्धोरी।
वृन्दावन दम्पति छवि ऊपर सरबस वारि डारत तिन तोरी।

राग बिलावल पद ३३

आजु बनें बनमाली।
अधर मधुर अंजन दुति राजत भाल महावर लाली।
अटपटे पेचनि बाँधें अरगजैं नील बसन गज चाली।
वृन्दावन प्रभु रैन उनींदे झिकझकत झपकत नैंन बिशाली।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा अभिसार सुरत सुरतान्त लीला वर्णन सप्तम घाट ॥

❀ अथ अष्टम घाट ❀

॥ दोहा ॥

सुनि सुनि खंडित बचन जिहिं, पठित नायक बात। होत निहाल सो खंडिता, बरनत हौं अब तात॥१

राग बिभास पद २

कैसे नीके लागत नवनागर गिरिधरन।
याही ते अधर अंजन रंजित कीनें प्यारे लाल डीठि के डरन।
अरुन उनींदे नैंन बोलत हो आधे बैंन ऐंडे बैंडे परत हैं रावरे चरन।
जानियतु आजु रैंन जागे अनुरागे कहूँ आपु निज देवता को आगर करन।
पाग की ललाई भाल जलकत जावक सी अंग की झलक पट भयो नील बरन।
वृन्दावन प्रभु ही रिझावन किधौं मेरी बीझि लगा मन ही हरन।

राग बिला-वल-पद ३

जानैं जानैं हो पिय भले हो बोल के सांचे।
मोसौं बदि संकेत गये हे जाय और सौं राचे।
नैंन थके मग जोवत जोवत कौन चूक पति छाँते बाचे।
वृन्दावन प्रभु दोष न तुमकौं बहुत ठौर सौं काचे।

राग टोडी पद ४

तुम तो भये हो भौंर ठौर ठौर बाम लैंन याते न निवास कहूँ रावरो निहचल।
ढूँढत फिरत द्रुम बेली बनबन पढ़े इहै पाटी याते जानत हो छल बल।
चाखे नाना रस याते नहीं मन बश रैन दिन क्यौंहू अब तुम्हैं न परत कल।
वृन्दावन प्रभु जेब तुमसे न दूजो जानें याते है बिषाद इह उनही को पल पल।

राग रामकली ॥ पद ५ ॥

आजु तो गोपाल लाल कीनी हौं निहाल तुम कैसें नहिं बाल इत आवनहूँ दये हौ।
भूल्यां सब काम तुम आठौं जाम वाके धाम इत उत मँडरात ऐसे वश भये हौ।
घर घर चवाव तउ तुम में समान बढ़ो दिन दिन दूनौं भाव वाकौं बिकि गये हौ।
वृन्दावन प्रभु अब ऐसोइ है नेह नयो भई वह नाइका अरु नायक हू नये हौ।

राग विभास ॥ पद ६ ॥

भली कीनी भोर हू मो भवन पधारे मेरे तऊ तुम प्यारे लाल लागत हौ जिय कौं।
मोकों तो तिहारी इह दरसन हू दुर्लभ है धन्य वह ऐसे सुख देत हौ तिय कौं।
रति के चिन्ह एत बहै देत वाकों सुख मोकौं दुख लिख्यो सो दोष दीजै कौन कौं।
वृन्दावन प्रभु अब वाही कैं पधारो घर मनावति ह्वै है बैठी मिलिवे के सौंन कौं।

राग ललित
पद ७

आजु श्याम कहा यहां काम तिहारो।
वाम के धाम पलावत जो अहि यात ही कैं अब धाम सिधारो।
निशि जाम वितीत करी जु वहां सुख नाम कौं भोर कैं आवो संवारो।
वृन्दावन प्रभु ह्वै है धाम न्याव राम कैं आगैं तुम्हारो हमारो।

पद ८

मुसुक्यात मनैं मन सौंचैं सनैं वनैं स्याम गनैं गनैं पैंड धरी।
मृदु मूरति आरस सौं लपटी कपटी उपटी उर वीर वरी।
वह संग खरी जिहिं रंग रंगी मिलि जाहि अनंग की ताप हरी।
वृन्दावन प्रभु दूरि रहो न छिपो हिये ते कबहूँ न टरी।

राग जैतश्री
पद ९

मैं पतलीनौं आजुते तुमसौं बोलौं नाही।
अंखियां जो देखंगी देखी समझौंगी मन मांही।
कपट नेह सौं देह जरति है मति मैली गर बांही।
वृन्दावन प्रभु चाही वै चलि पै तो भई दगाही।

राग विभास
पद १०

नित नये नेह निवाहन मोहन गोहन और के काहे परे हौ।
तुम सौं तो परघा रस की चसको परा कौंन को जो इहिं डार डरे हौ।
तुमतो ब्रजराज के नन्दन लाल बढ़ाइ दई न दई तें डरे हौ।
वृन्दावन प्रभु मति आगैं कहावो कछु क्यांनैं रहो सब गुनन भरे हौ।

राग ललित
पद ११

लाल निहाल से डोलत हौ वह बाल कहूँ उर माल भई है।
प्यारी के अंग सुदेशनि की तुम्हैं मैंन मनौं सिकदारि दई है।
भौंर ज्यौं भांवरि देत हुते सब यौवन की रस भूख गई है।
वृन्दावन प्रभु काहे छिपावत कीरति तौ सब ठौर छई है।

राग विभास
पद १२

मन भावन आंगन पावन कीनौं ।
दांवन घांवन आंवन कै इत प्यारी कुठावन आंवन दीनौं ।
रूप रिझांवन च्वांवन सावन पांवन लोरे किये दृग मीनौं ।
वृन्दावन प्रभु गांवन गांवन गांवन वाही को नेह नवीनौं ।

॥ पद १३ ॥

नेह को छेह न देह पियारे । तुम तो नेह कियो घर घर को ताहि समेटत हारे ।
एक ठौर ठहरात न छिक सौं श्याम नैन के तारे । इतनौं तो हम हमहूँ समझति हैं इत न ढरैं इह ढारे
मधुकर रीति प्रीति करवाये स्वाद मिष्ठ खटु खारे । वृन्दावन प्रभु परे जु चसकैं कापै जात निवारे ।

पद १४

प्रीति करी ठहराई कहूँ गहराई हि जानत हो सब कौं ।
रास मैं कीनौं प्रकाश इहै गुन भूलत नां हम हूँ तब कौं ।
पहिलैं सब सों करि केलि रिझाइ लै एक हि छांडि गए हम कौं ।
सोऊ तो पूरो परयो न कछू वाहू सौंपि गये विरहा यम कौं ।
केऊ रचे विधि ऐसे कहूँ नहि कोमलता तन कौं तनकौं ।
वृन्दावन प्रभु केवल स्वारथी पूछि देखौ अपनैं मन कौं ।

राग ललित
पद १५

पहि नेमहि स्वारथ साध्यो किधौं तुम प्रेमहु सौं पहिचानि करी है ।
नखतैं शिखलौं कपटाई लै मूरति मोहनी डारि विरंचि धरी है ।
उहि मोहनी मोहति डोलति हैं मुरली अधरामृत लै जु भरी है ।
वृन्दावन प्रभु मोहि नहीं भ्रम को सुर किन्नर नारि नरी है ।

पद १६

अहो लाल इतै किन भूलि परे हो ।
जैये उतै इन सौंमनि मैं करि हौं सखखैं जिहि होय हरे हो ।
नये चाखत हो रहु औरं भये इन बातनि कौं चतुराई भये हो ।
वृन्दावन प्रभु कपट कल्पतरु भूलते लै सब झूंठ फरे हो ।

राग जौनपुरी
टोडी-पद १७

भली परिपाटी की पाटी पढ़े हो । इन बातनि पातनि केती रढ़े हो ।
नखशिख झूंठ भरे मन मोहन जानत हौं विधि आप गढ़े हो ।
सकल कला गुन पंडित ताई मैं तानहु प्रात तैं आगं आप हो ।
सोंहनि ख्यात बड़े परभात प्रतच्छाइ तौ रति चिन्ह मढ़े हो ।
नेह जनावन आये हो मोसों सुभाइ उतैं कहूँ आइ कढ़े हो ।
वृन्दावन प्रभु जानत मोहनी ऐसे हू पैं पुनि चित चढ़े हो ।

॥ पद १८ ॥

आलस भरे हैं लाल सारस से नैन युग जा रस पगे हो सोई पारस करि पाई है ।
सब सौं रुखाई दियें डोलत कन्हाई तुम तिहारे जिय आनि इन स्वारथ सगाई है ।
सु बहू करिलेहु दिन च्यारिक सुहाग भाग जौलौं और ठौर कहूँ प्रीति न लगाई है ।
कपटी हो श्रीवृन्दावन प्रभु तऊ रूप रीझि आनि फँसैं बाम जो विचारी बावलाई है ।

पद १९

चैंन सों रैंन को जागे कहूँ तुम लैंन कहा इत लालन आये।
जानत फैंन बनावत बैंन ए सैंन के चिन्ह क्यों जै हैं छिपाये।
नैंन ते सैंन दे काजर काढ़त चारेई ते पर चोरी सिखाये।

राग विभास
पद २०

आजु इहि बानिक की बलिहारी।
आलस वलित ललित शोभित तन सुरत चिन्ह गिरिधारी।
अंजन अधर गंजन मधुकर दुति अरुण सरोज विहारी।
लट पटी पाग रही वाम भाग झुकि तापर पीत पिछोरी डारी।
रस पागे जागे निशि झपकत लपक अलक अनियारी।
मनहुँ राहु दुहुँ दिशि शशि ऊपर रह्यो कर काढ़ि कटारी।
खंडित वचन रचन उर मंडित अब हिय ध्या संचारी।
वृन्दावन प्रभु चारु कपोल तमोल की छाप विराजति भारी।

राग नाइकी
विभास
पद २१

प्रात उठि आये अलबेले अलसात श्याम वाम मुकुर लै दौरी।
रीझि को बनाव आजु बन्यों है विहारी लाल डारत फिरत ठगौरी।
सुकर मुकुर लैकैं सुकर मनावौ देखि बैठी यहां छिन पौरी।
वृन्दावन प्रभु सकुचि मुसुकि बोले हम को तो वल्लभ तुम ही हौरी।

राग भटूजी
पद २२

तुम जिय कठिन नन्दनंदन पिय निज हिय हेरि निहारी।
तुम करौ ध्यान आन आन ही को हम करैं ध्यान तिहारो।
हम तजी लाज काज गृह को सुख तुम बिन लागत खारी।
वृन्दावन प्रभु या करतूति पैं क्यों हँसि हेरि ठगौरी डारी।

श्रीकृष्ण वचन
राग पूरिया
पद २३

ऐसी बात काहे को कहति प्यारी परम उदार।
प्रान को प्रान जीव जीवनि तन नैंन बैंन मन तू आधार।
तुव मुख चन्द चकोर मो॰ दृग मोर सुंदिर कच भार।
वृन्दावन प्रभु तो देखे जीऊं तू रमनी मनि मो उर हार।

राग मधुपुरी
काफी—पद २४

अहो लाल चलो उनही अब जैये।
हमारी बहुनी विष सानैं हिगी मन राखन क्यों हमारो इत ऐवै।
हमसौं इतनौं कहा अन्तरु है निज मोद विनोद हमैंऊ दिखैये।
वृन्दावन प्रभु आये इहां मुंह हाथ परै न कछू इत पैवे।

राग नट
पद २५

आज विराजत हो अति नीके।
लाल तुम सौंपें सनैं पनैं रैन उनीन्दे भये आये जी के।
आजु रैंन रति मांनी जासों भाग्य बड़े ता ती के।
मुख मीठे दीठे लख शिखलों कपटी हो हरि ही के।
ठौर ठौर रस लैंन काज तुम लच्छन सीखे अली के।
वृन्दावन प्रभु औरनि सों क्यों भये फिरत हो फीके।

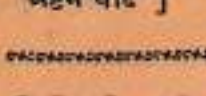

पद २६

कहौ जु कहां तुम आजु की रैंनि बसे।
नैंन अरुन तन चन्दन बन्दन ओंठनि अंजन अधिक लसैं।
पीक लीक लगि श्याम कपोलनि मनौं अनुराग कसौटी कसे।
वृन्दावन प्रभु हे बहु नायक औरैं भलैं इत आय फंसे।

पद २७

कपट को नेह जनावत प्यारे औरैं भये भलें मेरैं पधारे।
लोइन कोइन लाली खुली अरसौं है एसौं हैं न होत हैं तारे।
झटपटे पाइन चरन धरनि पर लटपटे पाग के पेच संवारे।
वृन्दावन प्रभु इहि दानिक सौं देखि भये दृग शीरे हमारे।

राग भैरव ॥ पद २८ ॥

भलें ही आये मन भाये लालन अति अरसाये याते आय पौढ़ि रहिये।
हमें तो तिहारे सुख सुख है अधिक प्यारे आप इत आंचन कौ काहे दुख सहिये।
जित रुचि मानी अब आली ताकी प्रीति रीति नीति तो यहै है अब वाही सौं निवहिये।
वृन्दावन प्रभु तुम हो परम सुजान यातैं सब ही को समाधान होत योंही चहिये।

राग ललित ॥ २९ ॥

मोहि तो भरोसो है तिहारो सब बातनि को लाइक हौ नायक मन भायक सब ही के।
तुम सो चतुर और कोउ है न काहू ठौर रसिकन शिरमौर परम उदार जी के।
मुरली बजाय गाई रूप दरसाई तरसाय तरसाय चित हेरन का का ती के।
रावरी बड़ाई अब कीजै कहा लौं वृन्दावन प्रभु आपनैं काज कौं पड़े ही बहौत नीके।

पद ३०

जागे रैंन कहूँ चैंन दैंन लागे हमें आय मैंन मदमाते नैंन बैंन तुतराते हैं।
महावर लाल भाल मरगजी माल उरअंक नख अंक दुति मयंक से सुहाते हैं।
मुकरत काहे चाहे करत हो आपनैंइ लाइक बहु नाइक ते कौन सौं सकाते हैं।
वृन्दावन प्रभु बानि आई इन बातनि मे पानैं परे काहू कैं न देखे धीरे ताते हैं।

पद ३१

जानैं मानैं जु जानैं हौं ज्यानैं रही इटे पाटो पड़े बहुतै ही सयानैं।
बात बनैं न गनैं कछु लंपट संपट ही कौन खोलै न मानैं।
आनैं ही घेरि दई परे पानैं हौं मूंदेऊ सौं रति रति रंग में सानैं।
रानैं भये बहु नायक कै याते ठांठा दये तुम प्रेम के थानैं।
भोरी सिरी ब्रज की बनिता सब बैंसिन कैं न परै कहूँ पानैं।
निसानैं बजावत काम करी अब कुञ्जरि मे गुर फोअत छानैं।
दियैं कानैं कहूँ उरझानैं कहूँ दृग तानैं कहूँ कित हू हौरि छानैं।
वृन्दावन प्रभु दानैं भये भले ठानैं फिरौ इहि बात के बानैं।

पद ३२

अहो भले अहो भले आये मन भांवन।
रति रंग रंगे अँग सुहाये देखि देखि नैन सिराये।
झिझकत झपकत श्याम उनीन्दे किन धौं आजु जगाये।
वृन्दावन प्रभु यहि रस वश भये ऐसे रीझि रिझाये।

राग गारौ ॥ पद ३३ ॥

भलांहीं पधारया म्हांकै नन्दलाल। म्हे तो थांनें देखतां ही हुवा छां निहाल।
म्हांकै तो नैण प्राण थेई छो प्यारा जी थांकै तो म्हां सारिखी घणी छै बाल।
आंख्यां थांकी रैण उणीन्दी अटपटी थांकी चाल। वृन्दावनप्रभु कांई आछी लागे छै अलक तो थांकै भाल।

॥ पद ३४॥

छल बल करून अमचे आले पाहुन पाहुन डोले शीतल झाले नन्दा चे कुमार।
नखांचे चिन्ह तुमचे आंगी। कोठे झाले हे तू सांगी। रांती जागले निजुन रहा, हाथी घेऊन दर्पण पहा।
(श्री) वृन्दावन प्रभु तुमी बहु नाइक। या च करणे हा अति धाइक।

पद ३५

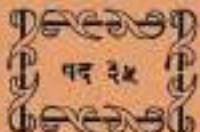

लाल कबहूँ तो तनक दीजै हमैंउ दरस।
निपट निठुर न हूजे नेह करि प्राण पति कीजै दई को तरस।
छिनक न होते ही ते न्यारे कै बीते बिछुरें केतेऊ बरस।
वृन्दावन प्रभु अब वेई बड़ भागिन हैं आजकाल्हि जिनसौं ही अरस परस

राग अडानौ पद ३६

भले जू भले मन भांवन, अब लागे दरस हू को तरसांवन।
चिरमि रहे गये अवधि बीति कैं अब कहि गये हे आवन।
भूलि गये कैतो अपने काज को परत हुते हठि पावन।
वृन्दावन प्रभु बहु नाइकी के जानत हो सब दांवन।

राग सारंग पद ३७

पतंग को रंग है नेह तिहारौ।
दिन चार तौ चटकीली लगै बहुरयौं परि जाइ सु फीको फिकारौ।
ऐसोये पाटो पड़े तुरते तन साँवरो है मन तैसोई कारौ।
वृन्दावन प्रभु कारे पै रंग न दूजौ चढ़े तिहारौ कहा चारौ।

पद ३८

प्रीति की रीति निबांहनी महा कठिन है लाल।
तुम तो फिरत नये रस चाखत यह सांची है बाल।
वह नित सुखत इहि दुख दाधी रोवति परि बेहाल।
वृन्दावन प्रभु तुम बहु नाइक यातैं फिरहु खुस्याल।

राग वृन्दावनी काफी-पद ३९

आजु मैं नीकैं निहारी बिहारी पियारो निहारी नई जु भई है।
चन्दन पांति की कांति कहां कहा स्यामा लै वा समतूल दई है।
कही न परे बिधि की रचना मणि अद्भुत लै कपि कंठ नहीं है।
वृन्दावन प्रभु जैसे कौं तैसो मिलै तब ही रस बात सही है।

राग बिहागरो
पद ४०

जानें मानें भलें तुम राधा कीं बाधा दैं औरनि सौं करो नेह बिसेखी।
रंग तो श्यामन ढंग कोऊ गहैं मुख धरैं शिर पंख जु देखी।
दाख की बेलि कटेरी कहां सुइ हू तो भयो करहाई की लेखो।
वृन्दावन प्रभु मान सुता तिहारे मुंह लायक आरसी देखी।

राग सारंग
पद ४१
विरहिणी लगन

माई मिलि जिन बिछुरौ कोइ।
जरन मरन हिय पवन गवन ते इह दुख दारुण होइ।
प्रान जान कौं कंठ रहत लगि ज्यों अंकुर मुख सोइ।
वृन्दावन प्रभु बिरह व्यथा जानैं जामे बीते सोइ।

राग रामकली
वा परज-पद ४२

प्यारे बिनु सुखद लगे दुख दैन।
लागत मलय समीर तीर सो चन्द लग्यो जिय लैंन।
असन बसन तन डसन भये सब भारत तनि तनि नैंन।
वृन्दावन प्रभु नैंन निगोडनि चैंन नहीं दिन रैंन।

पद ४३

कौन अविधि विधि कीनी क्रूरि।
जिय मन प्रान एक करि दुहुँ के निपट निठुर करि दीने दूरि।
तन तचि बिरह सदन सूनैं लौं जरि बरि छार भयो चकचूरि।
वृन्दावन प्रभु बिनु कैसे जीवों जो तन मन जिय जीवनि मूरि।

राग टोडी
पद ४४

ए दई भई गति कौन।
जबते बिछुरे लालन आली सूनैं लागत तीनौं भौन।
बिरह व्यथा सम और न दूजो न्याय करति न्यारी सह गौंन।
वृन्दावन प्रभु को हौं को हूँ इह कछु समझति हौंन।

राग पूरबी
पद ४५

क्यों करि दिन भरि ए बिनु प्यारे।
मन तो साथ फिरत उनही कौं तन इत जिय वैं न्यारे।
सुजन बन्धु घर असन बसन ए सारे लागत खारे।
वृन्दावन प्रभु बिरह धार मैं हमकों वे छिटकाय सिधारे।

राग रामकली
वा सोरठ
पद ४६

देखो बिदेशी भये पिय प्यारे हौं कैसे जीवूं दयारे।
जो एको छिनक कहुँ सजनी होत न हे नयनन ते न्यारे।
इतनें व अन्तर दर नित घर मैं भूषन बसन न धारे।
के अब बीच किये बिधि दुहुँ के गिरि बन देश नदी नद नारे।
महा कठिन ये प्रान प्रान बिनु रहत जु दई सँवारे।
मन सांची प्रेमी वृन्दावन प्रभु संग फिरत छांडि सुख सारे।

राग परज
पद ४७

सखी री आवत है गोपाल अंदेशो ।
जिन सौं रास विलास कियें मिलि तिनको अब सुपनें न संदेशो ।
जांनि मानि पहिचांनि तजी सब जाय मधुपुरी केशौ ।
वृन्दावन प्रभु कारो कपटी जानति हैं हम वैसो ।

पद ४८

सखी री सुनियों हरि की प्रीति ।
सौरत नैंको बार न लाई इह कुटिलन की रीति ।
मनहुँ जानि पहिचानि कबहुँ इह उन सौं हम ठानी ।
आइ मधुपुरी कुब्जादासी ले कीनो पटरानी ।
इह उर साल हमारें सालत किहि विधि ता(सु) जु बिसैबो ।
वृन्दावन प्रभु पर कर मन दै अबै परयो पछितैबो ।

पद ४९

आवै री पिय प्रेम परेखो ।
कितीक दूरि मधुपुरी संदेशो नैंकु न दयो आली री देखो ।
निपट निठुर हियो कीनों कबहूँ नांहि नेह सौं लेखो ।
वृन्दावन प्रभु कुबजा राचे इह पुनि काम कियो जु बिशेखो ।

पद ५०

अन्त उदासी भये ब्रजबासी तो नाइक प्रेम की डारी क्यौं फांसी ।
दासी करी जग हांसी भई पै तऊ सुधि क्यों हूँ लई न बिशासी ।
दई न दई है दया कबहू जिनकौं अब तेऊ हैं प्रेम प्रकाशी ।
वृन्दावन प्रभु छाती तिहारी सी जो करै तो होय प्रेम की हासी ।

राग कनड़ी
पद ५१

मिलि सुख दै दुख दयो बिसासो ।
सुख तो तनक भयो सुपनों सो बिछुरैं अब दुःख भयो सहवासी ।
सासन तैं सकिए गुरुजन डर डारि गयो गर प्रेम की फांसी ।
वृन्दावन प्रभु कठिन बनी अति हु गई अब इह हांसी है खांसी ।

राग गारी
पद ५२

मदन गोपाल तेरे हित मैं गृह वित तजि दीन ।
बिन देखें तेरी मूरति उलफों ज्यों जल बिनु छिन मीन ।
अलबेली तेरी बंक बिलोकनि सो मन तो हरि लीन ।
वृन्दावन प्रभु सुध्यो बिसारी महा कठिन हिय कीन ।

राग बंगाली
पद ५३

अहो पिय महा कठिन मन कीनों
जबते सिधारे यहां ते लालन कबहु पत्र नहीं दीनों ।
जो तुम्हैं ऐसी करनी ही बलि क्यौं चितवित हरि लीनों ।
वृन्दावन प्रभु हम तन तुम बिन होत दिनैं दिन छीनों ।

राग बसन्त सारंग ॥ पद ५४ ॥

क्यौं हूँ नहीं चैन सब लागे दुख दैन आली प्यारी प्रान दूरि कछु बात न कहन की।
देखि देखि पाती छाती काती सो बहति मेरैं ताती ताती झार उठैं बिरह दहन की।
कहि कहि अवधि राख्यौ अब लक जिय मैं तौ अब तौ न सूझैं विधि याके रहन की।
वृन्दावन प्रभु श्याम वैतो प्रेम पूरे हहैं पै न होत आवन सु अपनैं लहन की।

राग बंगाली
पद ५५

पहलैं तो गुरुजन डर बिरह भार उर बढ़ति ही हरैं हरैं।
सुलगि सुलगि पुनि बूझि बूझि जात ही झरोखा मोखा कोउ न जरि परैं।
कहा कीजे अब तो दूरि गमन कीनौं उठी महाज्वाल तातैं अंग अंग पर जरैं।
वृन्दावन प्रभु बिन आनि मोहि एक ही ए मारै मार अरु वाकी सेना कैसैं दुख भरैं।

राग मल्हार
पद ५६

जब जब सुधि आवैं वे सुख तब तब दुखते नैननि नीर झरैं।
जागैं हूँ न चैन दिन रैन हूँ न नीद परै कहो कैसैं कैसैं कैर दिन भरैं।
महादुसह दह बिरह हू तन याते निशिदिन अंग अंग जरैं।
वृन्दावन प्रभु बिन कठिन ये प्रान मेरे रहत हैं कोऊ दिन गरैं परैं।

राग माल श्री
नाइकी-पद ५७

तुम बिन कैसैं रहौं मन भावन।
शिशिर ते शिर लौं फिरी बसन्त मैं परी मैंन सर घांवन।
ग्रीषम विषम लगी जब हू ते ननहि मैंन ज्यौं तांवन।
पावस रितु नैननि बसि बीती शरद जरद करि देह जरांवन।
वृन्दावन प्रभु अब न रहै जिय जीव धारि ही पांवन।

राग सोहनी ॥ पद ५८ ॥

आयो है मास सावन न आये मन भावन वे लागे गुन गावन ए चातक हू चहूँ दिश।
दुख की निशानी इह ठानी विधि बिरहिन कौं पीव पीव बानी सुनि होत मन महारिश।
वे तौ महाज्ञानी कछु मन मैं न आनी पै और नेही प्रानी अब जीवें जानि कौंन मिश।
वृन्दावन प्रभु पानी जानैं न बिरानी पीर मीन की कहानी इह याहि तो त्र्यधिक तिश।

राग विहागरो
पद ५९

पीव पीव बोलि रे पपीहा जीअ लै जिन मेरौ।
मोहि अकेली आनि सदन मैं मदन कियो है घेरौ।
तू तौ गरैं करैं ही जीवत महा कठिन मन तेरौ।
वृन्दावन प्रभु बिरह विकल हम प्रान पयान आय बन्यौं नेरौ।

राग मल्हार ॥ पद ६० ॥

ये दुखदाई माई बदरा गरजि गरजि।
ज्यौं लेति अकेली आनि तैसिय पापिनि साँपिनि सी इह दामिनि दमकति तरजि तरजि।
तैसेई मोर सोर घोर करत अति निज नारिन तन लरजि लरजि।
वृन्दावन प्रभु आंवन कहि गये राखति प्रान धौं बरजि बरजि।

राग पूर्वी वा गौरी-पद ६१

मन भांवन आंवन की बतियां सुनाई माई तेरी हौं लैऊं बलाई ।
रोम रोम मेरैं मोद भयो महा कहा दैऊं अब तोहि बधाई ।
देहौं सरवस तोकौं आली री सुख भरिहौं तेरो मिठाई ।
वृन्दावन प्रभु कौं जबहि भेंटि हौं करिहौं तेरी मन भाई ।

राग ललित पद ६२

ज्यौं ज्यौं पिय आवत सुनि इत नेरैं नेरैं, त्यौं त्यौं विरह ताप घटत दिन छिन मेरैं ।
बहुत दिनन के तृषित दुखित ये चख चातक ज्यौं मग हेरैं ।
कब आय बरसि है रूप स्वाति सखि ? उत्कण्ठा मोहि लेति इह घेरैं ।
सोइ छिन सफल ह्वै है भेंटि मोहि वृन्दावन प्रभु प्यारी कहि टेरैं ।

राग गौडमल्हार पद ६३

आजु भलैं ही आए मन भाये प्रीतम सुजान ।
वारि वारि डारौं या आंवनि पर तनमन धन अरु प्रांन ।
तैसीये सुहाई सुखदाई आई पावस ऋतु बुझिगयो विरह कृशान ।
वृन्दावन प्रभु देखें रोम रोम मोद भयो बाजे मंगल निशान ।

पद ६४

भौंन पधारे भलैं पियारे, आजु मनोरथ पूरे हमारे ।
देखत ही यह सुन्दर मूरति हियो सिरानौं मिटे दुख सारे ।
नैंन करैं पट पांवड़े गोकुलचन्द पैं सरवस वारे ।
वृन्दावन प्रभु आवनि ही सुंनि नेम गये धरि नेम विचारे ।

राग ईमन पद ६५

दुख सब दूरि भयो सब जीको ।
बढ्यौ हरष वारिधि ज्यौं सजनी वदन इन्दु सुख नीको ।
लघुपायो अति नैंन चकोरनि बन सु लोम गन ही के ।
वृन्दावन प्रभु चंद कहौ कीनौं बदन कुमुद सम तीको ।

राग टोडा मैंनपुरी पद ६६

भलैं ही पधारे मन भांवन, करि हौं पलक पट पांवड़े ।
सुख मय बरसे मेह नेह के तन मन ताप सिरावन ।
कैसें रहि है धीरज मेरो देखैं रूप दिखावन ।
वृन्दावन प्रभु धाय भेंटि हैं हौं धरि हौं पिय पांवन ।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा उपालम्भ विरहादि लीला वर्णन अष्टम घाट ॥

❀ अथ नवम घाट (उत्सव वर्णन) ❀

॥ दोहा ॥

अब बसन्त होरी बरनि, दोउ डोल रस ऐन । बरनत सकल कलानि करि जहां उदीपित मैन ॥१॥

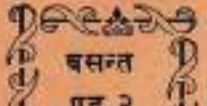

बसन्त पद २

आयो है आयो है बसन्त सन्तन सुख दायक ।
बनि ठनि रति नायक मन भावक ।
नव किशलय मंजरि पट भूषन पहिरि लियें भट लाइक ।
कुञ्ज कुञ्ज अलि पुञ्ज देत सुर मधुर संग पिक गायक ।
वृन्दावन प्रभु कौं करत मुजरौ नित सैंन सहित पंच साइक ।

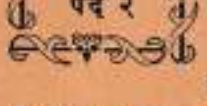

राग सोहनी पद ३

आयो है बसन्त भयो मोहितो अनन्त दुख बिना कंत कैसें या असन्त पै निबहिये ।
देखि देखि हेलो बेली द्रुमनि सौं मेली, फूली हौं अकेली एक यातें देह दहिये ।
कोकिल मराल बानी लागति कराल अति साल से सलव हियें कासौं पीर कहिये ।
वृन्दावन प्रभु तौ निपट निरदई दई जाकें हित एतौ अपलोक शिर सहिये ।

पद ४

बसन्त बँधावन चली हरि कौं हरिन नैंनी हियें हरषि कियें सोरह सिंगार ।
हसित अबीर चोवा चन्दन गुलाल अपांग हेम कुम्भ कुचहुरी आंगी अम्बडार ।
लह लही योवन जोरोरी गोरी अधर बिमल अछत मोती हार ।
वृन्दावन प्रभु फूले फूल्यो सब वृन्दावन फूली सखी जन भयो आनन्द अपार ।

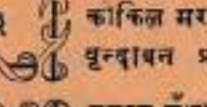

पद ५

बसन्त में कन्त बिना को रहै री, सोचि बिचारि देखो किन बौरी ।
फूलि फूलि द्रुम लता लपटि रहे नैंकु कुञ्ज तन लखि मन दौरी ।
इहि समैं मान सिखावै जो कोऊ है निहचै वह तेरोई बैरी ।
चलि हठु तजि बलि जांनि कह्यौ मो वृन्दावन प्रभु मिलि सुख लैरी ।

राग खट वा बसन्त-पद ६

देखो ब्रजराज सुत कियें नव साज सखी रमत वृन्दाबिपिन होरी ।
इनहिं सुबलादि संग बनें बहुरंग सनैं उतहि बनीं आलिन लियें राधे गोरी ।
पिचक की छिलकि रही चहुँ ओर घूरिकें परस्पर भिरत मिलि रंग धारा ।
मनहु सब दुख मदन मदन के दाम मैं छूटत अनुराग अगनित फुंहारा ।
कबहुं हरि घेरि मिलि लेति सब सुन्दरी कबहुं वृषभानु की कुँवरि बाला ।
वदन लिपटाइ मृगमद सुचन्दन दुहुंनि बोलि हो होरी सब देति ताला ।
बाल अरु लाल भये लाल गुल्लाल रंग बाढ़ि तिहि काल कछु छबि अपारा ।
मनहुं नहिं मात जो गात रुम रोम ते उमडि चली नेम तजि प्रेम धारा ।
जबहिं हरि भपटु कुट करन लागे बधू कानि गहि कनक के दंड धाई ।
मनहुँ चढ़ि दामिनिनि अगन सौदामिनी मुदित ह्वै श्याम घन घिरन आईं ।
लचकैं कच कुचनि कैं भार अति छिन कटि सारी सुनि भरि अति रूप भारा ।
चलत ताटंक अरू वंक अलकैं छुटी पर हरत अनि पर मोती होरा ।

बजत कल किंकिनी चरन नूपुर मधुर कर हरत विविध अंचल सुहाये।
मनहुँ चनि मैंन की सैंन हृगि पर चढ़ी बजत बाजे मनहुँ चानैं बनाये।
करन लगी मार पुनि उमंगि अति प्यार सौं ग्वार सुकुमार छल बल बचावैं।
लगति कोऊ कबहु जो कुटिल चितवनि सहित फूल सम मांनि बहु मोद पावैं।
कंज की धूरि अरु चूर करपुर को फिरत भरैं सकल अप अपनी झोरी।
परत सब खिरिकि कैं डगर अरु नगर मैं परस्पर करत झकझोरा झोरी।
गावैं सब नारि मिलि गारि बहु भांति की घर मगन पूरि रह्यो बहु गुलाला।
मदन मनों करन बस युवति जुव ग्रनति कौं डारयो परवीन अनुराग जाला।
धाइ पिय लाइ उर लेत बनितानि कौं प्रान सम पाइ न छोरत सुहावै।
(श्री) वृन्दावन प्रभु रसिक कुल मुकुट मनि देत फगुवाव जो जाहि भावै।

राग धनाश्री, विहागरौ वा काफी–पद ७

वै थोरी गोरी मिलि आईं होरी खेलन काज, प्यारे गोकुलचन्द सौं।
　　आईं उमड़ि सांवन सलिता लौं फोरि लाज की पाज।
सकल कला गुन रूप आगरी खट दश किये शिंगार।
　　सोहत मानौं कनक लता सी अलक अलिन कैं भार।
चौवा चन्दन अतर अरगजा भरैं कर कनक कमोरी।
　　पकरि पीत पट नटनागर को हंसि-हंसि परते दौरी।
केऊ भरैं रतन पिचक केशरि रंग तकि तकि मारत धारैं।
　　केऊ गोरी मुख सौं लपटावति केऊ देत कर तारें।
लाल गुलाल उड़ाय धूंधरी करि प्यारी भरि अंक।
　　कुगी झांक मांझ सोहत मनौं घन दामिनि निहसंक।
हेम पिचक भरि भरि लाये तब सखा लई तिय घेरी।
　　मारि धारि नाना रंग कीन्हौं जित तित दई बखेरी।
इतनैं रसिक शिरोमनि अपनौं मन भायौ करि लीन।
　　तब सब सिमिटि दौरि गिरिधर की मुरली लीनी छीन।
तब बोली तुम या मुरली को राखत है अभिमान।
　　इहि नाद सकल मोह्यो त्रिभुवन तुम लगे रहत है कान।
अबलौ हम तबही यह दैहैं परि दौ लाडिली पाईं।
　　करि बोल बचन लैहैं फगुवा मैं बांलि तिहारी माई।
यह सुनि गोप कोप सबहिन के मुख मृगमद लपटाये।
　　मानौं निकलंक शरद सुधानिधि मनैं बादर छाये।
विविध स्वांग धारि धरि आये जब ग्वाल बाल रंग भीनैं।
　　नारि गारि मिलि गांवन लागी मधुर घोर सुर कीनैं।
इहि विधि खेल मच्यौ वृन्दावन बढ़यो रस सिन्धु अगाधा।
　　वृन्दावन प्रभु राधा मोहन पूरी सबनि की साधा।

राग काफी
पद ८

बगर बगर खेलत फिरैं हो गोकुल नगर मंझार होरी सुन्दर सांवरो ।
घर घर ते बनि ठनि व्रज बनिता आइ खरी गृह द्वार ।
लै लै कर कंचन छरी भरी अधिक ही प्यार ।
इतते स्वांग विविधि करि करि कैं हरि संग आये ग्वार ।
धाय धाय युवती जन मोद सों करन लगी पुनि मार ।
उड़त गुलाल लाल भयो अम्बर प्रेम घटा मनों उठी अपार ।
दामिनि सी दमकति तिय तामें नाना किये शिंगार ।
बाजे बाजत गाजत है मानों सुन्दर शब्द सुतार ।
नाचत गुनिजन मोर मोद सों नैकु न रही सम्हार ।
पिचक छिड़क बरषत रसधारा भीजे सब इक बार ।
सबहिन मन आनन्द की बेली बढ़ती सही सुढार ।
चहुँदिशि ते आईं विधु बदनी घेरे नन्दकुमार ।
मनहुँ श्याम घन को पहिराओ पूरन चन्द्रनि हार ।
धाइ झपटि लइ लपटि सबै पुनि उपमा करत विचार ।
चहुँ दिशि तें मनौं कञ्चन बेली लपटो श्याम तमार ।
केऊ चन्दन लै मुख लपटावति केउ आंखि आंजति चन्दन ढार ।
केउ गुलचा दै दै झकझोरति फगुआ देउ हमार ।
केऊ करति मुरति मुरली की चोरी गौरी जुरी हजार ।
केउ प्यारी गारी मिलि गावति हो होरी बारम्बार ।
इहि विधि रसिक शिरोमनि व्रज में बरसत रस आसार ।
वृन्दावन प्रभु भक्त पपीहनि यहै प्रान आधार ।

पद ९

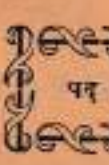

भली बनि आई आजु की होरी ।
इत नन्द नन्दन रसिक लाडिलो उत वृषभानु किशोरी ।
फैंट गुलाल भइ भेंट अचानक करैं झकझोरा झोरी ।
इत ए मृगमद मुख लपटावत वे मुख मंडित रोरी ।
ए अंगिया कस खोलत छांनें वे मुरली की चोरी ।
वृन्दावन प्रभु लेत बलैया चिरजीवो यह जोरी ।

राग बसन्त
पद १०

होरी मांझ भोरी कोऊ भोरी बिन रहत है ।
ठौर ठौर नर नारि गावत धमारि गारि इहि बिधु दम्पति रस सम्पति लहत है ।
तैं तो तहां मान ठान्यौं मोतिन कैं मन मान्यौं देखि देखि सखिनको दहति है ।
वृन्दावन प्रभु बैठे देखत हैं मग तेरी तू तो न चलत न कछु जिय की कहति है ।

पद ११

ख्याल में लाल बुरी गति मानौं या मैं तो एक है रंक की रानौं।
होरी में भोरी है गौरी सबै जु सयानौं सोऊ हूँ जात अयानौं।
आव की लाँघ उघारे तें आव कौं लाज यहै जग में उप खानौं।
सोतो इहाँ नरनारि करैं जु जितो इति तो अधि को गुन जानौं।
बहुतैं दिन नारि भिजाईं खिजाईं सुनांहि बनैं अब लौं दियैं कानौं।
वृन्दावन प्रभु आजु भिजाइ है आनि परयौ इन सौं अब पानौं।

पद १२

आखिन लाल गुलाल न डारौ कौन सुभाव परयौ है तिहारौ।
काहे करौ छल छिद्र इतौ अब निशंक ह्वै क्यौं न प्यारौ निहारौ।
बहुतेरौ करैं जु न ऐसे इतौ सु करै कहा चित रहै न हमारौ।
वृन्दावन प्रभु बहु नाइक हौं मन तो अपनौं करि राख्यौ है पारौ।

पद १३

खेलत फाग सुहाग भरी अनुराग भरे बड़भाग पिया सौं।
थाल गुलाल लै लाल पै डारैं निहाल ह्वै लाल लगावैं हिया सौं।
पिय केशर की पिचकी भरि डारत सींचत मानौं सनेह जिया सौं।
वृन्दावन प्रभु दम्पति छबि देखैं रति कौन करैं रति काम छिया सौं।

राग काफी
पद १४

हो होरी खेलौंगी श्याम सुजान सौं गुणगण रूप निधान सौं।
चोवा चन्दन अतर अरगजा बरषौंगी बहुमान सौं।
बाजत ताल मृदङ्ग चङ्ग मन अटक्यौ मुरली तान सौं।
निशंक हँसौ सब लोक सखी री काम कहा मोहि आन सौं।
याही मिस भेटौंगी सजनी (श्री) वृन्दावन प्रभु प्रान सौं।

पद १५

चलौ री री चलौ खेलैं गुपाल सौं, सुन्दर नैंन बिसाल सौं।
साजि नव सत अभरन अंबर बर भरिभरि फैंट गुलाल सौं।
केऊ चलैं ऐंड़ैं बनि ठनि मद गयन्द की चाल सौं।
वृन्दावन प्रभु ह्वै हैं सखा संग तौरे मनौं इक डाल सौं।

राग बसन्त
पद १६

चलौ चलौ खेलैं री ब्रज को खोरि खरे गुपाल।
बनि बनि सब गोपी इक डारकी सी तोरी झोरी भरिभरि लेहु गुलाल।
उत हलधर श्रीदाम सुदामा सहित सकल सजि आये ग्वाल।
वृन्दावन प्रभु सुख मौंड छाँडि हैं इक मनि ह्वैं दै दै अंक माल।

पद १७

खेलन लागी बिहारी सौं प्यारी लागि रही तन सु सुख सारी।
थाइ गुपाल लाल केशरि रंग भरिमारी पिचकारी।
मृदु मुसुकाय गुलाल थाल भरि बाल लाल पर डारी।
टोलनि टोलनि निकसि घोष ते गावत गारी मिलि नारी।
केऊ मुखरा पट पीताम्बर लै दई गाँठि जां नैंन बिहारी।

केऊ कहैं हा होरी देखी भली बनी यह पारी।
चन्दन लाइ श्याम मुख सब ही देन लगी कर तारी।
श्याम सखा सबहिन मुख चोवा लपटायो भरि भरि अँक बारी।
लै लै हेम दण्ड हू चहूँ दिशि खिजि गहि हरि शिर कुंकुम ढारी।
वृन्दावन प्रभु फगुवा दै छूटे ही आनि बनी हमरो अब बारी।

राग बसन्त
पद १८

खेलत फाग दोऊ रस भीनें, रंग गुलाल रह्यो छाई।
हास अबीर परस्पर बरषत शुचि चोवा लपटाई।
बोलनि मधुर बीन धुनि भाजैं बाजैं कल भूषन अंग।
मृगमद अगर जवादि कुंकुमा किल किंचित बहु रंग।
छूटत पिचक कटाच्छ चहूँ दिशि भरी (है) अधिक अनुराग।
वृन्दावन प्रभु को सुख निरखत ललितादिक बडभाग।

राग खम्मावती
पद १९

खेलत होरी किशोर किशोरी जू संग सखा सखी वृन्द लियैं।
अबीर गुलाल उड़ावत गावत स्वांग किते बहु भांति कियैं।
भरि केशरि पिचकारी बिहारी पियारी उरोजनि पैं तकि मारैं।
संभूकी सींचैं सनेह भरे अरविन्द मनौं मकरन्द की धारैं।
बाल गुलालनि मूठि भरैं हँसि गारि दै लाल गुपाल मैं मेलैं।
श्याम तमाल कौं हेम लता सु मनों अनुराग पराग सौं रेलैं।
केउ दौरि गोविन्द को अंचर छोर गहै हठि क्यौंहू छुरायो न छोरैं।
देउ कहैं फगुवा भगुवा हमैं दैदै बधू गुलचा कक कोरैं।
केउ निशंक ह्वै कुंकुम पंक मयंक मुखो मुख सौं लै लगावैं।
केउ गहि काहू को अंचर बाल पिताम्बर अंचर सौं हँसि जोरत।
केउ भरि कंचन की गगरी डगरी डगरी पगरी पर ढोरत।
गावति गारि केऊ मिलि नारि मुरारि सखा सुनि त्यौं त्यौं हँसैं।
मुसुकानि बिलोकनि बोलनि मैं दुहुँ घां सरसैं रस ही बरषैं।
केऊ मोद सौं आइ कैं मादक माल चै नैन विशाल गरैं गहि डारैं।
ग्वाल सबै कलयन्त्रनि मारि तबै तहां वे तरुनीनि निवारैं।
औंधें की कीच मची रपटैं झपटैं डपटैं सखी श्याम सखारी।
वृन्दावन प्रभु दम्पति पैं रति काम की सम्पति कोटिक वारी।

राग हिंडोल
पद २०

गोकुल की गलिन मैं ग्वाल नन्दलाल बाल मोहिन भरैं गुलाल खेलत हैं फाग री।
बनें चोरैं बागैं देखैं दृगन के दुःख भागैं लागैं अति प्यारे श्याम बांधैं पीत पागरी।
डगर बगर घर घर अटारी अटा आटि भये लाल सब बन बाग री।
अतर अरगजा। चोवन केशरि की कीच मची भरि भरि डारैं शिर कंचन की गागरी।

जिनपर वारी सु नारी और को विचारी गावैं मिलि गारी प्यारी प्यारी बड़भाग री ।
वृन्दावन प्रभु देत फगुवा मिठाई मेवा भूषन वसन वर भीनें अनुराग री ।

राग बसन्त
पद २१

खेलत रघुवर राज समाज सौं आजु अवध मधि फाग ।
संग सखा अरु अनुज रंग भरे अनुचर भरे अनुराग ।
महँ रघुचन्द गयन्द्नि चारधौं उपमा कहत सकात ।
शीश धरें विधु घन दामिनि मनौं चढ़े घनन पर जात ।
पीत बरन वागैं अनुरागैं लागैं परम सुहाये ।
मनहुँ काम अभिराम रस पोषत चतुर व्यूह ह्वै आये ।
जगमगात अंगनि नग भूषन छवि की उठत तरंग ।
तन मन नैन बैन सबही की निरखि होत गति पंग ।
गज रथ अश्व पदाति भाँति बहु सजि ठाढ़े चहुँ ओर ।
बीथनि बीथनि खेल मच्यो हो होरो दशौं दिशि शोर ।
पुर वनिता वनि वनि जु अटनि पर लियें कनक पिचकाई ।
मारत तकि तकि राजकुमारनि छवि सों झरोखनि देत दिखाई ।
मढ़ैं आभरन पटदश वै सबै रूप की राशी ।
रति रम्भा उरवशी-सुकेशी लजत होति जिन दासी ।
छत ते छुटत गुलालन मूंठी लगति वधुनि मुख आई ।
मनौं परिपूरन चंदनि संध्या रही ललाई छाई ।
सूझत नाहिन कोऊ काहु कौं छाइ गयो गगनि गुलाल ।
भई एक रंग सब चतुरंगनि लाल भये सबही लाल ।
बाजत बाजे गाजत घन ज्यौं गुनी करत सब गांन ।
हयगय रथ मोती मानिक मनि वकसत परम सुजान ।
गावति गारि नारि रस भीनी हंसत सकल रघुवीर ।
वृन्दावन प्रभु देत जु फगुवा मनि मेवा वर चीर ।

राग धनाश्री
पद २२

खेलत होरी गुरुजन चोरी पिय संग गोरी—
रति रस बोरी बयस किशोरी हरि मन बन्धन डोरी ।
चूका रोरी भरि भरि झोरी कनक कमोरी केशरि घोरी ।
बिलसी सुख जोरी ब्रज की खोरी वृन्दावन वारत तृन तोरी ।

राग सारंग
पद २३

हो हो हरि भले अकेले पाये ।
बहुत दिनां तुम भाजि छुटे हो आजु करें मन भाये ।
देखो तुम्हैं भडुआ कार छोरैं जैसे गीतनि गाये ।
वृन्दावन प्रभु लैहैं बदलो हमें तुम नाच नचाये ।

अथ डोल राग सोहनी पद २४

झूलत दोऊ विहारी विहारिनि कालिन्दी के कूल ।
डोलाकृति द्वै लगे कल्प तरु मणिमय फल पल्लव अरु फूल ।
दुहुँ दिशि कनक लता डोरी ज्यौं लागी परम सुहाई ।
तामैं लपटि लता नाना मणि पटुली रुचिर बनाई ।
बोलत मधुर विविध पंछी अलि गुञ्जत कुञ्ज रसाल ।
गावति झोटा देत द्वैन सौं वृन्दावन प्रभु कौं व्रजबाल ।

फूलडोल—राग धनाश्री ॥ पद २५ ॥

झूलत फूले फूल कैं डोल । नानाविधि फूलन भूषन फूलनि गूँथे विमल निचोल ।
फूली मंजु कुञ्ज कालिन्दी कूल फूलके महल अमोल । फूली फूली सखी झुलावति वृन्दावन गावत पिकटोल ।

गुप्त गौरी पूजन राग गौरी पद २६

गोरी पूजन आई गोरी भोरी भोरी वय थोरी ।
नाना विधि भूषन पट पहिरैं अरु लियें तिलक ललाटनि रोरी ।
अंजन रंजित खंजन से दृग रूप सुधा रस बोरी ।
वृन्दावन प्रभु कुटिल कटाछनि वश कीनैं बरजोरी ।

राग ईमन पद २७

झूलत दोऊ परस्पर हिय आँगन ।
प्रनय प्रेम खम्भ लज्जा मर्यादि तामैं डोरी आसक्तन ।
पन पटुली आनन्द झोटा देति रति सखी जन ।
वृन्दावन प्रभु प्यारी विहारी सुख विलसत एकैं प्रान द्वै हैं तन ।

अक्षय तृतीया—राग सारंग ॥ पद २८ ॥

द्वापर जुग की आदि तिथि अलबेलो हरि राई ।
प्यारी सहित राजत मन्दिर में पहिरैं मलय मय बसन आंवले फूलनि माल बनाई ।
शिख नख ते मोतिन मोतिन भूषन मुख अद्भुत शोभा होत ।
नाना विधि शीतल सामग्री धरी जु आनि अनन्त । चन्दनसैं छिरकैं खस पंखा चहुँ दिश करन ।
करपूरादिक जुत बीरीभरि डबा निवेदन कीन । वृन्दावन प्रभु की छविदेखैं भयो हियो शीतल सबही न

राग टोडी पद २९

अखै तृतीया त्रेता जुगादि तिथि चन्दनी बागो पहिरैं नन्द नन्दन जग वन्दन ।
तैसी ये पाग पीत पटुका पुनि तैसोई उपरैंना दुख कन्दन ।
नानाविधि शीतल भोग पुहुप माल उशीरन के पंखा होत छिरकै सुगंध चन्दन ।
वृन्दावन प्रभु प्यारी विहारी निजजननि को हियो सिरावत पूरत मन स्यन्दन ।

जलक्रीडा रागखट पूरवी-पद ३०

करत जल केलि गोविन्द व्रज सुन्दरी वहि समै उचित सोई वेश कियैं ।
सघन अरविन्द वन रमत अति मोद सौं मनहुँ मदकलकलभ करिणी लियैं ।
छिरकैं सब श्याम कौं बाम चहुँदिशि भई परमरस मगी छवि अधिक पावैं ।
मनहुँ घन नील कौं घेरि सौदामिनी कमल सम्पुटनि भरि भरि नहावैं ।
बूडि वनिता यमुना जल हि में आइकैं परसि पिय पांय कहुँ जाय निकसैं ।
सघन घन आवली फारि मनौं विधुनिकर आप अपनी चौंप चहुँ ओर विकसैं ।

एक ही बेर हरि हरिन नैंनी कबहुं दौड परे मोद भरे पैरैं आछैं ।
मेघ पुर मेघ आरुढ ह्वै खेल मनों करत चपला चमूं लियें पाछैं ।
चूमत सुकुमार बड़े बार तिय बदन पर अमृत की धार मनों श्रवत चन्दा ।
निरखि अनिमेष ह्वै रहत (श्री) वृन्दावन प्रभु पिय नयन तृषत चकोर द्वन्दा ।

रथयात्रा
राग टोडी
पद ३१

प्यारी के मनोरथ रथ बैठे लाल बिहारी, कुंजनि कुंजनि करत क्रीडारी ।
बेग चपलाई हय चौंप चाहि चक्र उभै रुचि नेम धुरि दोऊ गाढी हैं महारी ।
लाज राशि भाव जूवा बांध्यो नारी लगनि दृढ़प्रेम दुरी सारथी प्रवीन वे बिहारी ।
वृन्दावनप्रभु नानागति सातिक सनेह पंथ तामें मान आरूढ़ी प्रनय राग गहारी ।

राग धनाश्री
पद ३२

पौढे योग की नींद मुरारी, दुग्ध फेन सम सेज संवारी ।
सुदि अषाढ़ एकादशी तिथि नक्षत्र शुभकारी ।
सब सेवा विधि करि पौढाए श्रम शेष त्रिपुरारी ।
चरन पलोटति कमला देवी तीन लोक महतारी ।
शेष सहस फन मनि दीपक दुति जगमग जगमग भारी ।
वृन्दावन प्रभु कहा बरनों छवि बानी बरनत हारी ।

राग गौडमल्हार
पद ३३

सब सुखदाई पावस रितु दामिनि कामिनि कीनों अभिसार ।
बादर आदर करि आंकों भरि लीनी बहौत दिन के बिछुरे,
मिले दम्पति पिक चातकी भौंरी गावै मंगल चार ।
हठ तजि चलि मोहन सों मान करि वे की इह कौन बार ।
बैठे मग देखत ह्वै हैं जे री ही (श्री) वृन्दावन प्रभु नन्दकुमार ।

पद ३४

आयो आयो आगम ऋतुराज गुनीजन समाज लियें संग ।
चपला चातुरि पातुरि नाचत गति भेदनि मुदित मृदंग ।
बपदत चकोर भौंर सुर धारी भारी बीच बीच नाचत मोर नटुआ सुघंग ।
वृन्दावनप्रभु प्यारो बिहारी उठि देखौ छवि सघन बन कुञ्ज कुञ्ज बरसत अतिरंग ।

राग मल्हार
पद ३५

चढ़ि आयो आगम नृप अकाल बैरी पर
गरजनि बाजत निशान इन्द्र धनुक लियें पानि धुरवागन एई भये सर ।
कारे घन मतवारे कुञ्जर बलाकादंत ओला गोलर सम तेग लांडतबर ।
वृन्दावन प्रभु प्यारी बिहारी उठि देखौ छवि सघन बन कुञ्ज कुञ्ज बरसत अति रंग।

॥ पद ३६ ॥

आई पावस ऋतु घनघोरैं, थोरैं थोरैं मानौं मानिनीन कौं निहोरैं ।
हरो भरो भूमि पर इन्दु बधू गन देखत ह्वां चित चोरैं ।
ऐसे में सजि प्यारी सारी कसुम्भत चढ़ि ठाढी अटारी कारी कञ्चुकी तन गोरैं ।
वृन्दावन प्रभु ओट भयें छवि देखि देखि तिन तोरैं ।

पद ३७

ओइरि आई श्याम घटा, चहुँ दिशि लगी सुहाई। नान्ही नान्ही बूंदनि-
रिमि झिमि बरसत, तैसिय कौंधनि छवि सौं छटा।
श्यामांश्याम प्रेम मदमाते चढ़ि ठाढ़े अप अपनी अटा।
वृन्दावन प्रभु लायो कटा छनि इत नागरि उत नागर नटा।

पद ३८

ठाढ़े दोऊ सघन कुञ्ज की छैंय्यां।
बड़ी बड़ी बूंदनि बरसत बादर भेजि रहे गर बहियां।
बहुत दिननि के बिछुरे बातनि करत हुती जे मन महियां।
(श्री) वृन्दावन प्रभु चाहत है नित ऐसी बनें बिधि कहियां।

पद ३९

बैठे सखी श्यामां श्याम अटारी।
करत परस्पर मोद भरे दोऊ रति बिनोद की बातैं,
गरजि गरजि बरसति बड़ी बूंदें चहुँ दिशा श्याम घटा री।
पीत बसन घन सुन्दर पहिरें दामिनि दुति भामिनी सुही सारी।
लहँगा छापदार हरियारी सुन्दरी कीर कंचुकी कारी।
चकोर सोर चहुँ ओर करत मिलि पिय पिक करत पपीहा भारी।
कहति किशोरी नव किशोर सौं यों हम रटत तुम्हें गिरधारी।
हरित भूमि जहां झुमि रहे घन नचत मोर लखि लखि निज ना(हा)री।
वृन्दावन प्रभु कहत प्रेम वश यों तुम हमहिं नचावत प्यारी।

पद ४०

गरजत घन सघन बन छोटी छोटी बूंदनि बरसि बरसि।
तहां बैठे करें बातें छवि छाके श्यामां श्याम रूप परस्पर दरशि दरशि।
सोहैं सूहे बसन पर फबतेई अभरन हरें श्रम त्रिगुन पवन परसि परसि।
चहुँ ओर मोर नृत्य करत चकोर सोर पीव पीव रटत पपीहा सरसि सरसि।
हरी भरी दुब पर इन्दु बधू ठौर ठौर पहिरी मनों भूमि हरी चूनरी तरसि तरसि।
सब गुननि आगर गावत मलार लेत श्रीवृन्दावन प्रभु तान अरसि अरसि।

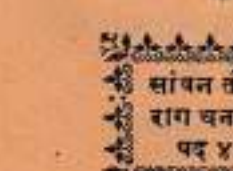

सावन तीज, राग धनाश्री
पद ४१

चली हैं हिंडोरें जुरि मिलि झूलन। बनि बनि गोप किशोरी दूलन।
करि करि मंजन दै दै अंजन रंग रंग पहिरें दुकूलन।
गावत गीत मीत रस पागी दये भुजा भुज मूलन।
मद गज गति रति पति मदमाती हसत लसत मनों बरसत फूलन।
सुर नर नाग असुर किन्नर हू बनिता जिन सम तूलन।
वृन्दावन प्रभु रस बस कीनें नैंन सैंन शर ऊलन।

राग त्रिवनगोरी
पद ४२

बरसानें की बनि बनि बाला निकसी खेलन काज।
तिन मधि अति राजति श्रीराधा ज्यौं तारनि उडु राज।
लहँगा हरे कसूम्भका सारी कुन्दन से तन कंचुकी श्याम।
शिख नख ते भूषन नाना बिधि रचि पचि कें पहिरे अभिराम।

हरित भूमि जहां झूमि रहे घन तहां ठाढी रही आय ।
    फूली मानहुं मदन भूप की गुलदवाँस फुलवाय ।
रचे हिंडौर सालैं मनभातैं चन्दन के जु सुतार ।
    थाइ थाइ तहां झूलति गावति घोर मन्द्र मिलि तार ।
मचकि मचकि झूलन लगी होडा होडी चढी जु कांति ।
    मन हूं गगन ते दामिनि भू पर आय आय फिरि जांति ।
तैसी ये फूली मांज सुहाई तीज मनौं धरि आई रूप ।
    चातक मुख पीव पीव बोलि मनौं कहत संकेत अनूप ।
सुनि सुनि ताल बँधान गांन धुनि थिर चर गति भई और ।
    सुर किन्नर गन्धर्व वधुनि कैं रहि न गर्व कौं ठौर ।
वहि औसर नन्दनन्दन बनि ठनि आये सखानि लियें संग ।
    लखि सबहिन आनन्द उदधि बढी उठी अनंग तरंग ।
निरखि छबीलिन छकैं लाल हू नैंकु न रही सम्हार ।
    वृन्दावन प्रभु पूरे मनोरथ बरसि कटाछनि धार ।

राग कनडी
पद ४३

गोकुल चन्द हिंडोलैं झूलत फुलत लखि लखि प्यारी जू ।
    पहिरैं बसन सुरंग सुहाये अंग अंग छबि न्यारी जू ।
कंचन खम्भ खचित नाना नग तैसो ये बनो मयारी जू ।
    डांडी जटित हरित मनि मनिमय नाचत पिक शुकसारी जू ।
ललितादिक लियें संग सहेली झूलवति बारी बारी जू ।
    सांवन मनभावन सब पिव पिव रटत पपीहा भारी जू ।
झुंडनि झुंडनि गावत राग मलार मिली ब्रजनारी जू ।
    कुंज कुंज अलि पुंज गुंज सुर देत मनौं सुरधारी जू ।
नाचत मोर किशोर चहुँ दिश दीशति भूमि हरयारी जू ।
    वृन्दावन प्रभु प्रफुलित वृन्दावन देखि देखि गिरधारी जू ।

राग मलार
पद ४४

हिंडोरैं झूलति मचकि मचकि । पिय प्यारे के संग ।
    नील पीत पट फर हरात अरु आन छीन कटि लचकि लचकि ।
गावत राग मलार मधुर सुर लेत तान अति हरषि हरषि ।
    वृन्दावन प्रभु की छवि निरखत गरजत घन धन बरषि बरषि ।

राग मलार ॥ पद ४५ ॥

पवित्रा पहिरावौ हरि कौं होइ पवित्र । सावन सुदि एकादशी गावौ कृष्ण चरित्र ।
बरस दौस पूजा सब कीनी याते पूरा होत । पाप वृंद अरि जात है दिन दिन भक्ति उदोत ।
नाना विधि भोजन सामिग्री करी निवेदन ल्याइ । करी प्रसाद सेवन दूजै दिन, वृन्दावन प्रभ भक्त बुलाई ।

राखी, राग मलार पद ४६

आजु सखी सांवन पून्यौं सुहाई, घर घर बजत बधाई।
राखी बांधन नन्द सुवन के विप्र सवासनि आई।
हेमथाल मधि श्री फल रोरी मोती-अच्छत बीरा मिठाई।
वृन्दावन प्रभु भूषन अम्बर यथा योग्य पहिराई।

राग ललित पद ४७

भादौं सुदि एकादशी लई करोट हरिराई।
तिहुँ पुर जै जै धुनि भई बाजे उठे बधाई।
गीत महोत्सव करि महा षोडश विधि पूजा करैं।
वृन्दावन प्रभु जगतपति जनम मरन ताके हरैं।

पद ४८

अनन्त व्रत कियें तैं अनन्त फल पाइये।
गावत अनन्त गुन मुनि जन सन्त जाकौ रमा कन्त सत्या जाको रेह दरसाइये।
जगर मगर होति अनन्त फन मनि जोति वाही ते दशों दिश तिमिर नशाइये।
वृन्दावन तुम पास मागत इहु पूरो आस जनम जनम गोपाल गुन गाइये।

अथ सांझी, राग शुद्धकल्यान पद ४९

आवति सांझ समैं सजनीन कौं संग लियें वृषभानु किसोरी।
सांझी के पूजन कौं लियें फूलनि बीन भरे अप अपनी झोरी।
हेम वरा गजरा गज मोतीन पोति हरा हरि की मति चोरी।
भरैं बहु नेवज सी नटरा धरैं अंजन चन्दन वन्दन रोरी।
सजैं कसुम्भल सारी सुरंगरु राजैं हरी अंगियां तन गोरी।
वृन्दावन प्रभु सौं मांगति नेह पसारि पसारि दुहुं कर जोरी।

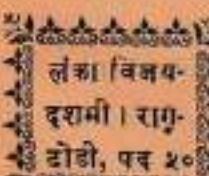

लंका विजय-दशमी। राग-टोडी, पद ५०

आजु चढ़े रघुवंशभान अगडधी अगडधी बाजे निशान।
तिहुं लोक सुन्यौं सुर भये अशोक, हलि कंपि उठयो लंकेश रान।
श्याम गौर अभिराम धाम शिर जटा मुकुट कर चाप बान।
षट तीन पद्म कपि सैंन संग तिन अग्र सुभट हनुमान जांन।
चली उदधि सेतु पर करत केलि उलटयो उदधि परमानौं उदन्वान।
(श्री) वृन्दावन प्रभु जीति दशानन थाप्यो विभीषन कृपा निधान।

दिपावली राग कल्यान पद ५१

आजु दिवाली को दिन नी कौ।
आंगन आंगन चौक चहुँ दिश दीपदान बन्यौं घी को।
सदन सुनाना चित्रनि चित्रे वदन मुदित सबही को।
पान मिठाई मेवा इतरनि भरयो मन मान्यौं जी को।
खेलत निज निज अटनि जुवां सुव युगल मिल्यौ ती पी कौ।
बदत जुवाजी राजी व्हैं कैं अंकमाल भरिवी को।
गावति मंगल गीत मीत सौं जिहिं विधि लगनि लगी को।
वृन्दावन प्रभु को सुख निरखत गन ललितादि सखी को।

राग गौरी
पद ५२

आजु बड़ौ त्यौंहार दिवारी, ब्रज में अति याकी महिमा री।
चौकनि चौकनि चौक बनें घनें घर घर बन्दन माला री॥
घर बाहर नाना रंग फानुस दीपनि की द्युति भारी।
कहा बरनौं अति अद्भुत शोभा रतन जटित मनौं पुर रचना री॥
सजैं अमोल आभरन अंबर सब वृद्धा जुवती बाला री।
जा विधि विप्र करावति पूजा ठौर ठौर पूजत कमला री॥
द्वार द्वार बाजत हैं बाजे खेलत नर अरु नारि जुआ री।
ग्वाल बाल लियें गोधन गारी बगर बगर गावत गिरिधारी॥
गोरी दौरी फिरत उछाह में मनौं कौंधति चपला री।
भूलिजात सब निज सुभाव गति विवश होत लखि नन्दलला री॥
उन सट पट लखि नट नागर हू रहत थकित ह्वै कहूँ कहा री।
दृग दृग मन मन दौरि मिलैं तन तरसैं परसन काज महा री॥
लै लै दौरति पान मिठाई परसन की उत्कण्ठा री।
इहि मिस निश पूरत जु मनोरथ वृन्दावन प्रभु अरु प्यारी॥

श्रीगोवर्द्धनोद्धरण राग खट ॥ ५३ ॥

आजु ब्रजराज सुत धर्यो गिरिराज कर हर्यौ सुर राज को गरब भारी।
बरसि महा प्रलय जल, दई न कल एक पल, मेघ माला सकल दिन सात हारी॥
चमकैं विद्युत छटा, महा माई घटा, घटकैं गिरि घटा पर मनहुँ न्यारी।
ह्वै कैं रिस गगन तें कुलिश डारे अगन मगन रहे सब सुगई कनिका न टारी॥
कृपामय राखे पशु पंछि नन्दजन सुरच्छ गोप गोवच्छ गन निपट हितकारी।
वृन्दावन प्रभु जानि आनि परचा पाई गिरिधारी भयो नाम तब तैं बिहारी॥

पद ५४

बलि कीनी मनैं बलबीर जबैं सु कियो तब कोप सची वर री।
दिन सात चलाई कैं वात मढाई लगायो तहां अति झर री॥
उपमा इक अद्भुत ऐसी बनी गिरिवार्य उठाइ लयो कर री।
गिरि पैं घन बैठत हे जु सुनें घनश्याम पै देख्यो मही-धर री॥
पशु पंछी कुतूहल कीयो करें रहे गोपन गोप उहीं तर री।
पछिताइ कैं आइकें पीछे तें पांय पर्यो श्रीवृन्दावनप्रभु कै डर री॥

पद ५५

हरि की हरि औगुन गुन मान्यौं।
झरि लगाइ दिन सात आइ हठि बरष्यो महाप्रलय को पान्यौं॥
इहि मिस गुरुजन लाज काज तजि सब मिलि गोप कुंवारि।
इहि रस बस जान्यौं न भार कछु गिरि राख्यो कर धारि॥
जानि बूझि गोपाल लाल गिरि गिरथो जनु यौं कर देत झुलाइ।
जुवती-जन मैं मानि कानि तजि लपटैं श्याम उर आइ॥

हीत महा आनन्द परस्पर ज्यौं निधि पाये रंक ।
मनहुं श्याम घन कौं लपटानी चपला दौरि निशंक ॥
पीछे सकुचि समुझि हरि उरते नीठि जुदी ह्वै जाति ।
लेत बलैया दूती लखि मुख अंचर दै मुसकाति ॥
इहि विधि पूरि मनोरथ सब कै पधरौ गिरिवर निज ठौर ।
वृन्दावन प्रभु पौढ़ आइ परयौ लै सुरभी देवनि शिर-मौर ॥

राग धनाश्री
पद ५५

कार्ती सुदी एकादशी जागे त्रिभुवन राई ।
तिहूँ लोक पूजा करि गाले विविध बजाई ॥
अन्न चतुर विधि जिते जहां कहूँ उपजे शुद्ध नवीनैं ।
यथा शक्ति सब आनि आनिकैं तितै निवेदन कीनैं ॥
योग यज्ञ तप तीरथ व्रत व्याह काज सब कर्मं ।
प्रभु जागैं जागे सबै वर्णाश्रम के धर्मं ॥
भयो बधाइ ब्रह्माण्ड सकल में दीप दान सब कीन ।
गाये मंगल गीत मधुर सुर पाप तिमिर भये छीन ॥
हरि सेवा बिन वृथा सबै हैं यह समुझो सब कोइ ।
वृन्दावन प्रभु भक्ति करौ मिलि भाग भलौ जो होइ ॥

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा वसन्त उत्सवादि वर्णन घाट नवम ॥

❀ अथ दशम घाट ❀

॥ दोहा ॥

नाम चरित गुन कृष्ण के ऊंचे सुर जु कहन्त । उहु कहियतु हैं कीरतन करत सु सन्त महन्त ॥१॥
नित्य कृत्य उन को सु यह जेई हरि के दास । श्रीमुख नारद सौं कही जहांइ मेरौ वास ॥२॥
कलियुगमें इह मुख्य है अन साधन कोऊ नाहिं । और ठौर ठहरैं न कहुँ चित्त वृत्ति डिगि जांहि ॥३॥

पद ४

राम कृष्ण केशव हरिगावो, मन माधव पद लै उरझावो ।
झांझ ताल मिरदंग बजावो तनु तरुते अघ विहँग उड़ावो ॥
निन्दक जनते कछु न सकावो, गोविन्द आगैं तनहिं नचावो ।
निति प्रति श्रीयमुना में न्हावो, महा प्रसाद यथा रुचि पावो ॥
अपनैं जांनि न काहु सतावो, परमारथ तन मन दै धावो ।
हरि परिकर राखत जो दावो, बसो (श्री) वृन्दावन व्रज में भावो ॥

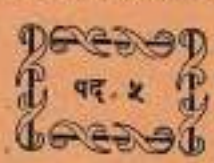

पद ५

गोविन्द अच्युत राधा माधौ, भव भेषज साधौ यह माधौ।
इह नर-देह पोत है लाधौ, जग जलनिधि किन तरौ अगाधौ।
अधम अजामिल तयौ जु आधो, सोऊ भवरव ताव न दाधो।
हरि बिन और सबै है बाधौ, सब तजि (श्री) वृन्दावन प्रभु आराधौ।

पद ६

लैलै रे लैलै हरि नाम ये दिन क्यौं खोवत बे काम।
आव घटत पल घटिका जांम, इन्द्रिन मुख दै ज्ञान लगाम॥
संग न चलि है ये धन धाम, मरैं न कोऊ ह्वै हैं वाम।
अन्त समै रच्छक हैं राम, हिय तैं खोलि कुमति की खांम॥
मानि कह्यौ मो उदर गुलाम, सुगम उपाय लगै नहि दाम।
शरण गहैं न लगै भव घाम, वृन्दावनप्रभु भजि घनश्याम॥

पद ७

जो हरि नाम बिसारैगो सो जीती बाजी हारैगो।
यह नर देह पुण्य सौं पाई, गैन जौन पुनि जैहैं भाई॥
नाम नामी में करैं जु भेद, तेहैं जमपुर जाइ लखेद।
नाम लेत नामी की निन्दा, करै सुनीच जगत में गन्दा॥
सच्चिदानन्द रूप है नामी, विधि शिव शेष सुरेश को स्वामी।
तीन लोक रचना जिन ठानी, भक्तन हित ब्रज में रुचि मांनी॥
वहां निरन्तर करत विहार, जाको निगमन पावत पार।
परम पुरुष नर वर वपुधारी, वही नन्दसुत कुञ्जबिहारी।
जन्म कर्म मेरे हैं दिव्य, जानत हैं पंडित जे भव्य।
भवसागर सौं तिन्हैं उधारौं, विमुखन असुर जौनि में डारो॥
परे रहैं नरकनि में सदा, जुगयुग में निकसैं नहिं कदा।
नित्य बद्ध वै जीव कहावैं, जे भौतिक सो तनहिं बनावैं॥
श्रीमुख श्रीगीता में ऐसैं, कह्यौ सुनि लीजयो आस्तिक तैसैं।
हरि बिनु मुक्ति नहीं यह जानौं, निशिदिन रटत सुवेद पुरानौं॥
तातैं और कहूं मति धावौ, श्रीवृन्दावन प्रभु कौं नित गावौ।

पद ८

राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे गोविन्द, राधे कृष्ण राधे कृष्ण गोकुलचन्द।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण मदन गोपाल, राधे कृष्ण राधे कृष्ण गिरिधर लाल॥
राधे कृष्ण राधे कृष्ण गोपीनाथ, राधे कृष्ण राधे कृष्ण मंगल गाथ।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण श्यामा श्याम, राधे कृष्ण राधे कृष्ण मंगल नाम॥
राधे कृष्ण राधे कृष्ण युगल किशोर, राधे कृष्ण राधे कृष्ण माखन चोर।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण बंक बिहारी, राधे कृष्ण राधे कृष्ण गोधन चारी॥
राधे कृष्ण राधे कृष्ण काली मरदन, राधे कृष्ण राधे कृष्ण विष्णु जनारदन।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधा बल्लभ, राधा रमन भक्ति करि सुलभ॥

राधे कृष्ण राधे कृष्ण श्रीहरि देव, श्री मथुरा केशव की सेव।
राधे कृष्ण राधे कृष्ण दानी राइ, श्रीवृन्दावन बलि बलि जाइ ॥

पद ८

गोविंदैं गोविंदैं गोविंदैं गावौ, निशि वासर साधौ यह साधौ।
चढ़ि बिमान बैकुण्ठ गयो उठि, अधम अजामिल लयोजु आधौ।
भागीरथी प्रवाह जाहि जो, जगत दवानल दाधौ।
यह तजि भजै बिषै जो कोऊ, छांड़ि सुधा बिष राधौ।
इहि रस पग्यो जु साधु शिरोमनि, ताको मतौ अगाधौ।
योग यज्ञ तप तीरथ संयम, ब्रत या बिन सब बाधौ।
राम कृष्ण केशव करुणामय कह्यो तिनहिं जग में यश लाधौ।
और आल जंजाल सकल तजि (श्री) वृन्दावन प्रभु को आराधौ।

पद ९

भामा धव माधव रुक्मी धव राधा धव मामव गोविन्द।
दामोदर गिरिधर विश्वम्भर सुन्दर वर नर कृष्ण मुकुन्द।
जितदूषण वल्लव कुल भूषण गोपीजन मानस कलहंस भामाधव माधव ' जतकंस।
भव भावन भय हर करुणा मय केशव नवं कमनीय किशोर, भामाधव माधव दधि चौर।
भव मोचन सरसीरुहलोचन गोरोचन चित्रित वर भाल, भामाधव मामव मामव गोपाल।
यमुनातट वंशीवट मुरली कलकूजित मोहित ब्रह्मेश, भामाधव मामव वरवेश।
मीन रूप कच्छप धरणी धर नर मृगेश वामन भृगुवंश्य, भामाधव मामव भवशंस्य।
रघु कुल कमल दिवा कर हल धर शुद्ध बुद्ध कल्किन् हृत भार, भामाधव मामव दृत दार।
नव जल धर विग्रह नारायण गरुडध्वज श्री वृन्दावनचन्द, भामाधव मामव गोविन्द।

दो०-इन्दीवर जल धर सदृश सुन्दर मृदुल शरीर(म)। भजे सदा गोकुल वधू कौतुक चौरत चीर(म)।

॥ पद १० ॥

नन्द नन्दन देहि मे दृढ भक्तिमीश भवत्पदे

नायकेन्द्र मुनीन्द्र गोकुल चन्द्र गोगण पाल ए। कोटिकामनिकाममोहकसुल्लसद्वनमाल ए।
केश्यघासुर हारि बिकम कंश वंश नृशंस ए। रुक्मिणी वर राम सोदर वृष्णि वल्लव हंस ए।
देवकी वसुदेव पुत्र पवित्रचारु चरित्र ए। वेणुवाद्य विशारदाय कवीश—चेतनमित्र ए।
श्री निवास शिखण्ड शेखर पद्म नाभ मुकुन्द ए। कंजलोचन बन्ध मोचन भूविरोचन चन्द ए।
रासलास्य विनोद हास्य मनोज केलि कवीन ए। नाम धारक राम तारक वेद धारक मीन ए।
कुंजराज विराज वाहन गोव्रजाय विहार ए। काम तात सुजात विग्रह हारितावनि भार ए।
ब्रह्म शेष सुरेश शंकर सेवितांघ्रिपराग ए। गोपबालक वृन्दलालक निर्विषी कृत नाग ए।
साधु रंजन दुष्ट गंजन पाप भंजन रूप ए। दीन रक्षण दक्ष कामद धर्म याजन यूप ए।
नील नीरद देह दिव्य सुवर्ण वर्ण दुकूल ए। विश्व भावन विश्व पालक विश्वभूरुह मूल ए।
स्वामिता मुद पास्य योगिषु वल्लवी कृतदास्य ए। दक्षिणा सुत-पुत्र दापन निरर्थीकृत कास्य ए।

राधिका मन वंशिका रव मोहिताखिल लोक ए। दैत्य दानव शोक दायक कृतादितेय विशोक ए।
पाक शासन गर्व नाशन सर्वदासन संघ ए। ऋक्षराज सुताक्षि सचण माधुरी कृत वंध ए।
कैटभान्त मुरान्त माधव कूर्म केशव कृष्ण ए। भाविता चल वासवस्तुत भक्तभक्ति सतृष्ण ए।
बुद्ध भार्गव कल्कि संहर पद्मशायि नृसिंह ए। पारि जात हरारि जात विमोच दाह सुगन्ध ए।
शंख चक्र गदा धनुर्धर विष्णु वामन रूंड ए। मानिनी गणमान मर्दन हर्ष वर्धन रम्य ए।
मुग्ध गोप वधूरु दुग्धक पान लुब्धक चौर ए। नित्यनूतन नित्यधाम निवास नित्य किशोर ए।
माथि माध्यविचिन्त्य शक्तिक सर्व मायिक धीर ए। हंसजा तट वंशिका वट नाट्य शब्द धीर ए।
यज्ञ साधन यज्ञ पालन यज्ञ भुग्य वनान्त ए। पुण्य कीर्तन पुण्य दर्शन पुण्य पावन संत ए।

(श्लो०) श्रीवृन्दावनेन कृतमच्युत मानसेन, विज्ञप्तिगीतशतनाम हरेरिदं यत्।
संश्रूयते प्रतिदिनं किल गायते च, संप्राप्यते रतिकदाम्बपदारविन्दे।

॥ पद ११ दोहा ॥

मुकुट कटक केयूर धर हे नटवर वरवेश। चरण शरणमच्युतं सदा मां जानी हि भवेश।

राग वैजयन्ती पद १२

भजेऽहं भजे केशवं कृष्ण-चन्द्रम्।
मुरारिं हरिं सच्चिदानन्द-कन्दम् कृपासागरं सत्य संधं मुकुन्दम्।
अचेतः प्रचेतो गृहानीत नन्दम्, नवीनं नमद्भक्तसंचैकसंघम्।
अखिर्वासिनं वंशिनंमा कलत्रम्, सुसत्रं सुरत्रं विहंगेश पत्रम्। भजे०।
भक्तत्रं नवाम्भोधराभंतडित्पीत वस्त्रम्, रमेशं यमेशं गदा चक्रशस्त्रम्।
अजं चाच्युतं गोपपुत्रैकमित्रम्, अचित्रं पवित्रं दुराशालचित्रम्।
अराजालक कंजनेत्रं जपित्रम्, लसत्कुण्डल चारु चर्चा विचित्रम्।
सदा स्वप्रकाशं जगद्विद्धि लासम्। जनानां निवासं व्रजागारवासम्। भजे० पाप नाशम्
रणन्नूपुरं रासलीला विलासम्, कणत्किंकिणीकं मनो हारि हासम्। भजे० पाप।
गुणग्रामकुण्डं शरच्चन्द्र तुण्डम्, चलद्वाहु शुण्डं कृत श्याल मुण्डम्।
परापारपंडं सुरेशादिदण्डम्, विनीतैकमण्डं मिलद्भृङ्ग गंडम्। भजे० दुष्टचण्डम्।
सुवर्णा गर्द रंगदं पुण्य मालम्, कुरंगाननां रोचना रोचि भालम्।
महामायिकं नायकं कालकालम् स्वकीयासु संचिन्त्य संसारजालम्। भजे०।
नृसिंहावतारं विभिन्नारिगात्रम्, पयः पूर्णपाथोदगम्भीर वाचम्।
गलोद्भासि भास्वन् महारत्नराजम्, किरीटादि नानोरु नेपथ्य भाजम्।
निषेधैकगम्यं विभुं वेद सारम् लसद्धारभारं नरं निर्विकारम्।
व्रजाधीश जाया यशोदा कुमारम् सु वृन्दावनान्तः सदा सद्विहारम्।

ध्रुवपदम् पद १३

जय जय हेऽजनि जननि यशोदे? वत्सलरूपिणि नन्दयशोदे।
विश्वम्भरपरिपोषणमोदे, हृंकितमवजलनिधितोदे॥
भवबन्धनहरचन्दनदायिनि? कल्मष धरणीधरशायिनि।
निगमागोचरनिजगोचारिणि, यद्भ्या भीतिभवदभयकारिणि॥
शारदिन्दीवरदलाभिरामे, नवनिधिविविधपरिपूरितकामे।

संध्यानभनिभवदितचचुकले, जातीस्रग्वेष्टितवरचूले ।
कम्बुकण्ठमुक्ताफलमाले, कुंकुमबिन्दुविराजितभाले ।
गोरसमन्थनमन्थरदेहे, स्वयशो भूषित वल्लव गेहे ।
किंकिणिरवयुतकंकणरावे, व्रजजनरंजनसुखदसुभावे ।
सरसीरुहभव भवमुनिगीते, शिशुगोपीगोपीपरिवीते ।
(श्री) वृन्दावनस्वामिनि तव तनये, वितर रतिं (मयि) करुणानिलये ।

ध्रुवपदम्
पद १४

जय जय जय श्रीगिरिवरधारिन्, कुसुमितकुञ्जपुञ्जसञ्चारिन् ।
सारिगमपधनी नीधपमगरीन्, सा सारिसारिगमपधानुकारिन् ।
धुदधुमांथिकताथिकधिकतक, तद्धलांग इति नृत्य विहारिन् ।
रासलास्यपरिहास्यविशारद, नारदादिनुतवनसृगधारिन् ।
नवजलधरसुन्दरतडिदम्बर, रसिक ! पुरन्दर हे अघवारिन् ।
वृन्दावनस्वामिन् मयि करुणां, कुरुबकवकघकेशिविदारिन् ।

ध्रुवपदम्
पद १५

जय जय श्री वृषभानुसुते, गोकुलराजकुमारनुते ।
ता ततनन थथ थे थथ थे थथ थेया थुंथुं नृत्य रते ।
ठंठं ठननन धुधु धुधु कट ताल मृदंगनि नादहिते ।
अभिनय लय निपुणे कलगान समान सु तान समुल्लसिते ।
गौरीशविरंचिसुन्दरवामदृहारिणि कामकलाललिते ।
रासविलासविभूषणसुन्दरि, दाम जनेक कृपा कलिते ।
कुक ककुभ ककुभां तत्थादि समुद्धटना घटनाञ्चि धृते ।
(श्री) वृन्दावनस्वामिनि तव चरणे प्रणतोऽहं किल दास्यकृते ।

जय जय श्रीयमुने रविकन्ये ।
यदुमहेन्द्रमहिषीप्वधिपर्ये च ॥

ध्रुवपदम्
पद १६

गोकुलचन्द्र पदं कित धन्ये, पावन जल मुक्ति कृत वन्ये ।
नानारत्न रुक्मतट वन्धे, यमपुरगति प्रति वन्धन सन्धे ।
द्रवीभूत हरि विग्रह धारिणि, गिरिकलिन्दगह्वर संचारिणि ।
(श्री) वृन्दावनरसिके मे प्रीतिं सन्तनु किल निगमागमगीतिम् ।

ध्रुवपदम्
पद १७

जय वृषभानु सुता सखि ललिते, युगल किशोर मनोरथ फलिते ।
शारद शशि वदने वर रदने गुणगण सदन रसामृत ललिते ।
सुन्दर तर मंजरि मद कुञ्जर,-गामिनि कृष्ण कृपा कलिते ।
(श्री) वृन्दावन युनाः प्रेमाणं कुरुमेऽनलस्वया चलिते ।

ध्रुवपदम्
पद १८

जय वृन्दे शान्दे सुख कन्दे, चरण सरोजमहं तव वन्दे ।
राधाकृष्ण विलास विनोदिनि, निज वैभव परिकर जनमोदिनि ।
विविधकुसुमकृत भूषणशोभे, नन्दतनयविहरणाधृतलोभे ।
मत्तमधुपगुञ्जनपरिपूते, रासविलासविभवसंभूते ।

नानाऽसववसंतर्पितरामे ? पूजकजनपरिपूरितकामे ।
रसऋतुसेवितविपिनविहारे, रंजितवल्लवि वल्लभदारे ।
कारय मे वासं वरदायिनि (श्री) वृन्दावनविपिनेऽप्यनपायिनि ।

पद १९

जयजय श्रीवेंकटगिरिस्वामिन् ? महादुष्टदानवकुलनाशिन् ।
विधिशिवशेषसुरेश्वरवन्दित, निजवैभवत्रिभुवनजननन्दित ।
भक्तेभ्यो निर्भयपददायिन, करुणावरुणालयमहामायिन् ।
(श्री) वृन्दावन विपिने मे वासम्, देहि विभो कलिकल्मषनाशम् ।

ध्रुवपदम्
पद २०

जय जय रघुवर करुणा सागर, कार्मुकहस्त अयोध्यानागर ।
भवभयखंडन ! निजजनमण्डन, हयखुरकृतदानवपुरकंडन ।
जनकसुतासहचरगुणराशे ? वितर दयां वृन्दावनदासे ।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा नाम सङ्कीर्तन वर्णन दशम घाट ॥

❀ अथ एकादश घाट (कंशवध लीला) ❀

॥ चौपाई ॥

कान्हबली बल कंस बुलाये ❀ व्रज ते सुफलक सुत लै आये ।१।
ताहि जलहिं निज रूप दिखायो ❀ नेति नेति जो निगमन गायो ।२।
वहां ते मथुरा पहुँचे आई ❀ पुर शोभा कछु बरनि न जाई ।३।
कंचन कोट चहूँ दिश आई ❀ नीलमणी कंगुरनि छवि छाई ।४।
फटिकन के लगी बनें द्वार ❀ सुवरन के तहां लगे किवार ।५।
लगा चौहटे और बजार ❀ कनक फरस सब ठौर सुढार ।६।
नाना रतन जटित घर हाट ❀ विद्रुम पन्नानि रचे कपाट ।७।
अति सुन्दर नारी नर लोक ❀ मानौं भुवि उतरयौ सुरलोक ।८।
तहँ प्रथमहि धोबी लिय अम्बर ❀ मिल्यौ तिजैं हरि कियौ अडम्बर।९।
अम्बर वर मांगे हरि वापै ❀ दुरें बोल्यौ दिय गये न तापै ।१०।
अब सब ही वे मारि पछारे ❀ ले कपरा सब गोप सिंगारे ।११।
दरजी तहां कंस को आयो ❀ ताहि देखि गोपाल बुलायो ।१२।
बनि रचि पचि कपरा पहिराये ❀ जे जे दोउ भाइन मन भाये ।१३।

पहिरि विविध पट राजे भारे ❀ श्याम सेत मनौं कलभ सिंगारे ।१४।
चारि पदारथ ताहि जु दीनैं ❀ चले मालि घर कौं रँग भीनें ।१५।
नानारँग माला लै माली ❀ बड़भागी आगें धरि डाली ।१६।
अपनैं कर लै लै पहिराई ❀ अतिछबिबिराजे तब दोउ भाई ।१७।
ताहि पहिराय बीनती कीनी ❀ मांगी भक्ति ताहि सोई दीनी ।१८।
कुबजा मिली लियें पुनि चन्दन ❀ ताहि देखि टोकी नन्द नन्दन ।१९।
चन्दमुखी ? कहा है इह तोपें ❀ वहि कही है मौंधौ वलि मोपें ।२०।
भूप कंश हित हौं घसि ल्याई ❀ या लाइक तुम दोऊ भाई ।२१।
यौं कहि दोउनि अंग लगायो ❀ जा रंग कौ जाके मनभायो ।२२।
लखि मन मोहन रूप बिलूरी ❀ कुबजा ते गहि कीनी सूधी ।२३।
रूप उदधि मानौं मथि काढ़ी ❀ दूती रमा भी रहै इक ठाढ़ी ।२४।
गहि पीतांशु कह्यो मेरे घर ❀ चलौहुरीस्मर विथा सुघरवर ।२५।
तब हँसि बोले सुन्दर श्याम ❀ तुम हम से पंथिन बिसराम ।२६।
अब आये जिहि कारज हेत ❀ सो करि तिहारे ऐहैं निकेत ।२७।
मधुर बचन यौं कहि कुबजा हीं ❀ आये वनिक पथहि अवगाही ।२८।
तहां धनुक देख्यो इक भारी ❀ जहां बड़े जोधा रखवारी ।२९।
बरजे धनुक छुओ जिन कोऊ ❀ भये क्रोध सुनि भाई दोऊ ।३०।
बांयें करसों लियो चढ़ाई ❀ रुयालहीरुयालसु दयो चढ़ाई ।३१।
तोरयौ तनकहि खैंचि मरोरी ❀ गज ज्यौं आक छरी कौं तोरी ।३२।
टूट्यो धनुक भयो अति सोर ❀ सुन्यो तिहुं पुर में अति घोर ।३३।
क्रोध क्रोध ह्वै हरि पर धाये ❀ मार मार करि पकरन आये ।३४।
धनुक टूक दोउ भाइन लीनें ❀ रच्छक सबै रुई ज्यौं-धीनें ।३५।
इह सुनि कंस अधिक ही कांप्यो ❀ जानौं काल आइ मोहि झांप्यो ।३६।
सोवत जागत बढ़े कुसौंन ❀ ता दिन ते लगे कंसहि हौंन ।३७।
त्रियनि सुनी बलि श्याम अवाई ❀ दौरी सब मनौं लुटी अवाई ।३८।
जो जो काम करत ही घरको ❀ छांड़िसम्हारिसकीनहिं फरको ।३९।
आई दौरी महल झरोखनि ❀ केउदेखैंलगिमोखनि मोखनि ।४०।
लगी तोरि कर भूषन वारनि ❀ भू उतरत मनु पंती तारनि ।४१।
मोहनी मूरति सबन निहारी ❀ विवश ह्वै देत विधातहि गारी ।४२।
विधि हम क्यों न करीं ब्रज कामिनि ❀ सुन्दर मुखनिरखति दिन जामिनि ।४३।
हरि मृदु मुसकि हरैं मन सब के ❀ मिटे बिरह दुख संचित सब के ।४४।
दुष्ट रच्यो पुनि मल्ल अखारो ❀ जुरयो देश पुर लोगहु सारो ।४५।
रंग द्वार रण में अति गाढ़ो ❀ अयुत करी बल गज कियो ठाढ़ो ।४६।
आवत देखि गुपालहि पेल्यो ❀ पूंछ पकरि गोपाल हि खेल्यो ।४७।

खींचि फेरि पटक्यौ धरनी पर ❀ दंत उखारि लिये अपने कर ।४८।
दंतहि सौं मारे पिलवान ❀ कहि संगते पाये नहिं जान ।४९।
दंत दोउ भाइन धरे कांधें ❀ नील पीतपट कटितट बांधें ।५०।
रंग अजिर आये दोउ भाई ❀ रुधिर छींट दुहुँ अंगनि छाई ।५१।
मानहुं नील हिमाचल ऊपर ❀ पसरी विद्रुम वेलि दुहुँ वर ।५२।
तहाँ भये मल्ल पहार से ठाढ़े ❀ अंग हैं तिन के वज्र से गाढ़े ।५३।
राम श्याम गोपनि लियें संग ❀ कमल पत्र से कोमल अंग ।५४।
नटवर वपु धरि अधिक विराजे ❀ रंगभूमि गये बजि उठि बाजे ।५५।
चाणूर बढ़ि हरि सौं लपटानौ ❀ गिरि गह्यो दीरितमालहिंमानौं ।५६।
नाना दांव किये उनि सूर ❀ मारी मुकी कीनौं चक चूर ।५७।
भिरे मुष्टिक सौं महाबली बल ❀ उन हूँ लपटि किए केते छल ।५८।
राम दई ताकैं इक थाप ❀ ह्वैगयो शिरनिहिंकौ गंहूकौं।५९।
और हु मल्ल हुते सब मारे ❀ भगिगयेऔर जु बचे बिचारे ।६०।
कहि न जाइ हरि अंग लुनाई ❀ निरखि रहे सब लोग लुगाई ।६१।
जाहि जाहि जो जो रस भाख्यो ❀ सो सो हरि तौं ताहि प्रकास्यो।६२।
मल्लनि कौं रस रौद्र दिखायो ❀ अद्भुत रसपरवरनि लखायो।६३।
उज्ज्वल रस बर नारिन देख्यो ❀ गोपनिसख्यरसहिकरि लेख्यो।६४।
दुष्ट नृपनि भाख्यो रस वीर ❀ देखि देखि हरि मूरति धीर ।६५।
वच्छलता रस करुणा समाई ❀ मात पितहि भासे ये दोई ।६६।
कंस भयानक रस मय भयो ❀ अज्ञान लखि बीभच्छहि लह्यो ।६७।
योगी सन्त महारस पागे ❀ निरखनलगे श्याम बड़ भागे ।६८।
वृष्णिगन दास्य रसहि अवधार्यो ❀ यौं हरि सब स्वरूप निहार्यो।६९।
कंस कंपि ऊपर कियो कोप ❀ कह्यो कोउ रहन न पावै गोप ।७०।
रंग भूमि तें दीजे काढ़ि ❀ डारो इनके माथे बाढ़ि ।७१।
उग्रसेन वसुदेव हि आदि ❀ मिले उनहिं इनको कह्यो वादि ।७२।
इन हूं सब कौं डारो मारि ❀ नन्द हि राखो बेड़ी डारि ।७३।
यह उठि ऐसें कहत हि रह्यो ❀ हरि ज्यौंकूदिकंस हरि गह्यो ।७४।
गहे केश गहि धरनि पछार्यो ❀ ह्वै गयोचढ़िंदिशिमार्योहिमार्यो।७५।
कंस मार पितु मातु छुड़ाये ❀ देशनि घर घर मंगल गाये ।७६।
उग्रसेन शिर छत्र फिरायो ❀ हरिदार ह्वै आप हि आयो ।७७।
इहि विधि हरि भक्तन आधीन ❀ जिहिं आधीन लोक हैं तीन ।७८।
यह श्रीकृष्ण कंस वध क्रीडा ❀ गावें सुनें मिटे भव पीड़ा ।७९।
वृन्दावन स्वामी यह बिरची ❀ श्रीभागोत कथा तै खरची ।८०।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा कंसवध लीला वर्णन पाट एकादशः ॥

❀ अथ द्वादश घाट (तीर्थ वर्णन) ❀

राग धनाश्री
पद १

श्रीपुष्कर निकट तिहुँ पुर तीरथन को ।
परम पवित्र जल देखत ही जिहिं पल दूरि होत पाप ताप जात तन मन को ।
प्रात उठि न्हान कीन अरु दान गाव जात तिन जित पुरसुर के हरन को ।
वृन्दावन महिमण्डल में थाप्यौ है कमण्डल विधि होत हैं आखण्डल ध्यावैं जन को ।

राग ललित वा भैरव
पद २

तीरथराज प्रयाग विराजत सातपुरी पटरानी ।
ताप जु त्रिविध नसैं जिहि दरसैं महिमा वेद बखानी ।
मध्यम वेदी विशद सिंहासन छत्र अखैबट भारी ।
हंस मिथुन लैंहैं चारु चँवर से माधव इष्ट मुरारी ॥१॥
तीरथ राज० सातपुरी संगधारी ।

गंग तरंग तुरंग असंखित कुञ्जर यमुन तरंगा ।
करत सेव त्रिभुवन तीरथ सब धरैं अलौकिक अंगा ॥२॥
तीरथ राज० सातपुरी लियें संगा ।

विविध विचित्र रथ नाना पत्र रथ धारा विजय पताका ।
पाप वृन्दपुर जारि मारि कैं कीन्हों बड़ो ही साका ॥३॥
तीरथ राज० सातपुरी संग राका ।

दुहुँ प्रकार धुनि नौबत बाजति आठौं पहर सुहाई ।
गावत सुयश नये नित जाके ऋषि बन्दी सुखदाई ।
तीरथ राज० सातपुरी मनभाई ॥४॥

चारि पदारथ सदा चरत जहां पावत कीट पतंगा ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु वेणी माधव ! दीजै भक्ति अभंगा ।
तीरथराज० सातपुरी अरधंगा ॥५॥

राग भैरव
पद ३

ए श्रीगंगा तरल तरंगा हरिपद संगा ।
तुव जल संगा कीट विहंगा होत हैं शत्रु अनंगा ।
दरशि सुरापिन अति ही पापिन करत तुरत भवभंगा ।
तव चरण शरण मांगत कर जोरैं वृन्दावन जन मंगा ।

पद ४

ए श्रीकालिन्दी इन्दीवर वरन अघहरन तुव जल ।
जाकें दरस अरथ धरम काम मोक्ष होत हैं सहल ।
हरि मनमांनी कीनी निज पटरानी प्रीति सौं रहत पिय तेरे ही महल ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु अंगसंग किलौ रैंन दिन याही तैं श्याम रंग राजत बिमल

पद ५

जय जय श्रीयमुना मनरमना रसदेनी तेरे पद सेवन तैं पावत पद सेवी।
निर्मल जल कमल मध्य फूले बहु भांती मधु लुब्ध मँडरावत मधुपन की पाँती।
उभय तटी रतन जटी सुमन सोहैं तीर तीर द्रुमन भरि जगमगाति जोहैं।
कञ्चन आकार आवृता चहुँ कोदा वृन्दावन केलि मयी दायक मनमोदा।

पद ६

ए श्रीवानी वेदनि बखानी विधि शिव विधु मानी।
तुही ब्रह्माणी तुही भवानी तुही कहियतु हरि रानी।
तुही बानी तुही खानी तुही तिहुँ पुर में समानी।
(श्री) वृन्दावन यौं कहत भवानी मोमति रहो तुव पद अरुझानी।

राग रामकली
पद ७

मथुरा तीन लोक ते न्यारी जहाँ विराजत नित्य विहारी।
जहाँ की रेणु शीश धरबो चाहत ब्रह्म शेष त्रिपुरारी।
मानत जहाँ प्रणाम सोइबो कृष्ण कीरतन गारी।
जहाँ सुभाइ फिरबो इतउत को मानत परिकरमारी ॥१॥
तीनवेद ते अधिक जानियतु नाम बरन मथुरा री।
ध्यावत तीनौं वेद ब्रह्म कौं याकौं ध्यावत ब्रह्म महा री ॥२॥
एकहि दौस निवास कियें जित भक्ति लहैं नरनारी।
मुक्ति चतुरविध कोऊ न छूवत जद्यपि देत मुरारी ॥३॥
है जु विधाता और जहाँ को रच्छक जग संहारी।
जहाँ अजन्मा जन्म लयो मा यशुमति नन्द पिता री ॥४॥
होत अजन्मा तहाँ सजन्मा यातें अकथ कथा री।
(श्री) वृन्दावन तहाँ वास पाइकें मूढ सु और ठौर मतिधारी ॥५॥

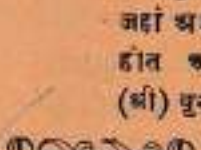

राग भैरव
पद ८

श्रीवृन्दावन प्रभु चिदानन्दघन दिव्य कनक मय भूमि।
विविध भाँति वर तरुन तरुन सौं ललित लता रही लूमि।
ठौर ठौर सुख पुञ्जनि पुञ्जनि कुञ्जनि कुञ्जनि राजैं।
मोहन महल सेज पर दोऊ श्यामा श्याम विराजैं।
श्रीरंग देवी आदि सहचरी नित परिकर यह नीको।
सन्मुख रुख ठाढी सेवत सुख लेवत प्यारो पी का।
श्रीहरिप्रिया हित चित अनुसारनि विविध विनोद प्रकाशी।
निरखि निरखि नैननि वर रसिक बलि (श्री) वृन्दावन दासी।

राग पञ्चम
पद ९

वेदहु ते व्रज रीति है न्यारी, या विधि पाइये कुञ्ज बिहारी।
रज देत बताइ जु आवत है तम देत मिटाइ महा सुख कारी।
मात सता गुन में बिछुरैं यम त्रासहु ते दुख होत है भारी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु की महिमा कछु ब्रह्म हरें तैं विरंच निहारी।

दोहा—रास विलास संगीत सुनि, मोहे ब्रह्म महेश। सुरपति गनपति देवऋषि आये सहित सुरेश॥१०॥

राग कनडी
पद ११

आयो जगत जनक चतुरानन, मोह्यो मुरली धुनि सुनि कानन।
वेद चारि चहु हस्तनि राजत, दण्ड कमण्डल दो इन भ्राजत।
वरद अभय साभित कर दोई, मगन भयो (श्री) वृन्दावन जोई।

पद १२

आयो नारद मुनिगण मण्डन, भव दव ताप तप्त दुख खंडन।
बीना नाद विमोहित त्रिभुवन, निशिदिन गावत माधव गुनगन।
(श्री) वृन्दावन कर जोरें दोऊ, मांगत कृष्ण कथा रति होऊ।

राग कनडी
पद १३

आयो सुर राज गजराज चढ्यो महाबली, अमर सुभट संग रंग भरे राज हीं।
विविध विमान चढ़ें करें गुनगान गुनी होत इक डङ्का सुनि अरि डरि भाज हीं।
नाचें अपछरा गति भेद्दान अनेक एक एक ते सरस नानाभूषा पट साज हीं।
सची दुख कन्दन नन्दन वनकेलि करि बाजे अमरावती मधुर धुनि बाज हीं।
वृन्दावनप्रभु निरखि धाम प्रमुदितगन सुर सहित बाम वारत तनमन धन हरि काज हीं

राग श्रीटोडी
पद १४

जय जय शंकर भव भय मोचन, हिम करपूर गौर गुण लोचन।
डमरू नाद रव तांडव पंडित, भूति विभूति चर्चि कर मंडित।
जटा मुकुट करुणा वरुणालय, (श्री) वृन्दावन विपिने किल मां नय।

पद १५

जय जय भव भव विघ्न विदारण, वारण वदन विश्व सुख कारण।
सिद्धि बुद्धि वनिता सहचारण, निज सेवक वैभव विस्तारण।
(श्री) वृन्दावन विहरण परचारण, मयि संतनु संसृति निस्तारण।

पद १६

जय जय वाणी मङ्गलसुते, सुर-मुनि-किन्नर-सिद्धनुते।
हंस-रथे शारद-जलदाभे, अयि प्रणयिनि सरसी-रुह-नाभे।
वीणा-पुस्तक-मंडित-हस्ते विहरतु वरदे हृदये नस्ते।
(श्री) वृन्दावननृपतौ प्रेमाणं, सतनु किल निगमागमगानम्।

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा पुष्करादि तीर्थ-ब्रह्मादि भक्त स्तवन पाठ द्वादशः ॥

❀ अथ त्रयोदश घाट ❀

आसावरी
पद १

जाकों रमा रमण रखवारे, ताहि कहो को मारे।
काल व्याल थिर चर तिहुँ पुर में वक्र न दृष्टि निहारे।
भारत भीषम द्रोण आगि तैं कुन्ती सुतन उबारे।
विधि वर अमर हिरण्य कशिपु से तिन उर नखनि विदारे।
जो हरि तनक सेवाके कीयें तुरत अपन पौ हारे।
(श्री) वृन्दावन प्रभु से प्रभु कौं तजि अन्य जात जम द्वारे।

पद २

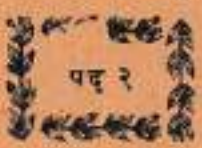

आरति करत यशोदा मैया।
गो रज रंजित अंग रंग भरे गौर श्याम दोउ भैया।
कञ्चन थार कपूर की बाती बजावत बाजे बजैया।
(श्री) वृन्दावन प्रभु निरखि निरखि मुख फिरि फिरि लेत बलैया।

करुणा
राग भैरव
पद ३

कहा ऐसी चूक मोमें चूक से भये ही मोसौं करत हौं कूक सुनौं नैकु तौ श्रौन।
जदपि औगुन भरयो निहारें शरन परयो विष हू को रूंख लाइ काटत है कौन।
मो तन जनि जाउ मेरो तो सुभाउ देखो आप तन जैसो रावरो भौन।
श्रीवृन्दावन प्रभु पापी पावन विरद पाइ तुम हूं को लागी या जुग की पौन।

राग देवगंधार
पद ४

मोसो पतित न जग में और।
यातें आयो शरन रावरें तुम पतित (न) पावन शिर मौर।
मो तन सोचि विचारि देखौ जो नाहिन तीन लोकमें ठौर।
श्रीवृन्दावन प्रभु देखि आप तन यहो विरद की गौर।

पद ५

ए प्रभु अब तो मोहि सम्हारो।
कहा कित भटकों घर घर अपहर फिकर हाइ तिहारो।
काम क्रोध मद लोभ प्रबलरिपु, आगें नाहि न चारो।
ए मोहि बोरत भव सागर में देखत देहु न टारो।
यद्यपि बहु औगुननि भरयो हौं सब कौं लागत खारो।
(श्री) वृन्दावन प्रभु लाज शरन की तुम करते जिन डारो।

पद ६

जागु रे मनुवां लेरे राम को नाम।
काम क्रोध मद लोभ मोह में कत भटकत बेकाम।
विनशि गये तन छिनक एक में कोउ न ह्वै है थाम।
(श्री) वृन्दावन यह समझि बावरे वेगि पकरि निज धाम।

पद ७

कैसे मिलौं सखी प्रीतम सौं ।
सास न सौं भकों गुरुजन के डर पानै परयो विरहा यम सौं ।
नन्द जिठानी रिसानी रहैं डरौं पुनि नाह के ऊधम सौं ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु बीति गई मिलिवे की औधि करी हम सौं ।

पद ८

कासौं कहौं सखि वेदनि मन की ।
डीठि परे जब ते मन मोहन सुधि न रही मो तन की ।
बसि रहो आँखिन में वह मूरति प्यास मिटी जल अन की ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु सौं मिलि हौं हठि, लाज मिटी कुल के पन की ।

पद ९

काह करै तू औषधि सजनी ?
कहि न परै तोकों मुख ते कछु मोहि तो वेदनि और घनी ।
जब तें वहि नैन को सैन दई तब तेइ ही मैन के बान हनी ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु पीर मिटै पिय मूरति ही लगै सौंधे सनी ।

पद १०

नेह को औषधि नेही ये जानैं ।
न पीर मिटै अरि बीर कयौं हूँ पचिहारो रहैं जो पै कोटि सयानैं ।
रोग कटै जिहि सौं सोइ औषधि है, यह बात कहौं कौन मानैं ।
गुलाब के आब सौं चन्दन कौं घसि, काहे सखी घनसार में सानैं ।
चैन परै नहि रैन दिनां मोहि मैन मरोरे कहौं तोहि छानैं ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु उहिसौं तौ बढ़ै अति है कछु और जो औरहि ठानैं ।

राग बसन्त ।। पद ११ ।।

नेही सम सूर नहीं देही और देखिये ।
लाखनि में रण सूर एक ही कबन्ध उठै, ज्ञानी और योगीहू ते अधिक वाहि लेखिये ।
यह दूरि धरैं फिरैं शीश एक नेह काज तौंहँ लाज पाज सुत बाहू ते विशेषिये ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु प्यारो याही ते बिकात हाथ गोविन्द आधीन हूँ रिणी गुपाल देखिये ।

पद १२

नेही सौं विदेही और जग कौंन है ।
विरह की ताप महा आनन्द की शीत सहै नाहिं कहै कछु जाके सम घन भौंन है ।
जीवन अदिष्टफल खाइ, नहिं जानैं स्वाद खाटो कटु मीठो तिक्त कियौं यह लौंन है ।
(श्री) वृन्दावनप्रभु प्यारी बस्यो रहै मनमांहि देखन को बावरो सो फिरै मौंन है ।

पद १३

तनक झनक भनक सुनि नूपुर की पिय आइ गइला ।
श्याम सुघर सुन्दर वर गिरिधर नागर लखि मोद भईला ।
अलक रलक दृग पलक झलक में सकल खलक मनबस कइला ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु पर तन मन धन सदन मदन छवि वारि दइला ।

राग कनडी
पद १४

जो पिय के मन में मन दीजै।
आपुन ही बस होय पियारी टोना टामन काहे कीजै।
मन भावन चाहे सोई कीजै सहज हि में वाको मन भीजै।
(श्री) वृन्दावन प्रभु सौं मिलि लीजे सुख तातौं जीलौं जग जीजै।

राग ललित
पद १५

पिय उर वशी मांझ बसी निज मूरति लखि मान करि बैठी हैं कुंवरि जनक की।
तिहिं छिन पीठि फेरि रही हेरि भूमितन गही हठि मौन मानों मूरति कनक की।
नीलाम्बरओढ़ैं भूमिनखसों लिखन लागी वरनौं अतिअद्‌भुत कहा शोभा ना बनक की
(श्री) वृन्दावनप्रभु प्यारी तबही मनाइ कही तुम बिन सूना है और सौंह है पलुक की

राग मारवो
पद १६

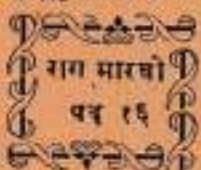

जय जय मीन दीन जन रच्छन दच्छन कमला कमल मुरारी।
प्रलय पयोधि शोधि लै बेदनि ख्याल हि में लयो मारि सुरारी।
कर जु बिहार अपार जोवन में श्री निज धाम विराजै।
(श्री) वृन्दावन प्रभु पुहुप वृष्टि करि अमर नगर घरघर बाजे बाजे।

राग कनडी
पद १७

छैल भये नये देखन कौं छबि छांह तकै तन तोलत हो।
सांझ संवार अचानक आय किवार पराये क्यौं खोलत हो।
गाइन घेरत नांहि लला सु लुगाइन हेरत डोलत हो।
(श्री) वृन्दावनप्रभु पूछे कोऊ यौं बनाइ कै उत्तर बोलत हो।

राग भैरवो
पद १८

काहे कौं हरत मन मेरो कारे हो कन्हैया।
हौं तो परवश परी करौंगी कहा दैया।
तुम सब सुख दाइक बहु नाइक बल भैया।
श्रीवृन्दावन प्रभु मोहि को दरश दीजे वंशी के बजैया।

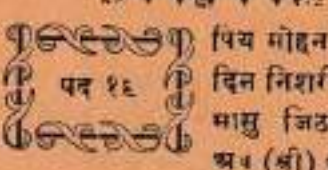

पद १९

पिय मोहन पानिय मिल्यो मनमिसरी भयो जाइ किम मिसरी निकसै आवै।
दिन निशरी दिश दिश फिरौं ताऊ न प्यास बुझाइ।
सासु जिठानी रिस करैं विष लगैं घर न सुहाइ।
अब (श्री) वृन्दावन प्रभु बिना भई बिमन करौं कौन उपाइ।

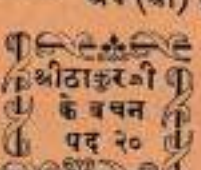

श्रीठाकुरजी के वचन
पद २०

गोरी है किशोरी मोरी चित चोरी करैं जात कहौं।
हौं तो वश भयो तोरी काहे करत बरा जोरी।
लगाई प्रेम डोरी यातैं भई मति बौरी।
श्रीवृन्दावन प्रभु अब करौं कहा तुम ही कहो री।

पद २१

आखियां अभो सुरमेन क्यां हां बिरमानी रहैं घर का सबही।
मिस कं कछु मोखें मरोखैं लखैं कन सुवानि लागि रहैं तबही।
साथ ही लागी रहैं निशि बासर धाम कैं काम चलौं जबही।

बंगला पद २२

अरे प्रांन बन्धु कान हरि लीलो प्रांन ।
आमार बाड़ो मध्ये आसीयो आइयो तुमी नदिल जोवन दीयो दान रे ।
की मंत्र पीड़िया डारीलो तुमी अमाकों भूलिलो खांन आर पान ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु तुमी अमाके पासुरिला अमा के तुम्हारा गुनगान ।

पंजाबी पद २३

मोहन दे नैंन मारदे अब मैंनूं ।
किस अग्गे करों पुकार नी सैये श्याम सलोने यार दे ।
की अख्खां खूबी इनां दी बन्दी जानों प्याले प्यार दे ।
श्रीवृन्दावन प्रभु वसि करि लैंदे तुक जिस तरफ निहार दे ।

राग टोडी पद २४

बैठी सोरह सिंगार किये सुघरी सोरह बरष की ।
रूप जोबन मद आलस सौं अंगुराति जम्भाति प्रेम रस चसकी ।
छुटी रही लट पट खिसि रह्यो आधे शिर डोली देति गांठि गहि अँगियां कसकी ।
वृन्दावन प्रभु झांकि देखि रहे इकटक त्यागी चख जोरि मुख मारि नैंक मुसकी ।

राग नाइकी पद २५

आतुर होहु न देखो पिया रे ।
जागत हैं घर के सबही सुख ठौर ही ठौर बरें जु दिया रे ।
मोहि तो लाज करी चहिये नैंद सासु जिठानी सौं जात जिया रे ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु भूखौ महासु दुहुँ कर खात कोऊ रसिया रे ।

मारवाड़ी पद २६

प्यारा लागो छोजी प्यारा थेतो म्हानें ।
म्हांकी चाली तो थानें छाती सौं कदे करां नहीं न्यारा ।
सुरति थांहुरी कामगारा० ॥
थांहरी छांजी अरज करां छां दरसण देज्यो धूतारां ।
(श्री वृन्दावन प्रभु डरां लागां सौं नहिं तो चालां थांकी लारां ।

राग पूरबी या टोडी सारंग पद २७

ये नैंन लालची रूप के, गनत नहीं कुल कानि ।
गुरुजन शंक निशंक न मानत दूत पञ्च शर भूप के ।
अब मेरे वश नांहि भये ए प्रीतम परम अनूप के ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु छिन बिन देखें होत सरोरुह धूप के ।

राग गूजरी पद २८

आजु भलें बानिक बने बिहारी ।
भोर ही कुञ्ज महल तें निकसे अंग अंग छवि बढ़ी अहारी ।
शिथिल पाग अनुराग भरे दृग आलस भरें महा री ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु देखि मनोरथ होत सु कहीं कहा री ।

राग गौरी पद २९

आली सांवरो सलोनों मोहि भावै, नित उठि इहि मारग आवै ।
मोर मुकुट पीताम्बर की छवि तन मन ताप सिरावै ।
कानन कुण्डल गरे बनमाला बंसी मधुर बजावै ।
बाजूबन्द पहुँची किंकिनि कल उपमा मनहिं न आवै ।

मंद हँसनि गति मंद बिलोकनि मनमथ को मन तावै।
(श्री) वृन्दावन प्रभु नन्द को नन्दन नित नयो नेह बढ़ावै।

राग ललित
पद २०

मेरी सजनी हलधर वीर नित मोहि मुरली सुनावै।
जिहि मग हौं निकसौं नित ठाढ़ौ वह चितै चितै चितहि चुरावै।
जब हौं धाम काम कछु लागौं तब आ(इ) पिछवारें गावै।
हौं सकौं गुरुजन डर (श्री) वृन्दावन प्रभु मो हिय तरसावै।

राग पूरिया
पद २१

मुरली भली बाजी सप्त सुरन सौं रली।
काहू के घर अधरामृत पियें गुन गरबीली गाजी।
जिन मोहे सुर नर किन्नर हर हरि कर पल्लव राजी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु की या गति याही को भल छाजी।

पद २२

तुम्हैं यौं क्यों चहिये हो प्रान अधार सुकुमार नन्दकुमार।
पहिले तो रस बस करि नैंन सैंन प्रेम ठगोरी डारि।
तुम बहुनायक लायक सब बातनि मेरी क्यों तजी मनुहारि।
भूल्यौ धाम काम सब आठौं जाम निरदई मारत मरोरैं मार।
(श्री) वृन्दावन प्रभु जोगनि कौं देत बहु भांतिन सुख मोकौं तो दरश दीजे एक बार।

पद २३

आजु सखी आवेंगे घनश्याम।
अब सब मेरे पुजिहैं मनोरथ, फरकत दृग भुज बाम।
हूँ हैं अमृत के वेछिन मुहूरत करि हौं सफल धनधाम।
(श्री) वृन्दावन प्रभु की माधुरी मूरति देखि थकित कोटि काम।

राग बिहागरो
पद २४

प्रेम जलधि मन भयो मर जिया।
बूडि बूडि सुख दुख बीचिन बिच ढूंढत लाल अमोलक पीया।
दृग खोट डारत गहि काढ़त रूप मीन चाहत ए जीया।
(श्री) वृन्दावन जिय लाडिलुपर अति डर भूपन चाहत है कोया।

राग सारंग
पद २५

आठौं याम बीतत यौंस हो गनत, अजहूँ न आये मनभाये लालन।
सुधि हू न लई दई भई कछु चूक मोसौं किधौं वै रसिक कहूँ पगे हैं अनत।
पहलें उरझाय मन अब सुरझायो चाहीं घुरी रोम रोम गांठि कछु न बनत।
(श्री) वृन्दावन प्रभु वे तो बहुनायक हैं करत कछु और (और) ही मनत।

पद २६

मनुवां मेरो हर लियो कान्ह ने।
कहा करों कित जाऊं सखी री जिय अति बिकल भयो।
तन मन असन बसन सुधि बिसरी सब देखत वाही मयो।
(श्री) वृन्दावन प्रभु रूप अनूपम छिन छिन नयो नयो।

॥ पद ३७ ॥

देखो न्हाय ठाढो रूप सिन्धु मथि काढी मानों देह द्युति देखें ते गुलाब आब गई है।
बांधें कंठ पोति जोति मोतिन की कहा कहूँ मानों शशि फौज राहु चहुँ दिशि भई है।
बिथुरे बिथुरे बाल चन्दन को बिन्दु भाल, देखत ही बनैं लाल, उपमा कछु नई है।
छबि की छटा सी उठैं सघन घटा में मानों तहां निज बधू इन्दु गोद मांझ लई है।
तामें लो चिनौठी चीर पहिरैं बलबीर चलि देखं अंग अंगनि अनंग रंग मई है।
(श्री) वृन्दावन प्रभु देखि आई हौं निकाई जो ते प्यारी सु तिहारी मेरे नैननि में छई है।

राग मालवो
पद ३८

मृगनैंनी तुव शिर बैंनी अति सुख नसैंनी छवि की उठत तरंगा।
कबरी कालिन्दी चन्दन मधि सरस्वती मोतिन मांग सोई गंगा।
नाना बरन कुसुम गूंथी लट वेई विहरत चित्रविचित्र विहंगा।
श्रीवृन्दावन प्रभु मनमीन लीन रहत निशिदिन तिहि संगा।

पद ३९

चंपक की फूल न तो तन समतूल बापें भँवर न जाइ लखि हियें कठिनाई।
कुन्दन कठोरन सुगन्ध कैसें समहोइ गुलाब हू की आब हरें सुगन्ध मृदुताई।
ऐसें अँग अंगनि उपमा न होरी कहूं तूली तू बिरंचि रंच पचि कै बनाई।
(श्री) वृन्दावन प्रभु मधुसूदन राच्यो तोसों तेरो ही नचायो नाच्यो करत कन्हाई।

पद ४०

बस कीनी गुपाल तैं गूजरी गोरी।
मांगत दान गुमानन सों बोलि रिसाइ कैं नैंकु तैं भौंह मरोरी।
तिहि दिन तैं घनश्याम हियें पुर बैठि गयो मनों काम करोरी।
श्रीवृन्दावन प्रभु नैंन में वास सु तेंही निवास कियो वर जोरी।

पद ४१

सब निशि लूटी मोहि अनारी।
लये भूषन उतराइ पहलई लई खोलि अंगिया री।
अधर राग अंजन हरि लीनों पुनि हठि लीनी सारी।
मींड़ि मरोरि खैंचि कच निरदई तीछन नखन बिदारी।
सुनें तहां कौन पुकार नतीजो नहि नहि हाहा पुकारी।
कहा कहिए तोसों (श्री) वृन्दावन प्रभु सों मिलि इह करी कहारी।

राग लालन की
वृन्दावनी काफी
पद ४२

आंखिन लागे किधौं तुमही बलि कैधौं लगी तुम सोंई ये आंखैं।
तुम तो छिन कों न कहूँ ठहरो औ दई व दई इन कौऊ न पांखैं।
तलफैं दिन रैंन न चैंन परें ये अघात नहीं रस रूप ही चाखैं।
(श्री) वृन्दावन प्रभु नेही ये जानत नेही की बात बनैं नहि भाखैं।

पद ४३

लालन जू अब को तुम्हें धीजै, जिन की मन कोटि किएं न पसीजै।
धाई हमों इहि सी देह सों अपनों मन लैं हमारो मन दीजै।
तिहारे मनरूप अनेक धरे निज रूप कहां किहि भांति पतीजै।
श्रीवृन्दावनप्रभु आछे जू आछे हो दूरि ही तैं तुम्हें देखि कैं जीजै।

राग कनडी
पद ४४

गरबीली सी डोलै कहा चिकरी सी कपोलनि कान्ह करी मकरी।
उत वेऊ निशंक लिख्यौ ही करैं इत तूहू री है जु रही सकरी।
नहि कम्पत स्वेद जो बेऊ करैं तहि भाजन और वधून करी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु देखौ कहा गुन मैं मति दोष की सीत करी।

पद ४५

बड़ो जु सुनौं समुझावति क्यौं न वधू तिहारे कहा पैंडे परी।
इह मोही को दौरि निशंक भई पकरें निकसौं इहि आइ गरी।
मुख सूँघि कहै तुम खायो मो गोरस ऐसी न नारि कोऊ निडरी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु दुति कह्यो लखि लाल भली छलवारि करी।

राग कान्हरो
पद ४६

प्यारी कौन कौन ठौर ते तू भौंरनि बिडारी है,
ये अबलागे फिरैं रस लोभी तेरेई संग।
पानि आनि पद कपोल मधूक फूल इन्दीवर नैनन मानि रचैं इहि रंग।
अधर बंधूक आनि निज कुल सैनी बैनी मानत अभंग।
(श्री)वृन्दावनप्रभु वशि करिवेकौं कामदेव बान करि राखे हैं पई तेरेअंग।

पद ४७

यमुनातट झटपट पटई मान लागी चम्पक के चाप जिम आय उतनै गई।
दिखाइ हाव भाव मुसकाय सकुचाय नैंकु नैननि की सैन मांझ मैन ताप वेगई।
जु लट लपेटि मट मन नट नागर को दैकैं पट ओट बट पारि नारि लै गई।
सु वृन्दावन प्रभु कौं व कछु न सुहात तौते नैननि है तेरी छवि रोमरोम छै गई।

राग वृन्दा-
वनी काफी
पद ४८

सखो लंगर री संग लाग्योई डोलै का विधि धाम को काम करूँ।
गुंडनि मुंडनि साथ लियें फिरै बोलै बिना बरजोर ही बोलै।
आली जैये गली में चली इकली तो छली छल मों गई आनि निघोलै।
(श्री) वृन्दावन प्रभु बैठि रह्यौ पर आनि अचानक सांकर खोलै।

राग बंगाली
पद ४९

ओढनी डारै मारैं जाइ घनश्याम, बावरीसी भई फिरौं भूल्यौ घनधाम।
कोई रे बतावो मोहि कान्हू जाको नाम।
घायल सी भई फिरैं न्याय व्रजवाम।
श्रीवृन्दावन श्याम श्माम रटैं आठौं जाम।

पद ५०

देखति पिय आगम गज गामिनि आज सहेट बदी जिहि कुंज।
वृन्दा रचित तलप फूलन की तहां जाय बैठी छवि पुञ्ज।
चाहति चतुरि चकृत भई चहुँदिश कहूँ अटक्यो लंपट बहु मित्त।
ज्यौं ज्यौं घटनि रैनि त्यौं ही त्यौं मैन मरोरत चित्त ॥१॥
तलफति अलप सलिल सफरीलौं रह्यौं किधौं उठि जाऊं।
आइ सबनि चूरि छलबल सौं निपट बधाई गाऊं॥२॥
इहि विधि शोच पोच करते ही कोकिल नाद सुनायी पीव।
(श्री)वृन्दावनप्रभु प्यारी सुनत ही गयो मनौं पुनि आयो घटजीव ॥३॥

राग शंकरा भरन
पद ४१

बैठे श्याम संकेत निकेत में देखत प्रान पिया आगौन।
कान सुन्यौं न सुहात और कछु रहे ध्यान धरि मौन।
आई क्यों न सोच इतनें ई ममेर धुनि सिंजित सुन्यों श्रौन।
(श्री) वृन्दावनप्रभु रोम रोम तचे वा सुखको बरनैं कवि कौन।

राग बिहागरो
पद ४२

मंजुल कुंज लतानिके पुञ्जतें आय अचानिक आनि मिले गिरधारी।
बाल बिहाल वियोग की ज्वाल तें बैठें तहांई इकंत निहारी।
प्रेम वियोग कसौटी कसी सुखरी हौ लसी लखि रीझे बिहारी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु देकें अपनपौं रिणी हौं रिणी कह्यौ रावरी प्यारी।

पद ४३

द्वै पिया एक समें इक आसन बैठि करें उत प्रेम कथा री।
औचक आइ गये पिय एक सौं नेह सरी तब ऐसी विचारी।
दौरि बचाव के पीछे तें एक की मूंदिलई अंखियां बढ़ियारी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु दूसरी को सुख चूम्यौ दै के अद्भुत महारी।

राग नाइकी
पद ४४

एक समें हरि काहू पिया संग बैठे संकेत लियें सखियां।
श्यामा जु आइ गईं तिहिं औसर दुरते लाल नहीं लखियां।
सैनें उन कौं तब सैन दई पिय पीछें तें आय गए नखियां।
(श्री) वृन्दावन प्रभु धूत अचानक मूंदिलई छलसौं अंखियां।

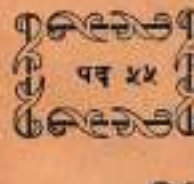

पद ४५

एक समें बनितागन में बन में बनमालि बिहार करें।
श्यामा सौं प्रेम प्रकास्यौ चहैं सौतिन में कैसे अंक भरें।
कांटो लग्यो सिसुकें तब प्यारी बिहारी की गोद में पांय धरें।
(श्री) वृन्दावन प्रभु काढन के मिस सो व तहां ते न टारयौ टरें।

रागबिहागरो
पद ४६

दुग्ध फेन सम सैन मृदुल महा कुञ्ज सदन में सखी बिछाई।
सेज बन्द कसि बीरा सौंधे लवंगादि डावे तहां ल्याई।
तहां बैठे श्रीराधामाधव बीरी खाइ खवाई।
सौंधौ लगाइ परस्पर अंगनि काम कला मन भाई मनाई।
अनि रति भांति श्रमित अति ह्वै पुनि पौढ़ि रहे दम्पति सुखदाई।
(श्री) वृन्दावन प्रभु चेरी बड़भागिन तब तहां चरण पलोटन आई।

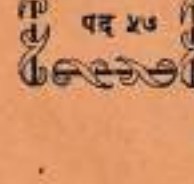

पद ४७

बिलसत आजु सुरत सुख दम्पति, कुञ्जमहल मिलिकैं सचुपायें।
ज्यौं ज्यौं लाज बाल कर परसत हाहा खात मृगज हगी कंपति।
इक कर गहैं नीवी नव नागरि इक कर कठिन उरोजनि ढंपति।
छिन तौ चित ललचाइ केलि पर बहुरि कालिह् सुधि आयें चंपति।
सारी रैन निहोरत बीती नाहि नहीं नन ना इह जंपति।
श्रीवृन्दावन दूलह दुलहिनि पर वारौं कोटि मदन की संपति।

राग दरबारी
पद ५८

जतन जतन कर्यों हूँ ल्याई हौं आई प्यारी पाऊं जो वचन देहुँ तबही चहन।
कहति हौं हाहा खाइ लेति हौं बलाइ लाल छुवो जिन याही देहु बैठे ये रहन।
रही मौन कोन दुरि दामिनिसी दीन ह्वै कै लागी जलधार दुहु नैननि बहन।
देखैं भुजबीच कुच रही कर गही नीवी देखिकैं दशा मोहि झेल्यौ है गहन।
आतुर जे होहु मधुसूदन रसिकवर मालती लतासों लागी अबही लह लहन।
(श्री) वृन्दावन प्रभु चतुर विचारि देखो भौंहि मुसकाये रस पैंडी इह न।

पद ५९

आवो वल्लभ जू मिलि चौपरि खेलैं। नांहि लगे मन बैठे अकेलैं।
अपनी दिश लेहु विशाखा सखी गुन की रूलिता ललिता हम मेलैं।
मन भावै सो बाजी बदो तुम ही तुम जीतो किधौं हमही तुम्हैं पेलैं।
(श्री) वृन्दावन प्रभु पूरे करे बिन ना रहे गोरस ख्याल अखेलैं।

पद ६०

खेलति चौपरि चन्दमुखी पिय संग सुरंग भरी अति सोहैं।
पासनि डारति सास भरैं मुसुकयाति विलोकनि मैं मन मोहैं।
उठाइ उठाइ कै सार धरैं सु भरैं छवि सों उपमा यों मिलैं।
ह्वै कै अधोमुख कञ्जन कञ्ज वराटक पुञ्ज मनों उगिलैं।
मन भावतो दांव परें न जबै रुगटांयों करैं हरि जू सों अरैं।
(श्री) वृन्दावन प्रभु हाव बनाव निहारि निहारि के अंक भरैं।

पद ६१

चमू चतुरङ्ग चमूपति ह्वै जिहि ख्याल मैं सारि सो खेलन लागे।
चाल में लाल श्री बाल महा सु प्रवीन अपार विचार मैं पागे।
जीति की रीति तकैं बहुतेराय दीन खिलार न दाव बनैं।
जिताइये प्यारीहि कों अब तो सु बिहारी विचारि हिये अपनैं।
सु जानिकैं चूक चलै अब श्यामहि हारे जू हारे ही श्यामा कह्यौ।
प्रभु दीजियो गाजी ह्वै बाजी अबै हंसि (श्री)वृन्दावनप्रभु हाथ गह्यौ।

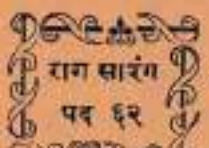

राग सारंग
पद ६२

जैंवत नन्द कुंवर वृषभानु दुलारी।
भोजन चारि प्रकार सु सुन्दर परसि धरी कंचन की थारी।
ओदन नाना भांति संवारे केशरि पुट दे दारि संवारी।
भरि भरि धरे कटोरा शिखरनि दूधदही घृत कढ़ी संवारी।
घेवर पूप पेरा अरु लडुवा फैनी अरु शर पूरो न्यारी।
बरा बिरौरी बरी मुगोरा और विविध तरकारी।
उशीर कपूर सुगन्धित शीतल भरि राखी यमुनोदक झारी।
देत परस्पर कवल मोद सों चितवत पिवाइ पियारी।
करि भोजन अँचवन लै दम्पति बैठे चित्र विचित्र अटारी।
करपूरादिक युग बीरी भरि धरी विशाखा रतन पिटारी।

नाना सुमन सुगन्ध नाना सौं रसमसे कुञ्ज बिहारी।
बीरी बर आरोगि प्रिया प्रिय पौढे कुसुम सेज सुखकारी।
रह्यो शेष परसाद थार में श्रीवृन्दावन ताको अधिकारी।

राग देवगंधार
पद ६३

भोर हि सुमिरौ श्री गोविन्द।
मोर मुकुट पटपीत लकुट कर मुरली अधर धरें गोकुल चन्द।
आछें काछें लाल काछनी चहुँदिशि गोपी गोप वृन्द।
(श्री) वृन्दावनप्रभु निज भक्तन पर बरषत कृपा सुधा सुखकन्द।

राग भैरव
पद ६४

भोरहि मंगल आरति कीजै।
मञ्जुल मदन बदन जोरी को निरखि निरखि कैं जीजै।
मङ्गल नाम कृष्ण गोविन्द हरि गोपीजन प्रिय लीजै।
श्रीवृन्दावन प्रभु त्रिभुवन मङ्गल यश सुधा श्रवन पुट पीजै।

पद ६५

करति मङ्गल नीराजन भरि कञ्चन भाजन कपूर की ललितादिक रस राती।
उठि बैठे दम्पति तिहुँलोक रूप सम्पति से नेह नोई बंधे देखि होति शीरी छाती।
अंग अंग रति रंग सनें बनें श्यामा श्याम काम केलि कला पूरे रसिक जन थाती।
परस्पर निरखि छबि श्रीवृन्दावन प्रभु रीझ लाई छतियां करें बतियां मन भाती।

राग कनडी
पद ६६

आरति गोकुलचन्द की देखो।
कोटि मदन मन मोहन शोभा निरखि निरखि जीवन फल लेखो।
घण्टा शङ्ख मृदङ्ग झालरी दुन्दुभि सुहुतर झिझ बजावो।
(श्री) वृन्दावन प्रभु त्रिभुवन पावन नाम लीला गुन गावो।

राग गौरी
पद ६७

आरति आरति हरन मुरारी।
जाकी ताप तापत्रय हरनी घण्टारव भव मोचन कारी।
जैजै धुनि सुर नर मुनि उचरें निज जन नाचत दै करतारी।
(श्री) वृन्दावन लखि मदनमोहन मुख वारत तन मन संपति सारी।

पद ६८

आरति करत यशोदा मैया।
गो रज रंजित अंग रङ्ग भरे गौर श्याम दोउ भैया।
कंचन थार कपूर की बाती बजावत बाजे बजैया।
श्रीवृन्दावन प्रभु निरखि निरखि मुख फिरि फिरि लेत बलैया।

पद ६९

भोर ते बाम सु नाम सरोवर साथ चली ललितादि अली की।
न्हाय बनाय सुकाय शिरोरुह माला गुही तहां कुन्द कली की।
दोउ विभाग कै केशनि बांधति शोभा बढ़ी वृषभानु लली की।
चन्द कहैं अरविन्द मनों मुख कैं गहि बांधत राहु बली की।
मोहन बंशी बजाइ संकेत यों प्यारी मया करि आई भली की।
(श्री) वृन्दावनप्रभु बंशी सुनी धुनि गैल गही उठि कुंज गली की।

राग कनड़ो
पद ७०

छिपो करि मांन छोड़ु प्रीतम सुजान सौं ।
सुधौ ऐसो जांनि तोहि बाल लाल लम्पट री जनावत प्रीति रीति बधू आंन र सौं ।
भौंन कौंन मौंन ह्वै कै बैठिजाय बोले मति ह्वै है आधीन आइ येई ये निदानसौं ।
(श्री) वृन्दावनप्रभु प्यारी लाजसौं तबैई मांन हौंहि कहूँ आइ जबलगि कछु कान सौं ।

पद ७१

पीठि दै नीठि सौं बैठी कबौं हूँ जानि प्रेमवती मन मांझ दुखारी ।
सखीसौं कह्यौ रहिहौं किहि भांति यौं सोच परयौ मनमांहि विचारी ।
मानवती सुनिकैं उठि आतुर आये ससंक से लाल बिहारी ।
श्रीवृन्दावन प्रभु प्यारी मिली उठि भूलि गई सब मान कथारी ।

पद ७२

सूनौं लगै जग नींद गई श्री निसास के बात ते गात जरायौ ।
पी दुख सौगुनौं और बढ्यौ जु मनोरथ मीतिन हीको फरायौ ।
पी मुख देखन हानी भई पुनि पांय परयौ छिति मैं बिछरायौ ।
श्रीवृन्दावनप्रभु सौं सजनी अब कहा गुन जांनि तैं मांन करायौ ।

पद ७३

बांम कयौं स्याम जु रोष तजौ करि रोस तजौ करि रोस अजू न कहा हम कीनौं ।
करौ अपराध छिमा अब तौ अपराध सुनौ हम आप मैं लीनौं ।
रोवत क्यौं तुम का आगै रोइ हौं नाहक रैन गोपाल नवीनौं ।
प्यारी जु प्यारी तिहारी कहै (श्री) वृन्दावन प्रभु जामं मन दीनौं ।

राग शकरा भरन
पद ७४

सब छोड़ि भयौ मन तोहि मैं लीन सु तेरे अधीन है जीवन मेरौ ।
निहारि निहारि कै तोहि कौं जीवत जीवत नाहिन और घनेरौ ।
अपराध तो वैसौ न जान्यौ परयौ अपराध भरयौ तउ चेरो हौं तेरौ ।
श्रीवृन्दावन स्वामिनि खरौ भूखो तो लैहै कहा बहु केशरी ऐरौ ।

पद ७५

कृपा करिये हरि ये अब कोप हियें धरिये हित प्रान पियारी ।
सन्मुख ह्वै अवलोकनि सौं इह सींचिये देह वियोग की जारी ।
विष रूंख हु लाइ न काटिये यौं सुनियें जगमांझ जू नीति कथारी ।
श्रीवृन्दावन स्वामिनि चिनदामनि मोल लयौ मोहि जोर कहारी ।

राग भूपाली
पद ७६

मिसरी जल ज्यौं मिलिकै अब मोमन ह्वै गयौ सुन्दरि तोही मयो है ।
जब ते निरख्यो तुव मूरति रूप अनूप हु नैननि मांझ छयो है ।
बिनु पानी के मीन ज्यौं दीन महा सुन सोतन मैन की ताप तयो है ।
(श्री) वृन्दावन स्वामिनि चिनदामनि भामनि तैं मोहि मोल लयो है ।

राग टोडी
पद ७७

आजु बनी रमनी कमनी सुन्दरता बरनौं कहा तेरी ।
प्यारी ? निहारि रह्यौ अंग अंगनि पाई नहीं उपमा कहुँ हेरी ।
डीठि लगै ना डिठौंना दयौ सु न लागी है डीठि डिठौंन हि मेरी ।
कहि श्रीवृन्दावन प्रभु सुकुमारी यौ तोहि लखैं चेत लागत चेरी ।

पद ७८

आजु सखी घनश्याम घनश्याम दुहुँनि होड परी ।
उत धुरवा इत अलकैं रही छूटि उत दामिनी इत पीत बसन री ।
उत हरि-चाप इत मोर चन्द्रिका उत गरजन इत मुरली धरन री ।
उत बरखूँदें इत लागी श्रीवृन्दावन प्रभु रस बरसन री ।

राग गौड़ी
पद ७९

निरखि देखि री कैसी इह राजत जोरी ।
श्याम तमाल लाल नन्दनन्दन कनक लता वृषभानु किशोरी ।
सजल नीलघन बरन साँवरो सौदामिनी द्युति राधा गोरी ।
मुरलीधर मधुकर रसलम्पट केतकी कीरति कन्या भोरी ।
इह विधि और और कछु रचना कहा बरनैं कविजन मति थोरी ।
(श्री) वृन्दावन ब्रज जनजीवन धन चाहि करत सबहिन चित चोरी ।

पद ८०

रहौ जु रहौ तुमसौं बोलत को है ।
तुमसौं नेह करैगी कोई विपरीते की जो है ।
चटक मटक इह काहि दिखावौ जो इन बातनि मोहै ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु कपट की बातनि मति उपजावो छोहै ।

राग परज
पद ८१

वही कहो किन ऐसी निठुराई ।
जो यैं मान ही सौं मन मानैं पहरक एक चौस ठहराई ।
सोउ जौलौं पिय आय पाय छ्वै मानत नाहिन आप बुराई ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु मैं कहा समझैं जो चले चलि तू बुद्धि पराई ।

पद ८२

सजे तन भूषन बसन पियारी ।
मानत ज्यों चलि कुञ्ज महल कौं जहां राजत युवराज बिहारी ।
भयो मन मोद सकल सखिजन कौं ज्यों कुमोद लखि चन्द्र कलारी ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु धाइ आइ भरि लई अंक भयो आनन्द भारी ।

राग गूजरी
पद ८३

तोरी अंखियां मोरा अखियां लई चुराई, छवि मिसरी की डरी चखाई ।
परी रसकैं चसकैं तबही तैं घर बन कछु न सुहाई ।
साथ लगी फिरैं लोभ लगी जिमि चुम्बक लोह लगाई ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु तुम ठगबाजी राखी भली सिखाई ।

पद ८४

मो मन बस नहीं कहा करिये हो । करिये तो कहा डरिये हो ।
निपट निठुर सौं लगि गईं अँखिया शिर बदनामी सौं डारिये हो ।
या ब्रज को सब लोग चबाई फूंकि फूंकि पग धरिये हो ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु ऐसी बनी अब विरह जलद कैसें तरिये हो ।

पद ८५

अन्तर कपटी जी, हमसौं अन्तर क्यांहा जीवांहा जी ।
रैन दिनां मैंनू ध्यान तुसाडा तुसाडी नजरि छल लपटी जी ।
अंखियां तैंडी रैन उनींदी मुखमाल उर चपटी जी ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु पीताम्बर तजि कब ओढी नीलाम्बर दुपटी जी ।

पद ८६

तेरी आंखिन के सुकाजरवा झलकैं, लखि लखि लगत न पलकैं।
कर गजरा मुरवारी बेशरि बेशरि आड़ किये छबि छलकैं।
भौंह कटीली गठीली अलकैं प्रीतम को मन ललकैं।
(श्री) वृन्दावन प्रभु देखि देखि तोहि मद गयन्द सौं महलकैं।

पद ८७

तूं माई मैंडा है वे। तूंही मैंडा प्रान पियारा मैं तैंडी लौंडी वे।
तू तो लोभी खुशबोही दा मैं गुलाब दी बौंडी वे।
(श्री) वृन्दावन प्रभु नागर नन्द दा मैं बड़े गोप दी मौंडी वे।

पद ८८

बहियां क्यौं मरोरी, तूं जानैं दे लंगरवा अपने घर को।
कहा कहौंगी घरैं जाइ हौं आई सासु ननद की चोरी।
गारी दै दै दान लेत हो प्रीति करन बरजोरी।
जाइ कहौंगी नन्दरानी सौं मोरी चूरी अमोलक फोरी।
करि राखे नन्दराय लाड़िले करो अनीति अब थोरी।
श्रीवृन्दावन प्रभु छैल अनोखो लारां लाग्यो मोरी।

पद ८९

साँवरे, रे पनियां लै जानैं दे।
बाट घाट हठि रोकत टोकत अधिक चवाई गांव रे।
घर गुरुजन डर की सुधि आयैं मोहि आवत है तांव रे।
(श्री) वृन्दावन प्रभु निपट निठुर तुम या हित हौं बदनाम रे।

पद ९०

छांड़ि छांड़ि रे लंगरवा चीर अजित तू जाति अहीर।
सास की त्रास मोहि सूकत जियरा कहा करौं बलबीर॥
जिठानी बड़ी अनखानी सी मोसौं ननद निगोड़ी के नांही तैं पीर।
(श्री) वृन्दावन प्रभु बहोत बेर भई मोहि भरनों है नीर॥

पद ९१

गोरी पनिहारी हरि सौं अटकी।
बार बार पनिघट चलि आवति गजगति लटकी लटकी।
कौतुक मिस कबहूक बनावति कबहूंके फोरति मटकी।
(श्री) वृन्दावन प्रभु परीजु चसकैं रूप सुधा अब गटकी।

राग खम्भावती, पद ९२

चारयौं दूलह बनैं कुंवर अवधेश के, चले ब्याहन अली जनक नृप कैं सदन।
छुहे बागे बनें सरस सौंधें सनें थकित रहि गयो निरखि शोभा मदन।
सोहैं शिर सेहरा खचित नग जगमगत लगत कमनीय अति विमल विधु से वदन।
भाल पीरा गरैं लसत हीरा पदिक दमकैं मुसुकानि में शिखिर मणि से रदन॥१॥
विविध भूषन बसन सजी चतुरंगिनी लगी चकचौंधि सी मिलें दिन मनि करन।
नटी नाच नटी चलनचली तखतनि चढ़ी बजत नौबति मिली सकल बाजनि धरनि॥२
जनकपुर घर डगर डगर वन वाटिका खचितमणि को सकै ताकी शोभा बरनि।
सबही सम्पति भरयो ब्याह कौं देखिवे अवरिं मनौं अमरपुर उतरि आयो धरनि॥२

लैकैं जनिवास तें बाग रचना भई पुरुष गज अश्व कपि और कौतिक घनैं।
अग्नि के यन्त्र तहाँ छुटन लागे अगन घर गगन जीति मैं मनडं तिहिं छिन ठनैं।
बाजि गज बसन अरु बिबिध भूषन सबै तनक हू न थाकहीं देत मंगन जनैं।
स्तुति करैं बन्दि जन बिरद बरनैंन ये मिले मागध सबैं वहूं वंशनि भनैं।
चडड़े अश्वनि चढ़े कुंवर समद् बढ़े पढ़े के थांन अस नचत छिये मांन कौं।
उततें सजि सैंन निज जनक नृप देन तें लैंन आये सु महँ जांनि मनि जांन कौं।
समधि समधी मिले परस्पर अति खिले नारि मिलि गारि दै करन लागी गांन कौं।
अटनि चढ़ि पुरवधू धारे भूषन बसन देखि कैं बिबस भई रघुवश भांन कौं।
पौरि पहुँचे तहां चारि तोरण बंधे गजनि चढ़ि खड़ग सौं जाइ परसे।
उतरि भीतरि गए गज सु नेगिन लए शब्द जै जै भए कुंवर दुर से।
रहसि पुर नारि सब वारि सर्वसु कहैं देह धरैं चारि नृप पुन्य फर से।
जनक कुल प्रोहुननि आनि करि आरती तिहिं समैं देव सुमन मोती बरसे।
थार मणि मानिकनि भर्यौ मन्त्रनि खरी तिलक करि द्विज वधू अछत लाए।
चातुरनि पातुरनि तिहि समैं मोहिलैं अधिक मन मोहिलै मधुर गाए।
सफल करि लेखनैं नैंन पुनि पेखनैं देखनैं देव दिगपाल आए।
बिबिध अद्भुत बनैं घनैं नभ जान सौं दिश बिदिश सकल आकाश छाए।
ब्याहु मण्डप तरें जाइ ठाढ़े भए यथा विधि द्विज वरांग ब्याह ठान्यौं।
च्यारि रचे मांड़ए तिनहिं तहां लै गए कन्या वर जोग तहां आनि बान्यौं।
लाइ पट गांठि परसाय कर दुहूँनि के बनां बनी परस्पर मोद मान्यौं।
फेरा लिवाए जु अग्नि कौं साखि दै कीन्यौ नृप कन्यका दांन पान्यौं।
दुग्ध ओदन तहां परस्पर कवल दैन बल युवति जुवां वहोत हरखे।
वहीं निश निरखि शुभ शरद उडराज से अवधि महाराज सुत चित करखे।
कुंवरि हू वहिं निश सुघर नवशि लखि रूप अपनें योग्य निज नाह परखे।
तिहूँ पुर तिहि दिवस परम मंगल भए संक भई लंक पन रुधिर बरसे।
द्विजन दई दछिना ग्राम गज तुरंग रथ रतन पट वरन वे जात काएँ।
खोलि भण्डार दए भूप सब आपन लेहु जाचक जु लियो जाइ जापैं।
करि ज्यौंनार अस चतुर विधि भोजननि रुचिसौं जैंवें बहुरि जदपि धापैं।
पूजि कुलदेव कौं खोलि जूवा तहां बिछुये दये पलिक जाय बैठे तापैं।
बिबिधि दिए दाइजे करी पहिरांवनी अवधि भूपाल भए अधिक राजी।
धन हूँ पुनि जाचकनि दिये अति मोद सौं अनगनित वसन मणि नाग बाजी।
चले लै दुलहनिनि कुंवर निज नगर कौं चढ़ी चढ़ि फौज सौ अधिक छाजी।
चहूँ दिश धनि उठे बिबिधि बाजे घनै घन ज्यौं गंभीर नौवति जु बाजी।
आइ पहुँचे कितेक दिननि मैं अवधि कौं अवधि नव निधि भरी पटनि छाई।
कियो परवेश तब करिकैं गांठि जोर तहां सुघर वर नव किशोर चारयौं भाई।

साजि कैं आरती जननि लीन्यों तबै युवति जन संग लियें साम्हं आई।
आरती करि जु पुनि वारि मनि मानिकनि श्रीवृन्दावन प्रभुनि की लई बलाई।

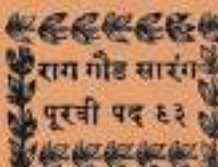

राग गौड सारंग पूरवी पद ९२

खेलत चारयों नृप दशरथ सुत अवनि चौक चौगांन।
राम लछन अरु भरत शत्रुघन अनुचर लियें समांन।
जहां फरस कंचन ईंटनि रचि कुन्दनि कीच मिलाई।
दुहूं दिश द्वै द्वै रचे सुनारे नाना रतन गिलाई।
चढ़े सित हय भूषित नाना नग पग न लगत जिहि भूमि।
मनों चंचल शारदघन ऊपर नील जलद रह्यो झूमि।
रजत गैंद सोनैं चोगानैं भरे खरे गज केते।
दोटा देत टूटत हैं जेते डारि देत पुनि तेते।
रघुवर कर चौगान फिरावत अति अद्‌भुत छवि पावत।
मनहुँ नील जलधर अपनें कर चपला लियें नचावत।
दोटा देत हाटा चारयोंई अपनी अपनी पच्छ।
लैं लैं जात उठाइ धाइ कैं एक एक तैं दच्छ।
लैं लै जात सुनारनि बिच ह्वै तिन्हें चकसत श्री राम।
श्री वृन्दावन प्रभु हय भूषण अम्बर पूरन काम।

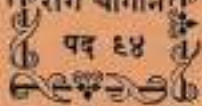

राग चौगान पद ९४

खेलि तहां चौगान जान मनि चतुरंगनि लियें संग।
चले निज सदन मदन मनमोहन कर कमान कटि धरें निषंग।
अबलख रंग तुरंग चढ़े तब चलत राम छवि धाम।
नांचत ताल बंधान मांन लियें मनों सधायो काम।
कीनैं विविध सिंगार अवार गज पचरंग धरैं निशांन।
ते आगें निकसे मद झरते भरते अचल समान।
तिन पीछैं असवार हजारनि कोबि बरा करि कीनैं।
राज कुमार मदन मदगञ्जन अप अपनी दुति लीनैं।
तिन पीछैं हैगे पर नौबति बजत मधुर मादानैं।
तिन पीछैं तुरंगनि चढ़े केते लीनैं पचरङ्ग बानैं।
तिन पीछै नानारंग धीरे कोतल जात सिंगारे।
मीन ध्वज फहरात गजन पर जरकस में जु संवारे।
किते गजन पर बनें सुरातब कञ्चन कलस बनाये।
झारि अमरपुर सकल अमर गन देखन कौतुक आये।
तिन पीछैं जु पदाति भांति बहु उनको बनी अछेव।
आसपास निज दासन के गन आवत गहैं रकेव।

केउ लियें धवल छत्र मुकतामय केऊ वरें चँवर चतुर बड भाग ।
घर अंबर जैजै धुनि उचरत तन मन अति अनुराग ।
केऊ लियें पानदान केउ जल केउ लियें नाना हथियार ।
केऊ कौनि' लियें विविध खिलौनें केउ पंछिन पिंजरेनु अपार ।
केऊ मृगादि नाना जीवनिगन लियें चलेंई आत ।
लखन भरत असवार दुहूँदिश पाछैं शत्रुघन भ्रात ।
दुहूँ दिश कोर बराबर बन्दी नये नये बिरद बखानत जात ।
सुनि सुनि भ्रात भृत्यगन तनमन मोदन कहूँ समात ।
कंचन छरी जटित नाना नग छरीदार लियें पानि ।
चढ़े चढ़े घोरन ते जे निकसैं पारत आंनि ।
नगर नारि सुकुमारि अटनि चढ़ि वारति अभरन प्रांन ।
अमर नारि बरषत चलैं फूलनि नभ छय रह्यो विमान ।
पीछैं फौज भारी असवारी आवत दशरथ वृन्द ।
निज महल चौक बड़े बाहिर कैं आय प्रवेश कियो रघुचन्द ।
वनिता कुमुद फूली अंतहपुर लखि लखि जालिन मांझ ।
करि प्रनाम प्रभु तातमात कौं प्रिया सदन गए सांझ ।
करि संध्यावन्दन शाला पैं जाय बियारू कीन ।
चारि प्रकार नाना विध भोजन सँग लियें भाई तीन ।
पुनि आप अपनैं महल सिधारे लियें सहेलिन संग ।
प्यारिनि मिलि बीरी आरोगे (श्री) वृन्दावन प्रभु भीनें रतिरंग ।

राग खट् वा बिहागरो
पद ६५
ब्याहलो

आजु दूलह बन्यौं कुंवर नन्दराय को चल्यौ ब्याहन सखि कुंज मंजुल सदन ।
रसिक शिरमौर फूलनि रच्यौ वारिये कोटि विधु निरखि सुन्दर वदन ।
देखि कैं देशअरु काल पुनि पात्र सब साध्यौ निजतंत्र लखि मदन पंडित लगन ।
बीना मृदंग मुहचंग मुरली मिली गीत गावैं अली युगल लीला मगन ।
कल्पद्रुम कुंज कैं द्वार तौरन बनें कनक चम्पकसरल लाग्यो मांडो लसन ।
पवन के गवन वश उड़ रही सुमन रज तनि रह्यो पीत मनौं चारु चंदुवा बसन ।
सखीजन गांधर्व विधि विधान मंत्र करि फेरा लिवाये जु करिकै साच्छी दहन ।
केऊ सखी विमल कुल दुहूँनि प्रोहित भई केउ मागध भई लगी वंशनि कहन ।
बरष्यो तहाँ मोद चहुँ कोद वृन्दाविपिन सबनि दई दच्छनां वसनि भूषन अदन ।
रहसि (श्री) वृन्दावन प्रभु दम्पति मिले भली विधि जोसि की भांति पूज्यो मदन ।

पद ९६

मोहै सुन्दर नन्दकुमर शिर सेहरा ।
चले भले बानिक ब्याहने कों मंजु कुंजन के गेहरा ।
सुहैं बागैं जागैं बनि नीके दृग सींचत रस मेहरा ।
फेंटा लेन प्यारी सखी सों गांठि पीतपट छेहरा ।
देखि देखि दुलहनि छवि दुलह बढत दूनों दूनों नेहरा ।
(श्री) वृन्दावन प्रभु यह सुख निरखत वारि डारों चित देहरा ।

पद ९७

आजु ब्याह सखि कुंज महल में दुलहिन राधा नन्दकुमर वर ।
गावति हैं नारि नये सोहिले सुहाये तैसो वृन्दावन फूल्यो रह्यो छबिकैं परागभर ।
बनां बनी गांठि जोरि खिवायो हथलेवा जब हाथें देखि छकि गये लालन सुघर ।
मिहदी के विन्दु कैसे राजैं इन्दुमुखी कर मानों इन्द्रवधू पांति बैठी अरविन्द पर ।
पहै पट घूंघट द्युति दूनी खिलै आनन की मानों झानें लाल घन झलकत सुधाधर ।
(श्री) वृन्दावनप्रभु दूलह चकोर दृग ललकत देखि देखि शोभा को निकर ।

राग टोडी
पद ९८

शिशुता को जीति काम लीन्हों पुरवाम तन जानि आप कीत तन ।
कीनी निज रज धानी मनमानि नाना ठौर रची तहां कारीगर जोबन ।
त्रिबली सलिता तट कुच ऊँचे-महल रचि रच्यो रूप उपवन सघन ।
पार नाभि गोल कुण्ड बांधि पुल कांचन कों रोमराजी सुत बांध्यो आनि सिंगार अंजन
धरयो भागनगर नांव बसाये बडे बडे साह सातिक संचारी दै दै अंग सदन ।
वृन्दावन प्रभु प्रेमनगर निवासी साह लागे खेप भरन रस रतन ।

(यह पद तेरहवें घाट की २४वीं संख्या में है)

॥ इति श्रीगीतामृतगंगा सर्व रस निश्रय वर्णन घाट त्रयोदश ॥

❀ अथ चतुर्दश घाट ❀

॥ दोहा ॥

विधि शिव नारद पवनसुत, सरसुति इन करि ध्यान । साम वेद उपवेद को, करत कछू व्याख्यान ॥१
साम वेद को यह कह्यो उपवेदजु गांधर्व । वाको लच्छन कहत हौं सुनियो पंडित सर्व ॥२
स्वर समूह पद में धरै ताल सहित गुन गान । गावै धीरज धरि हियें कहैं गांधर्व सुजान ॥३
दयो विधाता प्रथम इह नारदादि कौं चाहि । विधि नारदादिकन हू बरनि उचार्यो वाहि ॥४
नाद ब्रह्म गांधर्व है या बिन सुर नहिं नृत्य । नहीं गीत या बिन कछू तातें इह है नित्य ॥५
छुटत वायु तें नाद है, वातें सुर संघात । सुर तैं उपजत राग सुनि, जन विह्वल ह्वै जात ॥६
याही तैं कलि काल मैं सब साधन मैं मुख्य । कह्यो कीरतन व्यास शुक, ज्यौं नक्षत्र मैं पुष्य ॥७
यातैं मुख्य गांधर्वयुत, करैं गान जो कोइ । इत सुख तें अनयास सौं हरिपद पहुँचे सोइ ॥८
निषद ऋषभ गांधार अरु, मध्यम धैवत पांच । पञ्चम षड्ज ये द्वै मिलैं होहिं सप्तसुर सांच ॥९
स्वर निषाद गजमत्त मैं ऋषभ गाइ दात्यूह । गांधार स्वर अज भयौं षड्ज मयूर समूह ॥१०
कुरज कहैं मध्यम सुरहिं, धैवत दादुर अश्व । कोकिलि पंचम स्वर कहैं जिहिं बसन्त सर्वस्व ॥११
ग्राम तीन यहैं कहैं, मद्र मध्य अरु तार । बाक्या इन ही दशनि तें रागनि को परिवार॥१२

॥ चौपाई ॥

श्री पंचम भैरव जु बसन्त ❀ पंचवों मेघहु राग लसन्त ॥
नटनारायण छटवों कह्यो ❀ महादेव मत सौ इह लह्यो ॥
अब इनकी रागिन सुनि लीजै ❀ छहूँनि छहूँनि नामनि मन दीजै॥
मालव त्रिवन गौरी केदारा ❀ मधुमाधव पहरी श्री दारा ॥

॥ दोह ॥

मालसिरी पटमंजरी भूपाली रु विभास । कर्णाटी बड़हंस षट् स्त्री पंचम के पास ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

भैरवी अरु गूजरी रेवा ❀ बङ्गाली बहुली करैं सेवा ।
छट्ठी गुणकरी है भैरों की ❀ नारी सुनों अब तुम औरों की ॥१७॥
देशी देवगिरी बैरारी ❀ टोडी ललित हिंडोल जु नारि ।
ये बसन्त की छहौं पियारी ❀ अब सुनौं मेघ राग की नारी ॥१८॥

॥ दोहा ॥

हरसिंगार गांधार अरु तीजी कही मलार। सावेरि सोरठ कौशिकी एजु छठी सुकुमार ॥१६॥
आभीरी सारंग अरु नट कमोद कल्यान। तिन में छटी हमीर तिय नट नारायण जान ॥२०॥
बेटा बेटी छहूँनि के रागन के जु अपार। ते हम यहां नाहिन कहे होइ ग्रन्थ विस्तार ॥२१॥
संगीतसार हनुमान अरु रागार्णव मत तीन। जगद्वाल बहु देखि कैं हम न इहां लिखि दीन ॥२२॥
तान मूर्च्छना श्रुति सबै हैं इनके हि विलास। ह्वाँ नारदादिकन ते इन निज रूप प्रकाश ॥२३॥
आभास मात्र अब हैं कहूँ सोऊ बिरलै थांन। मोहि बात जिनकैं सुनै रान खान सुलतान ॥२४॥
चढ़ि उतरैं जब सप्त सुर मूर्छना सोइ जानि। गणना इनकी कहत हैं एक बीरा परवांनि ॥२५॥
राग रूप के श्रवन कौं कहत जु श्रुति सुजांन। ताही श्रुति के तू अवैं भेद बीश द्वै जांन ॥२६॥
खाडव ओडव कीजिये मूरछना कौं आनि। शुद्ध तांन तब होत है यहै जु चित्त में जानि ॥२७॥
कहै जु मात्रा भेद तें नानाविध के ताल। कहत इहां संक्षेप सौं ताल रूप कौं हाल ॥२८॥
क्रिया काल की ताल है मान सु वाको अन्त। उन दोउन को इयांमको गुनिजन लय जु कहन्त ॥२९॥
तत आनद्ध सुषिर घन बाजे चारि प्रकार। र बाब बीन कौं आदि तत बजैं तांति अरु तार ॥३०॥
मृदंगादि आनद्ध ए जे अम मँढे हैं खाल। सुषिर बजैं जे फूंक सौं ते बजये गोपाल ॥३१॥
ताल झाँझि कौ आदि जे घन कहि इन इन नाम। निरो वात के सकल ए इनतिन सरैं न काम ॥३२
आनद्ध घन इन दुहूँन में बजै न राग सुरूप। बाजत तत अरु सुषिर में मूरति वन्त अनूप ॥३३॥
नाचहु कौ कछु भेद इह कहत बुद्धि अनुसार। नाना ग्रन्थनि पंडितन कहे जु करि विस्तार ॥३४॥
अंग हार बहु विधनि करि नाट्य नृत्य अरु नृत्त। नांच भेद मुख तीन यौं भेदहु हैं बहु मित्त ॥३५॥
नाचि सबै ही गीत को अभिनय करि इकवार। ताहि कहत हैं नाट्य सब काव्य धन्य करतार ॥३६॥
भिन्न भिन्न सब गीत को अभिनय नचि दरसाइ। ताहि कहत हैं नृत्य जे हैं पंडित कविराइ ॥३७॥
अंगहार केवल जहां ताहि कहत हैं नृत्त। यामें कछु सन्देह नहि समुझो सुघर सुवृत्त ॥३८॥

॥ इति श्रीगीतामृत गंगा गांधर्वोपवेद संक्षिप्त विवरण पाठ चतुर्दशः ॥

॥ फलश्रुति ॥

दोहा—वृन्दावन गिरि तैं चली रसकी उठत तरंग। करहु स्नान नित भक्तमन इहि गीतामृत गंग ॥३९

इति श्रीश्रीमन्नारायणदेव गोस्वामी चरण कमल मकरंद मिलिन्द
श्रीवृन्दावनदेव गोस्वामी कृता श्रीगीतामृत गंगा समाप्ता

सम्पादकीय—

माननीय पाठक वृन्द !

श्री सर्वेश्वर के आरम्भिक अंक आप सब की सेवामें समर्पित किये गये थे उनको सभी प्रेमी जनों ने अपनाया और बहुत से सज्जनों ने मनिया-र्डर द्वारा वर्षिक सहायता भेजकर अपनी रुचि का परिचय दिया. साथ ही प्रशंसात्मक-उल्लेखों द्वारा पत्र परिकर का उत्साह भी बढ़ाया. उनके पश्चात इस अंक के प्रकाशन- एवं प्रेषण में अधिक विलम्ब होगया है . विलम्ब के सम्बन्ध में बहुत से प्रेमी पाठकों ने पत्रों द्वारा पूछ ताछ भी की. विशेष कर उन महानु भावों के चित्त में आतुरता होना स्वाभाविक भी था जिनने कि अग्रिम वार्षिक सहायता भेज दी थी वास्तव में आरम्भिक- अवस्था ही में ऐसे विलम्ब होजाने से पाठकों के चित्त में अविश्वास का भी कुछ अंकुर उद्भूत होसकता है, किन्तु हमारे प्रेमी पाठकों नें अटल विश्वास और पूर्ण धैर्य रक्खा, एतदर्थ श्री सर्वेश्वर परिकर पाठकों का आभारी है ,

विलम्ब होने मे और कोई खास कारण नहीं था केवल दोही हेतु थे.एक तो यह कि उद्देश्यानु-सार पहले इस अंक में कौनसी सामग्री प्रकाशित की जाय, दूसरा श्री सर्वेश्वर परिकर का आचार्य पाद के साथ पर्य्यटन में अधिक समय लग जाना ।

पाठकों को धार्मिक ऐतिहासिक- सुललित निबन्ध और संस्कृत हिन्दी एवं ब्रजभाषाका अप्रकाशित प्राचीन गद्यपद्यात्मक साहित्य मिलता रहै जिससे वसुक पाठकों की अभिरुचि बढ़ै और साहित्य प्रसार द्वारा धार्मिक शैक्षक सेवा हो सकै,यही "श्री सर्वेश्वर„ का मुख्य उद्देश्य है ।

पूर्वाचार्यों के अप्रकाशित ग्रन्थों में श्री वृन्दावनवाणी (श्री गीतामृतगंगा) एक अनुपम ग्रन्थ है यह बहुत से हिन्दी साहित्य के अन्वेष-कों को भी अभीतक सम्भवत उपलब्ध नहीं हो सका था. इधर श्री निम्बार्काचार्य पीठ की प्रतियां भी इतस्ततः हो गई थी. बहुत अन्वेषण करने पर इस ग्रन्थ की एक प्रति श्री वृन्दावन धाम में और दूसरी प्रति उज्जैन में प्राप्त हुई . ये दोनों प्रतियां दोसौ वर्षों से भी पूर्व की लिखी हुई हैं, इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में कइ एक लेखकों नें यहां तक लिख दिया था कि श्री वृन्दावन वाणी तो आकाश का तारा होगया, अब उपलब्ध होना कठिन है । ऐसी स्थिति में विचार विमर्श के पश्चात् यही निश्चय हुआ कि इसी ग्रन्थ को विशेष रूप से ६ मास का एक छोटासा विशिष्टांक पाठकों को भेंट किया जाय तदनुसार इसे ही प्रकाशित कर प्रेमी पाठकों के लिये अर्पण किया है । पाठक इसकी विशेष उपादेयता स्वयं भी समझेंगे और कुछ बातें प्रारम्भिक परिचय लेख को पढकर जान सकेंगे । यह विशेष ध्यान रहै कि- यह ग्रन्थ केवल काव्य की दृष्टि से ही न देखाजाय अपितु भगवद्भावावेशस्थ आचार्य पाद की इस वाणी को मन्त्र स्वरूप समझ कर पाठक-सज्जन इसका विशेष आदर करें,एवं श्रद्धापूर्वक-पठन और मनन करें ।यह निश्चित है कि सच्ची श्रद्धा से इस वाणी के उपयोग करने वाले भावुक भक्तों को अपने चौदह पादों द्वारा यह श्री गीतामृतगंगा चौदह लोकों से उत्तम तत्व का अनुभव और उसकी ललित लीला का रसास्वादन करायेगी।

इस ग्रन्थ में आचार्यवाद ने भगवान् की अवतार लीला से आरम्भ कर नित्य विहार पर्यन्त की लीला ओं का सुन्दर उपादेय ढंग से संक्षेप में संकलन किया है. प्रत्येक पद लालित्य उपमा अर्थगौरव प्रासादादिक गुणों से गुम्फित है। और सभी पद गायन में बड़े सुन्दर ढंग से बैठते हैं, दान मान विरह अभिलाषा विनय उरहना आदि सभी रसों का चित्रण हृदयग्राही है। आगामी अंकों में भी इसी प्रकार उत्तम उपादेय सामग्री पाठकों को मिलेगी ऐसी चेष्टा की जारही है।

कई एक लेखक महानुभावों नें सुन्दर लेख कविता आदि सामिग्री भेजने की कृपा की और अपनी अनुपम कृतियों द्वारा अपने पत्र को प्रशंसनीय सहयोग दिया, एतदर्थ श्री सर्वेश्वर परिकर की ओर से उनको धन्यवाद समर्पण किया जाता है,किन्तु इस अंकमें स्थानाभाव से वे लेख एवं कवितायें प्रकाशित नहीं हो सकी हैं, अत: उन महानु भावों से नम्र निवेदन है कि वह सामग्री सुरक्षित है आगामी अंकों में जहां तक हो सकेगा उनको अवश्य स्थान दिया जायेगा। आशा है उत्साही लेखक विद्वान इसी प्रकार सामग्री द्वारा अपने पत्र की सहायता करते रहेंगे. और पाठक वृन्द- ग्राहकों की भी संख्या बढ़ाते रहेंगे. जिससे कि आपका यह पत्र उत्तरोत्तर उन्नति की ओर बढ़ता रहे।

इस ग्रन्थ की सामग्रियों के सम्पादन में किशनगढ़ नरेश महाराजा साहब श्री सुमेरसिंह जी अपने राजकीय चित्र कोष से आचार्यचरण एवं महाराज कुमार श्री सावन्तसिंह जी श्रीव्रजानन्द जी प्रसिद्ध कविवर श्री आनन्दघन जी आदि के चित्र एवं तवारीख से उनके इतिवृत्त देखने की स्वीकृति प्रदान कर अनुपम सहायता प्रदान की एतदर्थ आपको शुभकामना पूर्वक शतशोधन्यवाद,महता श्रीनारायणदासजी(भूतपूर्व होम मेंबर किशनगढ़ राज्य) ठाकुर साहब श्री रिडमल सिंहजी (भूतपूर्व अध्यक्ष तवारीख किशनगढ़ राज्य) बाबाई श्रीबालकृष्णजी, राजपुरोहित-पं० श्री बालमुकुन्द जी आदि महानुभावों ने चित्रों के तथा तवारीख के देखने की सुव्यवस्था की। कीर्तनियां बाबा रणछोड़दास जी, पं० श्री रामलाल जयनारायण शर्मा नासरावत (सलेमाबाद) ने उपरोक्त सामग्री प्राप्त करने के लिये और तन मन से सहयोग देकर उत्साह बढ़ाया। पं० श्रीगोपालदत्त जी एम. ए. मथुरा ने श्रीगीतामृत गंगा का मनन कर विशेषताएं प्रदर्शित की, श्री पुरुषोत्तमदास चित्रकार (चरखारी) ने प्राचीन चित्रों की ब्लाक योग्य प्रतियाँ बनाकर प्रशंसनीय सेवा की। एतदर्थ उक्त सभी महानुभावों को श्रीसर्वेश्वर परिकर की ओर से हम हार्दिक धन्यवाद समर्पण करते हैं।

इसके मुद्रण में पं० श्री दानबिहारीलाल जी शर्मा मैनेजर विद्यालय प्रेस, एवं प्रेस परिकर ने बड़ी तत्परता की, एतदर्थ आप विशेष धन्यवादार्ह हैं।

यद्यपि सम्पादन कार्य जैसा होना चाहिये था वैसा नहीं हो सका। कई एक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण संशोधन और मुद्रण सम्बन्धी भी बहुत सी अशुद्धियां रह गई हैं, तथापि हर्ष यही है कि पाठकों के करकमलों में एक अलभ्य अप्रकाशित ग्रन्थ रत्न समर्पण होरहा है। अतः हमें पूर्ण विश्वास है कि प्रेमी पाठक त्रुटियों पर ध्यान न देकर वास्तविक वस्तु को हृदय से अपनायेंगे और हमारे इस आरम्भिक श्रम को सफल बनाकर भावी उत्साह को बढ़ायेंगे।

—सम्पादक

भारत की प्राचीन आदर्श स्थलों में निम्बग्राम स्थ श्रीनिम्बार्क भगवान् की

एक तपःस्थली

आज स्वतंत्र भारत अपने देश की प्राचीन आदर्श विभूतियों का अन्वेषण कर उनकी उन्नति एवं सुरक्षा के लिये प्रयत्नशील है। ऐसी आदर्श विभूतियों में बहुत से प्राचीन स्थल तो भूमि सात हो चुके, बहुत से भग्नावशिष्ट रह गये; बहुत से स्थल प्रकट रूप में रहते हुए भी कई एक कारणों से उन्नत नहीं हो पाये। ऐसे स्थलों की गणना में भारत की पुनीत व्रजभूमि के मध्यवर्ती गिरिराज श्री गोवर्धन की पश्चिम तलस्थ का में स्थित गुफा एवं आद्य श्री निम्बार्काचार्य की तपस्थली भी मुख्य उल्लेखनीय है। यद्यपि इन तपस्थली के उपकारों से, सम्भवतः बहुत से भारतीय अपरिचित बन बैठे हैं तथापि उनके अत्यन्त समीप बसा हुआ, निम्बग्राम आचार्य श्री के उस प्रभाव का अब भी स्मरण कराता है, निम्बवृक्ष पर सूर्य को रोक देने वाली उस आश्चर्य मयी घटना का-एक विश्व हितैषी रहस्य था जब कि देश पर भयंकर अज्ञानान्धकार ने आक्रमण किया तब भगवान् के परम प्रिय आयुधराज श्री सुदर्शन चक्रही श्रीनिम्बार्क रूप से भूतल पर अवतीर्ण हुआ. श्रीनिम्बार्क ने केवल निम्ब पर ही सूर्य नहीं चमकाया अपितु अनेक कष्टों के कारण निम्ब के समान कटु प्रतीत होने वाले संसार में ज्ञान रूपी एक अनुपम ज्योति का प्रकाश फैलाया था, ऐसे पूज्य आचार्य का समस्त विश्व ही ऋणी है. भारत का यह महान् गौरव है जहां पर कि ऐसी दिव्य ज्योति का आविर्भाव हुआ और उसका प्रकाश समस्त विश्व में व्याप्त हुआ, भारतीयों ने इस तपस्थली की बड़े आदर और श्रद्धा से पूजा की और सुरक्षा भी रक्खी. किन्तु विदेशी शासकों के शासन में जैसे मथुरा पुरी अनेकों बार तहस नहस हुई उसी प्रकार श्रीनिम्बार्क भगवान् की तप-स्थली के आश्रम को भी अनेकों आघातों का सहन करना पड़ा। २ शताब्दियों के पूर्व जब व्रज का शासन भरत पुर नरेशों के हाथ में आया तब भरतपुर नरेश महाराजा दुर्जनसाल जी ने " निम्ब ग्राम " को पुनः श्री निम्बार्क भगवान् की सेवा में समर्पित कर दिया था, किन्तु थोड़े ही समय के पश्चात् भरतपुर राज्य और अँग्रेजों का युद्ध छिड़ गया; तत्कालीन श्री निम्बार्काचार्य श्रीश्री जी महाराज ने अँग्रेजों के विरुद्ध भरतपुर नरेश का पक्ष लिया और अपने अखाड़े के वीर वैष्णवों द्वारा भरतपुर की काफी सहायता की।

दैवयोग और राजपरिवार की फूट ने अँग्रेजों को जिता दिया; उसी द्वेष के कारण अँग्रेजों ने निम्ब ग्राम और श्री सर्वेश्वर भगवान् की सेवा में लगे हुए "सूरज कुण्ड" आदि अजमेर परगने के गांव जब्त कर लिये, तब से निम्बग्रामस्थ श्री निम्बार्क भगवान की सेवा पूजा एवं भोग-राग में कमी हो गई एवं जीर्ण शीर्ण आश्रम के मकान भी गिर पड़े वि० सं० १९०० श्रीश्री जी श्रीगोपीश्वर शरण देव जी महाराज के समय में इसका जीर्णोद्धार एवं मंदिर का नव निर्माण हुआ, करौली आदि के नरेशों ने भी कुछ सेवा प्रबन्ध किया, फिर पं० श्री किशोर दास जी वंशीवट आदि महानुभावों के प्रयत्न से जयपुर के वैष्णवों ने भी अच्छा भाग लिया। वृन्दावन के संतों एवं भक्तों ने रासमंडल का जीर्णोद्धार करवा कर एक कमी की पूर्ति की वि० सं० २००६ में सेठ झूमरलाल जी का परिवार एवं श्री निम्बार्क सत्संग मंडल जयपुर ने फिर से जीर्णोद्धार कराया। महंत श्रीराधिका-दासजी तथा अधिकारी श्री माधव दास जी रैनवाल की ओर से थोड़ा संगमरमर का फर्श भी लगा

किन्तु यह कहना अनुचित न होगा कि देश के महान उपकारक आचार्य के ऋण से अभी तक देश उऋण नहीं कहा जा सकता, अतः धार्मिक जनता को इधर ध्यान देना परमावश्यक है। हमारी वर्तमान सरकार से हमें अनुरोध करना चाहिये कि अँग्रेजों के समय जब्त किये हुए वे ग्राम पुनः इन प्राचीन आदर्श देव स्थानों के अर्पण किये जांय जिससे कि इनकी सेवा का प्रबंध पूर्ववत् सुव्यवस्थित हो सके और ये सुरक्षित रह सकें। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के महन्त समृद्धिशाली मठाधीश भी इधर ध्यान नहीं देते; अन्यथा यह आदर्श स्थल इतने अन्धकार में नहीं रहता। श्री शंकर जैसे आचार्यों की जन्म भूमि पर विशिष्ट विद्यालय की स्थापना और उनके सिद्धान्त के अध्ययन की योजना चल रही है। किन्तु जिस आचार्य श्री निम्बार्क ने विश्व को जैसा अनुपम ज्ञानवज्र प्रदान किया था, उसकी आज कितनी आवश्यकता है। उस ज्ञान का प्रसार वर्तमान समय में कितना उपयुक्त हो सकता है। प्रान्तीय एवं केन्द्रीय सरकार को यह सुझाया जाय।

इसके अतिरिक्त दूसरा सरल मार्ग एक यह भी है—विश्व एवं भारत में ही श्री निम्बार्क सम्प्रदाय के लाखों व्यक्ति हैं, प्रत्येक स्त्री पुरुष का कर्तव्य है कि वर्ष भर में कम से कम एकबार श्री निम्बार्क जयन्ती (कार्तिक शु० १५) को तो इस आश्रम का स्मरण करें और यहाँ उपस्थित होकर आचार्य्य प्रतिमा का अर्चन वंदन करें। इतना भी नहीं हो सके तो जहाँ हो वहीं पर ही आश्रम का और आचार्य चरण का स्मरण कर कम से कम ५) या २) भेंट के भेजें तो आश्रम के द्वारा बहुत बड़ा देशोपकार हो सकता है। यदि किसी असमर्थ व्यक्ति से इतना भी न हो सके तो उसको अपने पूजनीय स्थल के निमित्त प्रतिदिन कम से कम एक पाई ही निकाल कर पृथक रखदें, यह किसी को भी असह्य नहीं होगा। तीन दिन में केवल एक पैसा और एक मास में केवल ढाई आने खर्च होंगे, वर्ष में २) रु० संग्रह होने पर प्रत्येक नगर ग्राम एवं मुहल्ला के निवासी अथवा एक घर के ही सब व्यक्ति अपनी सेवा एकत्रित कर मनीआर्डर द्वारा प्रेषित करदें। यह उपाय इतना सुन्दर है कि इसके करने से न किसी को भार प्रतीत होगा और न सरकार से ही आग्रह करना होगा। क्यों कि अभी वर्तमान सरकार आर्थिक संकट में है। प्रजा ऐसे कार्यों में उत्साहित होकर प्रयत्न करे तो सरकार से भी अवश्य सहयोग प्राप्त हो सकता है। सहज में ही सम्प्रदाय द्वारा शिक्षा प्रसार आदि देश की विशिष्ट सेवा होगी और उस देश सेवा के द्वारा हम सभी साम्प्रदायिक आचार्य ऋण से कुछ मुक्ति पा सकेंगे। आशा और पूर्ण विश्वास कि हमारे इस सरल सुझाव पर सभी साम्प्रदायिक सज्जन अवश्य ध्यान देंगे तथा उसे आजीवन निभाने की सुदृढ़ प्रतिज्ञा करेंगे प्रतिज्ञा करने वाले सज्जन से हमारा इतना अनुरोध और है कि जिस दिन वे प्रतिज्ञा लें उसकी सूचना उसी समय एक कार्ड द्वारा "श्री सर्वेश्वर" कार्यालय, श्री निकुञ्ज प्रताप बाजार, वृन्दावन (मथुरा) के पते से अवश्य भेज दें। जिससे प्रतिज्ञा करनेवाले महानुभावों की शुभ नामावली आगामी अंक में प्रकाशित की जा सके।

निवेदक—

श्री व्रजवल्लभ शरण वेदांताचार्य पंचतीर्थ

श्री भागवत शरण व्याकरणाचार्य वे० शास्त्री

श्री दानबिहारी लाल शर्मा